भूमिका।



प्रिय पाठकवृन्द !

हमारा यह प्यारा भारतवर्ष आजतक सम्पूर्ण देशोंकी अपेक्षा सबही बातोंमें चढा बढा हुआ रहा था । यहांके दानवीर कर्ण, महाराज प्रातःस्मरणीय हरिश्चन्द्र, युद्धवीर अर्जुन, धर्मवीर महाराज युधिष्ठिर, महर्षि जैमिनि, मुनिवर भगवान् कृष्णद्वैपायन श्रीवेदव्यासजी, कपिल तथा कणाद इत्यादि इसी भारत माताके लाल थे, कि जिनके चरित्र तथा ग्रन्थोंको अवलोकन करनेसे मनुष्य संसारसागरसे तर जाते हैं । इसका कारण एकमात्र संस्कार है । 'संस्कार' शब्दका अर्थ सुधार है जिस प्रकार हीरा पाषाणकी आकर (खानि) से निकलकर शानके संस्कारहीसे मूल्यवान् होता है इसी प्रकार मनुष्य संस्कारसेही द्विजाति होता है । जैसा कि, मनुजी महाराजने कहा है ' जन्मना जायते शूद्रो संस्काराद्द्विज उच्यते ' अर्थात् जन्मसे मनुष्य शूद्र होता है किन्तु संस्कारसे द्विज कहलाता है जन्मसे लेकर मृत्युपर्यन्त सोलह संस्कार होते हैं यथा–

गर्भाधान १ पुंसवन २ सीमन्तोन्नयन ३ जातकर्म ४ नामकर्म ५ निष्क्रमण ६ अन्नप्राशन ७ चूडाकर्म ८ कर्णवेध ९ उपनयन १० वेदारंभ ११ समावर्त्तन १२ विवाह १३ चतुर्थी १४ सूतक १५ षोडश (दशाह) १६ ।

अब सब द्विजातिमात्रको चाहिये कि इन संस्कारोंको करके ऐहिक और पारमार्थिक फल प्राप्त करें, कारण कि इन्हीं वैदिक संस्कारोंके करनेपर द्विज, ब्राह्मण और विप्र पदवियोंको प्राप्त किया जाता है । अनाचाररहित व वैदिक कर्म करनेसे और ब्राह्मणी व क्षत्रियाणी तथा वैश्यानीकी योनिमें जन्मा हुआही ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य होता है अतएव सब किसीको अत्यन्त भक्तिसहित वेदोक्त संस्कार अवश्य करना चाहिये और इसी लिये सब ऋषि मुनि ब्राह्मण व विद्वान् पुरुष तथा स्त्री आजतक इन संस्कारोंको परम श्रद्धासे मानते और करते चले आये हैं।

मेरी बहुत दिनोंसे इच्छा थी कि कोई संस्कार विषयका उत्तम पुस्तक रचा जाय जिससे मनुष्य अपने वेदोक्त संस्कार करके उत्तम फलके भागी बनें–इसी बीचमें विद्याप्रचार निरत अखण्ड प्रतापशाली श्रीवेंकटेश्वर स्टीम यन्त्रालयाध्यक्ष मुम्बई निवासी श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी महोदयकी आज्ञा मिली कि ' आप दशकर्म पद्धति ' का भाषानुवाद कर दीजिये हम छापेंगे । उक्त महोदयकी आज्ञा पातेही मैंने शीघ्रतासे इसका भाषान्तर करके सर्वसत्त्व सहित

श्रीमान् सेठजीको समर्पण कर दिया है-आशा है वे महोदय इसको शीघ्रही प्रकाशित करके आपके सन्मुख लावेंगे ।

यदि इस पुस्तकके द्वारा आपको कुछ भी लाभ पहुँचा तो मैं अपने परिश्रमको सफल समझूंगा ।

अन्तमें सहृदय पाठकोंसे करबद्ध प्रार्थना की जाती है कि यदि नर धर्मानुसार इस ग्रन्थमें कोई त्रुटि या अशुद्धि रहगई हो तो कृपापूर्वक उसको सुधारलें या पत्रद्वारा उसकी सूचना मुझे देदेवें तो आगामी संस्करणमें उस दोषको दूर कर दिया जायगा । इत्यलम् ।

फाल्गुन कृष्ण अष्टमी
गुरुवार
सम्वत् १९७३
तारीख १५।२।१७

पाठकोंका चिर परिचित
कन्हैयालाल मिश्र
मोहल्ला-दीनदारपुरा
मुरादाबाद [युक्तप्रदेश]

अथ

दशकर्मपद्धति-विषयानुक्रमणिका ।

इति दशकर्मपद्धतिविषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
“ लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर ” छापाखाना, कल्याण-मुंबई.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

दशकर्मपद्धतिः ।

भाषाटीकासहिता ।

अथ गर्भाधानम् ।

तत्र ऋतुस्नाता चतुर्थदिने वधूः प्रातस्तूष्णीमादित्यमुपतिष्ठेत् ततस्तद्दिने मातृपूजाभ्युदयिके कृत्वा पोडशरात्रादर्वाक् शुभरात्रौ

मङ्गलाचरण ।

अखण्डमैश्वर्ययुतं परेशं विघ्नाटवीध्वंसनमेकमग्रिम् ।
गजाननं तं मनसा प्रणम्य करोमि भाषां दशकर्मपद्धतेः ॥ १ ॥
यतोऽभूज्जन्मादिः सततमपरोक्षस्य जगतः ।
परोक्षत्वं तस्मिन् गतवति च कस्तत्र विलयः ॥
कृतातः सा भूम्नो बुधजनविकाशाय विदुषा ।
कन्हैयालालेन श्रियमियमपारं दिशतु वः ॥ २ ॥

दोहा ।

विघ्न विनाशन गजवदन, नाशनहार कलेश ।
कृपा कीजिये दास पहँ, दाता सिद्धि गणेश ॥ १ ॥
कर्मदेव पद वन्दि पुनि, गुरुको शीश नवाय ।
लिखत पद्धती कर्मकी, कीजिय आय सहाय ॥ २ ॥

अब गर्भाधानसंस्कार लिखा जाता है । तहां चौथे दिन ऋतुस्नान करके स्त्री प्रातःकाल मौनव्रतधारणपूर्वक सूर्यके सन्मुख हाथ जोडकर खडी हो जाय । फिर उसी दिन पोडश मातृकाओंकी पूजा और नान्दीमुख श्राद्ध करके

दक्षिणकरेण पतिर्वध्वा उपस्थमभिस्पृश्य जपति । ॐ पूषा भगꣳ सविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतु ललामगुम् । विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिꣳशतु। आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥ इति मन्त्रेण । अथ प्राङ्मुख उपविष्ट उदङ्मुखो वा एतामभिमन्त्रयेदनेन। ॐ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि पृथुष्टुके। गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ इति मन्त्रेण । ततः ॐ रेतो मूत्रं विजहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियम् । गर्भो जरायुणावृत उल्वं जहाति जन्मना। इति मन्त्रेण रेतःस्रावणम्। अथ तस्या हृदयमालभेत् । ॐ यत्ते सुशीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्। वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतमितिमन्त्रेण। ततः स्वस्थो हृष्टमनाः हृद्देशे प्रसन्नामनातुरां कामयमानामभग्नश-

उस स्त्रीका पति सोलह दिनसे पहले किसी शुभ रात्रिमें दाहिने हाथसे अपनी स्त्रीके योनिप्रदेशको स्पर्श करे और (उस काल) इस आगे लिखे मन्त्रको जपे। मन्त्र यथा—ॐ पूषा भगꣳ सविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतु ललामगुम्। विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिꣳशतु । आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥ इसके उपरान्त पूर्व अथवा उत्तरको मुख किये हुए पति इस अपनी पत्नीको निम्न लिखित मन्त्रसे अभिमन्त्रित करे। मन्त्र यथा—ॐ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि पृथुष्टुके । गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥ फिर आगे लिखे मन्त्रसे वीर्य दान करना चाहिये। ॐ रेतो मूत्रं विजहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियम् गर्भो जरायुणावृत उल्वं जहाति जन्मना ॥ अनन्तर उसके हृदयमें हाथ रखकर यह आगे लिखा हुआ मन्त्र उच्चारण करना चाहिये। मन्त्र यथा—ॐ यत्ते सुशीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम् । वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतम् ॥ अनंतर स्वस्थ अथच प्रसन्न मन होता हुआ पति प्रसन्न हृदयवाली, उद्वेगरहित, पतिकी इच्छा करती हुई स्त्रीको उत्तम शय्यापर दो

ष्यायां प्रदोषादूर्ध्वं स्त्रियमभिगच्छेत् सा यदि गर्भं न दधाति तदा पतिः कृतोपवासः पुष्यनक्षत्रे श्वेतकण्टकारिकामूलमुत्पाट्योदकेन पिष्ट्वा वधूदक्षिणनासापुटे तद्रसं दद्यात् अनेनैव मन्त्रेण । ॐ इयमोषधी त्रायमाणा सहमाना सरस्वती । अस्या अहं बृहत्याः पुत्रः पितुरिव नाम जग्रभमिति । इति गर्भाधानम् ॥ १ ॥

अथ पुंसवनम् ।

तत्र गर्भमासापेक्षया द्वितीयतृतीययोरन्यतरस्मिन्करणीयं पुष्यपुनर्वसुमृगशिरोहस्तमूलश्रवणान्यतमपुन्नामनक्षत्रयुतोभयचन्द्रतारानुकूलदिवसमवगत्य ततः पूर्वदिने वधूमुपवासं कारयित्वा अग्रिमदिने तस्याः स्नाताया अहतवासोयुगपरिधानानन्तरं शुचिः स्नातः कृताचमनो मातृ-

घडी रात जानेके पीछे वीर्यदान करे । यदि कदाचित् वह स्त्री गर्भ धारण नहीं करे तो उसका पति उपवासी होकर पुष्यनक्षत्रके दिन सफेद रंगवाली कटेरीकी जडको उखाड लावे और उसको जलके साथ पीसकर उसका रस स्त्रीकी नासिकाके दाहिने स्वरसे सुँघावे और सुँघानेके समय इस नीचे लिखे मंत्रका पाठ करे । ॐ इयमोषधी त्रायमाणा सहमाना सरस्वती । अस्या अहं बृहत्याः पुत्रः पितुरिव नाम जग्रभमिति ।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीयमिश्रसुखानन्दसूरिसूनुपण्डित-कन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायां गर्भाधानसंस्कारः समाप्तः ॥ १ ॥

अब पुंसवनसंस्कार कहा जाता है । गर्भके महीनेमें दूसरे या तीसरे महीनेमें, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त, मूल और श्रवण इन नक्षत्रोंमेंसे कोई पुँल्लिंग नक्षत्र जिस दिन हो, तथा चंद्र और तारा भी जिस दिन अनुकूल हो, ऐसे दिनके मिल जाने पर (पति) उससे एक दिन पहले स्त्रीको उपवास (व्रत) करावे । दूसरे दिन स्त्री स्नान करके दो नवीन वस्त्र धारण करे । फिर उसका पति पवित्रतापूर्वक स्नान करके आसनपर बैठ आचमन करे । तत्पश्चात्

पूजाभ्युदयिकादि कृत्वा वटप्ररोहं वटशुंगाश्च आचारात्कुशकंटकमपि शिशिरेण जलेन पिष्ट्वा वधूदक्षिणनासापुटे तद्रसं दद्यात्। ॐ गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ १॥ ॐ अद्भ्यः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे। इति मन्त्राभ्याम्। इति पुंसवनम्॥२॥

अथ सीमन्तोन्नयनम्।

तत्र गर्भमासापेक्षया षष्ठेऽष्टमे वा पुन्नामनक्षत्रयुते चन्द्रतारानुकूलविहितदिने मातृपूजाभ्युदयिकादि कृत्वा बहिःशालायां कुशकण्डिकां कुर्यात् तत्र क्रमः। कुशत्रयेण हस्तपरिमितचतुरस्रभूमिं परिसमूह्य कुशा-

षोडश मातृकाओंका पूजन और नान्दीमुख श्राद्ध करके बडका एक नूतन (कोमल) पत्ता कि, जिसकी डंडीमें दोनों तरफ फल लग रहे हों तोडकर लावे तथा कुशकी जड लावे और फिर इन दोनों पदार्थोंको शीतल जल द्वारा पीस और उनका रस निकालकर स्रीकी नासिकाके दाहिने स्वरसे सुँघावे और उस काल आगे लिखे दोनों मंत्रोंको उच्चारण करना चाहिये। मंत्र यथा—ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ॐ अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे॥१॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुगदावादनिवासि-स्वर्गीयमिश्रसुखानंदसूरिसूनु-पण्डित-कन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायां पुंसवनसंस्कारः समाप्तः॥ २॥

अब सीमन्तोन्नयनसंस्कार कहा जाता है। गर्भके महीनेसे छठे या आठवें महीनेमें (पुरुष) पूर्वलिखित पुंनक्षत्रयुक्त और चन्द्र तथा ताराके अनुकूलवाले दिनमें पहले षोडशमातृकाओंकी पूजा और नान्दीमुख श्राद्ध करके बाहर शाला (मण्डप) में आकर कुशकण्डिका करे उसका क्रम यथा, एक हाथकी बराबर लम्बी चौडी वेदी बनाकर (चौकोन वेदी बनाकर) उसको तीन कुशाओंसे

नैशान्यां निक्षिप्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेन स्फ्येन वोत्तरतस्त्रिरुल्लिख्योल्लेखनक्रमेणानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य वारिणा तं देशमभिषिच्य कांस्यपात्रेणाग्निमादाय तत्प्रत्यङ्मुखं निदध्यात् । ततो ब्राह्मणवरणम् । ॐ अद्य कर्त्तव्यसीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ॐ वृतोस्मीति प्रतिवचनम् । ॐ यथाविहितं कर्म कुर्विति होत्राभिहिते ॐ करवाणीति प्रतिवचनानन्तरमग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान्कुशानास्तीर्यास्मिन्सीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय ॐ भवानीति तेनोक्ते

बुहारे फिर उन तीनों कुशाओंको ईशानकोनमें फेंक देवे और गोबर तथा जल मिलाकर वेदीको छिडके फिर स्रुवेके पिछले भागद्वारा स्फ्य यज्ञपात्रसे प्रादेशमात्र तीन लम्बी रेखा खंचे और उन रेखाओंमेंसे अनामिका तथा अंगुष्ठ इन दो अँगुलियोंसे रेखा खेंचनेके क्रमसे मट्टी लेकर ईशानकोनमें फेंक देवे फिर वेदीके ऊपर जल छिडकना चाहिये । अनन्तर काँसीके पात्रमें अग्निको लेकर उसको पश्चिमाभिमुख वा उत्तराभिमुख स्थापन करे फिर ब्रह्मा (ब्राह्मण) का वरण करे और पुष्प चंदन पानादि वरणकी सामग्री हाथमें लेकर नीचे लिखी संस्कृतका पाठ करके उस ब्रह्माको प्रदान करे "ॐ अद्य कर्त्तव्यसीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे" तब ब्रह्मा उस सामग्रीको अपने हाथमें लेकर 'वृतोऽस्मि' उच्चारण करे फिर यजमान 'यथाविहितं कर्म कुरु' ऐसा कहे और इसके उत्तरमें ब्रह्मा 'करवाणि' कहे । इसके पश्चात् वेदीसे दक्षिणकी ओर शुद्ध आसन बिछावे और उसके ऊपर पूर्वकी ओर अग्रभागवाले तीन कुशा रखकर यजमानको आगे लिखी संस्कृतका पाठ करना चाहिये । यथा—'अस्मिन् सीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव' अर्थात् इस सीमन्तोन्नयनकर्ममें

अग्निप्रदक्षिणं कारयित्वा ब्रह्माणं तत्रोपवेश्य प्रणीतापात्रं पुरतः जलेनापूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः निदध्यात् ततः परिस्तरणम् ।

ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यांतम् अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं ततोऽग्नेरुत्तरतः पाश्चिमादिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनंतगर्भकुशपत्रद्वयम् प्रोक्षणीपात्रमाज्यस्थाली चरुस्थाली संमार्जनकुशा उपयमनकुशाः प्रादेशमितपालाशसमिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं षट्पंचाशदुत्तरयजमानमुष्टिशतद्वयावच्छिन्नतंडुलपूर्णपात्रं तिलमुद्गमिश्रास्तंडुलाः पूर्णपात्रं एतानि पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि

आप मेरे ब्रह्मा हूजिये । इस प्रकार कहे । तब ब्रह्माके 'ॐ भवानि' ऐसा कहने पर अग्निकी परिक्रमा कराय यजमान उस पूर्व रचित आसनपर ब्रह्माको बैठाय देवे । फिर यजमान प्रणीतापात्रको आगे रखकर जलमें भर देवे और उसको कुशाओंमें ढककर तथा ब्रह्माका मुख देखकर अग्निके उत्तरकी तरफ कुशाओंके ऊपर रख देवे इसके पीछे परिस्तरण करना चाहिये उसका क्रम यह है । मुट्ठीभर अथवा एक सौ कुश ग्रहण करके उसके चार भाग करे । पहला भाग अग्निकोनसे ईशानकोनतक, दूसरा भाग ब्रह्माके स्थानसे वेदीतक, तीसरा भाग नैर्ऋत्यसे वायुकोनतक और चौथा भाग वेदीसे प्रणीतापात्रतक बिछा देना चाहिये । तदनन्तर अग्निके उत्तरभागमें पश्चिम दिशाकी तरफ पवित्र छेदन करनेके निमित्त तीन कुशा रक्खे और पवित्र बनानेके लिये अनन्तर्गर्भ अर्थात् बीचका पत्र निकालकर दो कुश पत्र रक्खे फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, पांच संमार्जनकुशा और तीनसे तेरहतक उपयमनकुशा तथा प्रादेशमात्र तीन समिधा, स्रुवा, घृत, यजमानकी दो सौ छप्पन मुट्ठी चावलोंसे भरा हुआ पूर्णपात्र[1] इन सब वस्तुओंको पवित्र च्छेदन कुशाओंके आगेआगे क्रमसे रख देवे । उनके आगे

---

१ तिल और मूंगसे मिलेहुए चावलोंको पूर्णपात्र कहते हैं ।

क्रमेणासादनीयानि तदुत्तरतः वीणागाथिनो। प्रादेशमात्रसाग्राश्वत्थशंकुः त्रिश्वेतशल्लकीकंटकं पीतसूत्रं पूर्णस्तर्कुः दर्भपिंजलिकात्रयं उदुंबरयुग्मफलसुवर्णघटितदेवककरादि युक्तसूत्रदोरकपुष्पबिल्वादि फलयुतवाराप्ततयादि अन्यद्यथाचारपरिप्राप्तद्रव्यमासादनीयम्। ततः पवित्रच्छेदनार्थकुशैः प्रादेशमितपवित्रे छित्त्वा सपवित्रपाणिना प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे कृत्वा अनामिकांगुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिंगनं प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणं ततः प्रोक्षणीजलेन यथासादितद्रव्यसेचनं ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रनिधानं ततः आज्यस्थाल्य।माज्यनिर्वापः चरौ तु तिलतंडुलमुद्गानां प्रणीतोदकेन

वीणाके बजानेवाले दो गायकोंको बैठाल देवे। वहाँ प्रादेशमात्र. अग्रभागसहित पीपलकाष्ठकी कील तथा सेई (पक्षी विशेप) का पर कांटा और पीला सूत लपेटकर (एक) तकुवा, तथा कुशाओंकी तीन पिंजूलिका[१] बनाकर स्थापन करे। फिर गूलरके नवीन पत्तेकी डाली कि जिसके दोनों तरफ फल लगे हों और सुवर्णके तारयुक्त सूत्र अर्थात् डोरा पुष्प तथा बिल्वफल सहित अन्यान्य मांगलिक पदार्थ जो कि मंगल कार्योंमें होते हैं स्थापन करे। फिर पवित्र च्छेदनार्थ जो पहले तीन कुशा रक्खी गई है उनसे पवित्र बनानेके निमित्त जो अनन्तरगर्भ कुशपत्र रक्खे गये हैं तिनके अग्रभागको प्रादेशप्रमाण छेदन करे और फिर उन पवित्रोंको हाथमें लेकर प्रणीतापात्रके जलको प्रोक्षणीपात्रमें तीन बार सेचन करे। फिर अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रके अग्रभागको आगे करके पकडे और उन पवित्रोंसे तीन वार प्रणीतापात्रके जलको चलावे पीछे प्रणीतापात्रके जलमें उन्हीं पवित्रोंको डुबोकर प्रोक्षणीपात्रमें सेचन करे तत्पश्चात् प्रोक्षणीके जलसे उन्हीं पवित्रों द्वारा पूर्वमें स्थापन करी हुई सब वस्तुओंको प्रोक्षण (सेचन) करे। फिर अग्नि और प्रणीतापात्रके बीचमें प्रोक्षणीपात्रको रख देना

१ तेरह कुशाओंको कलावेसे लपेटनेपर एक पिंजूलिका होती है। ऐसी तीन पिंजूलिका स्थापन करनी चाहिये।

त्रिः प्रक्षालनं तत्र किञ्चिज्जलं दत्त्वा प्रक्षेपः । ततः स्वयं चरुं ब्रह्मणा चाज्यं ग्राहयित्वा वह्नेरुत्तरतश्चरुं दक्षिणतः आज्यं ध्यात् । ततः सिद्धे चरौ ज्वलत्तृणं प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ ततः स्रुवप्रतपनं त्रिः ततः संमार्जनकुशानामग्रैरंतरतो मूलैर्बाह्यतः संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रताप्य दक्षिणतो निदध्यात् ततः आज्यमग्नितश्चरोः पूर्वेणानीयाग्रे धृत्वा आज्यपश्चिमेन चरुमानीयाज्यस्योत्तरतो निदध्यात् तत आज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनं अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं ततः पूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनं तत उत्थायोपयमनकुशा नादायप्रजा-

---

चाहिये। फिर आज्यस्थालीमें घृत डाले और चरु (साकल्य) बनानेके निमित्त तिल चावल तथा मूँग मिलावे और फिर उनको प्रणितापात्रके जलसे तीन बार धोवे, पीछे किसी एक पात्रमें जल भरकर उसमें वह तिल चावल तथा मूँग डाल देवे। तिस पीछे यजमान उस चरुपात्रको हाथमें लेकर और ब्रह्मासे घृतको ग्रहण कराकर वेदीस्थित अग्निके उत्तरकी ओर चरुको रक्खे और ब्रह्माके हस्तास्थित घृतको दक्षिणकी ओर स्थापन करा देवे। फिर जिस समय चरु सिद्ध हो जाय अर्थात् पक जाय तब एक तिनकेको बाले और चरुपात्रके चारों तरफ घुमाकर उसको अग्निमें डाल देवे। तदनन्तर स्रुवेको अग्निमें तीन बार तपाना चाहिये। फिर जो पहले संमार्जननामक पांच कुशा स्थापन करी गई हैं, उनके अग्रभागसे स्रुवेके भीतर और पिछले भागद्वारा स्रुवेके बाहर साफ करे। फिर प्रणीतापात्रके जलसे स्रुवेको प्रोक्षण करे। अर्थात् उसपर जल छिडके और फिर तीन बार अग्निमें तपाकर उसको (वेदीके) दक्षिणकी ओर रख देवे। अनन्तर घृतको अग्निमेंसे उठावे और चरुके पूर्वकी ओर लाकर फिर उसको अपने आगे रख देवे। फिर घृतके पश्चिमकी ओरको चरु लाकर घृतको उत्तर दिशामें स्थापन कर देवे। पश्चात् घृतको पूर्व निर्मित पवित्रोंसे कुछेक ऊँचा उछाले और देखे। यदि उसमें कुछ अपद्रव्य अर्थात् मक्खी इत्यादि पडी हो तो उसको निकालकर फेंक देवे। फिर पूर्ववत् प्रोक्षणीपात्रके जलको उछाले।

पातें मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ क्षिपेत् । समिधो घृताक्ताः । अथोपविश्य सपवित्रप्रोक्षणीजलेनाग्निं प्रदक्षिणक्रमेण पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे धृत्वा ब्रह्मणान्वारब्धः पातितदक्षिणजानुर्जुहुयात् तत आहुतिचतुष्टये प्रत्याहुत्यनन्तरं हुतशेषस्य घृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ततः समिद्धतमेऽग्नौ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय० । इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ । ततोऽन्वारब्धः स्थालीपाकेन होमः ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ततोऽनन्वारब्धो जुहुयात् तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषस्य प्रोक्षण्यां प्रक्षेपः तत्रैवाज्यस्थालीपाकाभ्यां स्विष्टकृद्धोमः । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये

पश्चात् यजमान खडा होकर बाँये हाथमें उपयमन नामवाली तीनसे तेरहतक जो कुशा पहिले कही गई हैं उनको ग्रहणपूर्वक मनमें प्रजापतिका ध्यान करता हुआ पूर्वस्थापित तीन समिधाओंको घृतमें भिगोकर स्वाहा उच्चारणपूर्वक चुपचाप अग्निमें डाल देवे । इसके पीछे यजमान आसनमें बैठकर पवित्रों सहित प्रोक्षणीके जलको हाथमें लेकर अग्निके चारों ओर छिडके और फिर उन पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रखदेवे पश्चात् यजमान ब्रह्मासे मिलकर और दाहिने घुटुएको नवायकर प्रज्वलित अग्निमें हवन करे । यहाँ घृतकी चार आहुति दी जाती हैं । उनमें एक एक आहुति देनेके अनन्तर स्रुवेमें शेष रहे हुए घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डालते जाना चाहिये यथा;—"ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय० । इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ । फिर घृत मिलाकर स्थालीपाकका (अर्थात् पहले जो चरु बनाया गया है उसका) होम करे यहाँ दो आहुति तो ब्रह्मासे युक्त होकर दी जाती हैं और शेष ब्रह्मासे पृथक् होकर दी जाती हैं । इन आहुतियोंमें भी शेष रहा हुआ घृतादि पूर्ववत् प्रोक्षणीपात्रमें डालते जाना चाहिये । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा

स्विष्टकृते० । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः । ॐ, अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ स त्वन्नो अग्ने व्वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उपसो व्युष्टौ । अव यक्ष्वनो वरुणꣳ रराणो व्वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चि-

---

इदमग्नये स्विष्टकृते० । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्० । ॐ सत्वन्नो अग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उपसो व्युष्टौ । अव यक्ष्वनो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्० । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययोनो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतःस्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यःस्वर्केभ्यश्च न मम । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳश्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं

त्तम्। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति प्राजापत्यम्। अथ संस्रवप्राशनम्। ततः आचम्य ॐ अद्य सीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः। ततः ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु इति पवित्राभ्यां प्रणीताजलेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम्। ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमितमनसस्पत इमं देवयज्ञꣳ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा इति मन्त्रेण बर्हिर्होमः ततः पश्चादग्नेर्वधूमहतवाससी परिधाप्य शुद्धासने

प्रजापतये०। इति प्राजापत्यम्। फिर होमकी समाप्ति होनेपर यजमान संस्रवप्राशन अर्थात् प्रोक्षणीपात्रसे जल लेकर यत्किंचित् पान करे। फिर आचमनपूर्वक पूर्णपात्रका संकल्प करके ब्रह्माको (दक्षिणा) प्रदान कर देवे। संकल्प यथा—'ॐ अद्य सीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे' तब ब्रह्मा 'स्वस्ति' इस प्रकार कहकर उस पूर्णपात्रको ग्रहण कर लेवे। फिर पवित्रकी ब्रह्मग्रंथिको खोल देना चाहिये। इसके पीछे आगे लिखे मंत्रद्वारा प्रणीतापात्रके जलसे यजमान अपने शिरमें मार्जन करे। मन्त्र यथा—'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' इसके उपरान्त 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः' इस मन्त्रसे प्रणीतापात्रको ईशानकोनमें उलटा कर देवे। तदन्तर पहले बिछाये हुए कुशाओंको क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रमसे बिछाये थे उसी क्रमसे उठाकर घृतमें भिगोवे और 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देवयज्ञꣳ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा' इस मन्त्रद्वारा अग्निमें स्वाहा उच्चारण करके डालदेवे। पश्चात् नवीन वस्त्र धारण करी हुई गर्भवती स्त्रीको

स्विष्टकृते० । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः । ॐ अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० ॐ स त्वन्नो अग्ने ऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्वनो वरुणꣳ रराणो व्वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नी-वरुणाभ्यां० । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चि-

---

इदमग्नये स्विष्टकृते० । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्० ।ॐ सत्वन्नो अग्ने ऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्वनो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्० । ॐ अयाश्चाग्नेस्य-नभिशस्तिपाश्च सत्वमित्त्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता म-हांतः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं

तम् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति प्राजापत्यम् । अथ संस्रवप्राशनम् । ततः आचम्य ॐ अद्य सीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः । ततः ॐ सुमित्रिया न आप ओपधयः सन्तु इति पवित्राभ्यां प्रणीताजलेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम् । ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमितमनसस्पत इमं देवयज्ञ१ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा इति मन्त्रेण बर्हिर्होमः ततः पश्चादग्नेर्वधूमहतवाससी परिधाप्य मृद्वासने

प्रजापतये० । इति प्राजापत्यम् । फिर होमकी समाप्ति होनेपर यजमान संस्रवप्राशन अर्थात् प्रोक्षणीपात्रसे जल लेकर यत्किंचित् पान करे । फिर आचमनपूर्वक पूर्णपात्रका संकल्प करके ब्रह्माको (दक्षिणा) प्रदान कर देवे । संकल्प यथा—'ॐ अद्य सीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे' तव ब्रह्मा 'स्वस्ति' इस प्रकार कहकर उस पूर्णपात्रको ग्रहण कर लेवे । फिर पवित्रकी ब्रह्मग्रंथिको खोल देना चाहिये । इसके पीछे आगे लिखे मंत्रद्वारा प्रणीतापात्रके जलसे यजमान अपने शिरमें मार्जन करे । मन्त्र यथा—'ॐ सुमित्रिया न आप ओपधयः सन्तु' इसके उपरान्त 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः' इस मन्त्रसे प्रणीतापात्रको ईशानकोनमें उलटा कर देवे । तदन्तर पहले बिछाये हुए कुशाओंको क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रमसे बिछाये थे उसी क्रमसे उठाकर घृतमें भिगोवे और 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देवयज्ञ१ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा' इस मन्त्रद्वारा अग्निमें स्वाहा उच्चारण करके डालदेवे । पश्चात् नवीन वस्त्र धारण करी हुई गर्भवती स्त्रीको

उपवेशयेत्
लीत्रितयोदुम्बरफलयुग्मान्वितप्रादेशमितशाखाभिर्वर्तुलीकृत्य सीमन्त-मूर्द्धनि विनयति ॐ भूर्भुवः स्वः विनयामि इति मन्त्रेण सकृत्। ॐ भूर्विनयामि। ॐ भुवर्विनयामि । ॐ स्वर्विनयामि इति मन्त्रेण वार-त्रयं ततः उदुम्बरफलयुग्मान्वितशल्लकीकंटकादिपञ्चकं वधूसीमन्तदक्षि-णतो वेणीकृत्वा पतिर्बध्नाति ॐ अयमूर्ज्जावतो वृक्ष उर्जीव फलिनी भव इति मन्त्रेण । तत उदुम्बरफलादिसमन्वितसूत्रदोरकं वधू-ग्रीवायां अनेनैव क्रमेण वा आचाराद्बध्नीयात्। ततो बिल्वादिसमन्वितं वाराष्टयेन स्नपनम् ततः फलपुष्पादिकं नूतनवस्त्रेण बद्धा प्रतीक्ष्य धर्त्तव्यं प्रतिस्नपने स्वामिपठनीयो मन्त्रः ॐ अयमूर्जेति राजानश्च संगा-

अग्निके पश्चिमकी तरफ कोमल आसनपर बैठाले और फिर सेई (पक्षी) का (कांटा), पीपलकी कीली, पीले डोरेसे लिपटा हुआ तकुआ, तथा तीन कुशाओंकी पिंजूलिका और गूलरकी दो फलयुक्त डाली इन पांचों पदार्थोंसे पति अपनी स्त्रीके बालोंको आगे लिखे 'ॐ भूर्भुवः स्वः विनयामि' इस मन्त्रसे एक वार 'ॐ भूर्विनयामि' 'ॐ भुवर्विनयामि' 'ॐ स्वर्विनियामि' इन मन्त्रोंसे तीन वार इकट्ठा करे अनन्तर उन्हीं पांचों पदार्थोंद्वारा माँग निकालनेकी रीतिसे आगे लिखे 'ॐ अयमूर्जावतो वृक्ष उर्जीव फलिनी भव' इस मंत्रसे गूलरके फलादिसहित डोरेको परम्परानुसार वधूके गले या चोटीमें बाँध देवे और फिर सुवर्णरचित तागे अथवा पीले तागेसे वधूकी वेणी बाँध देनी चाहिये। फिर जो बिल्वफलादि मांगलिक पदार्थ कहेहैं, उनको जलमें डालकर आठ वार (लोटे अथवा मोलुएसे) पत्नीको स्नान करावे। यहाँ फल पुष्पादि नये वस्त्रमें बाँधे और उनको देखकर अपने निकट रख लेवे। प्रत्येक वार स्नानके समय पति आगे लिखे मन्त्रको पढे और उसी समय वीणागायकोंको 'आप किसी राजा अथवा वीरपुरुषके यशको गाओ ऐसी आज्ञा देवे । स्नानका मन्त्र 'अयमूर्जावतो वृक्ष उर्जीव फलिनी भव' (वीणागायकोंके गानेका मन्त्र)

येतामिति प्रेषानन्तरं सोम एवं नो राजेमा मानुषीः प्रजाः अविमुक्तचक्र आसीरंस्तीरे तुभ्यमसौ श्रीअमुकदेवी इति गाथां वीणागाथिनौ गायेतां अन्यो वा वीरतरः । ततो या ग्रामसन्निहिता नदी तस्या नाम गृह्णीयात् । तत उत्थाय वधूदक्षिणकरेण स्रुवस्पृष्टेन फलपुष्पसमन्वितघृतेन ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा इति मन्त्रेण । ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत वस्नेव विक्रीणा व्वहा इषमूर्जꣳ शतक्रतो स्वाहेत्यनेन पूर्णाहुतिं दत्त्वोपविश्य स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणकरानामिकाग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहुमूले ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि इति त्र्यायुषं कुर्य्यात् । अनेनैव

'सोम एव नो राजेमा मानुषीः प्रजाः अविमुक्तचक्र आसीरंस्तीरे तुभ्यमसौ' श्रीअमुकेदेवी फिर जिस नगर या ग्राममें यजमानका घर हो उसके समीप बहनेवाली नदीका नाम पत्नीसे उच्चारण करावे फिर पति अपनी स्त्रीके साथ खडा होजाय, और पत्नीके दाहिने हाथसे स्रुवेको स्पर्श कराय उस स्रुवेमें घृत फल, पुष्प, स्थापनपूर्वक 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविꣳ संम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जꣳ शतक्रतो स्वाहा' इस मंत्रसे पूर्णाहुति करावे । फिर बैठकर स्रुवमें कुंड (वेदी) की भस्म लगाय दाहिने हाथकी अनामिका अँगुलीसे स्रुवेमें लगी हुई भस्म ग्रहण कर 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' यह कहकर माथेमें, 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' बोलकर गलेमें, 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं' कहकर दक्षिणबाहुमूलमें और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' ऐसा उच्चारण करके उसको हृदयमें लगाना चाहिये । इसी प्रकार

१ अमुकदेवीके स्थानमें स्त्रीका नाम लेवे ।

क्रमेण वध्वा अपि त्र्यायुषं कुर्य्यात् तत्र तत्ते अस्तु त्र्यायुषं। ततो ब्राह्मणभोजनम्। इति सीमन्तोन्नयनम् ॥ ३ ॥

अथ जातकर्म।

तत्र प्रथमं शूल्यवतीमद्भिः परिषिञ्चति ॐ एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह। यथायं वायुरेजति यथा समुद्र एजति एवायं दशमास्यो अस्रज्जरायुणा सह। इति मन्त्रेण। ततो वधूसमीपे पतिर्ज्जपति ॐ अवैतु पृश्नि शेवलꣳ शुने जराय्वत्तवेनैव माꣳसेन पीवरीं न कस्मिंश्च नायतनमव जरायुपद्यतामिति। ततः पुत्रे जाते नाभिवर्धनीयात् प्राक् कृताभ्युदयिकः कुमारं दक्षिणकरस्यानामिकया स्वर्णान्तर्हितया मधुघृते एकीकृत्य घृतमेव वा प्राशयति ॐ भूस्त्वयि दधामि ॐ भुवस्त्वयि दधामि

फिर अपनी पत्नीके भी त्र्यायुष करे अर्थात् भस्म लगावे। किन्तु पत्नीके भस्म लगाते समय तत्रो अस्तुके स्थानमें 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करे और फिर पीछे ब्राह्मणोंको भोजन कराना चाहिये।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुगदाबादनिवासि-स्वर्गीयमिश्रसुखानन्दसूरिसूनुपण्डित-कन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायां सीमन्तोन्नयनसंस्कारः समाप्तः ॥ ३ ॥

अब जातकर्मसंस्कार कहा जाता है। जिस समय प्रसव होनेसे पूर्व स्त्रीको प्रसवकी प्रथम पीडा उपस्थित हो तो उसका पति आगे लिखे 'ॐ एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह। यथायं वायुरेजति यथा समुद्र एजति एवायं दशमास्योऽस्रज्जरायुणा सह' इस मंत्रसे जलोंसे पत्नी पर अभिषेक करे। इस मंत्रको पत्नीके समीप जपे। ॐ अवैतु पृश्नि शेवलꣳ शुने जरायत्तवेनैव माꣳसेन पीवरीं न कस्मिंश्च नायतनमव जरायुपद्यताम्' तत्पश्चात् पुत्रके उत्पन्न होनेपर नाल काटनेसे पहले नान्दीमुख नामक श्राद्ध करके बालकको सुवर्णकी सलाईसे अनामिका अंगुलिद्वारा शहत और घृतको मिलाकर अथवा केवल मात्र घृतकोही चटावे। और इन आगे लिखे हुए मंत्रोंको उस समय उच्चारण करे। 'ॐ भूस्त्वयि दधामि ॐ भुवस्त्वयि दधामि ॐ स्वस्त्वयि दधामि

ॐ स्वस्त्वयि दधामि ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि इति मन्त्रेण । एतच्च मेधाजननम् । ततः कुमारस्य दक्षिणकर्णे नाभ्यां वा मुखं दत्त्वा ॐ अग्निरायुष्मान्स वनस्पतिभिरायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ १ ॥ ॐ सोम आयुष्मान्स ओषधीभिरायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ २ ॥ ॐ ब्रह्मायुष्मत्तद्ब्राह्मणैरायुष्मत्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ ३ ॥ ॐ देवा आयुष्मंतस्तेऽमृतेनायुष्मंतस्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ ४॥ ॐ ऋषय आयुष्मंतस्ते व्रतैरायुष्मंतस्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ ५ ॥ ॐ पितर आयुष्मंतस्ते स्वधाभिरायुष्मंतस्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ ६ ॥ ॐ यज्ञ आयुष्मान्त्स दक्षिणाभिरायुष्माँस्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥७॥ ॐ समुद्र आयुष्मान्स स्रवंतीभिरायुष्माँस्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ ८ ॥ इति त्रिर्जपित्वा । ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषं इति त्रिर्जपित्वा । अथ तस्य दीर्घमायुःकामयमानः पुत्रमभि-

'ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि ' एतच्च मेधाजननम् । तिस पीछे (पिता वा आचार्य) कुमारके दाहिने कान अथवा उसकी नाभिके समीप अपना मुख लगाकर आगे लिखे हुए मंत्रोंको तीन बार जपे । ' ॐ अग्निरायुष्मान्स वनस्पतिभिरायुष्माँस्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ १ ॥ ॐ सोम आयुष्मान्स ओषधीभिरायुष्माँस्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ २ ॥ ॐ ब्रह्मायुष्मत्तद्ब्राह्मणैरायुष्मत्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ ३ ॥ ॐ देवा आयुष्मंतस्तेऽमृतेनायुष्मंतस्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ ४ ॥ ॐ ऋषय आयुष्मंतस्ते व्रतैरायुष्मंतस्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ ५ ॥ ॐ पितर आयुष्मंतस्ते स्वधाभिरायुष्मंतस्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ ६ ॥ ॐ यज्ञ आयुष्मान्त्सदक्षिणाभिरायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ ७ ॥ ॐ समुद्र आयुष्मान्स स्रवंतीभिरायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ ८ ॥' तत्पश्चात् आगे लिखे हुए 'त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं यद्देवेषु त्र्यायुषं (और) तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ' मन्त्रको तीन बार जपकर

स्पृशन् वाग् जपति स चायं ॐ दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निरस्य परि जातवेदाः । तृतीयमप्सु नृमणा अजस्रमिंधान एनं जरते ॥ १ ॥ ॐ विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्मा ते धाम बिभृता विद्मा ते नाम परमं गुहा यद्विद्मा तमुत्सं यत आजगंथ ॥ २॥ ॐ त्वा नृमणा अप्स्वंतर्नृचक्षा ईधे दिवो अग्न ऊधन् । तृतीये त्वा तस्थिवाꣳसमपामुपस्थे महिषा अवर्द्धन् ॥ ३ ॥ ॐ अक्रंददग्निः यन्निव द्योः क्षामारे रिहद्वीरुधः समंजन् । सद्यो जज्ञानो व्विहीमिद्धो अख्यदा रोदसी भानुना भात्यंतः ॥ ४ ॥ ॐ श्रीणामुदारो वरुणो रयीण मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः ॥ वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा विभात्यग्र उपसामिधानः ॥ ५॥ ॐ विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः । वीडुं चिदद्रिमाभिनत्परायं जनायदग्निमयजंत पंच ॥ ६ ॥ ॐ उशिक्, पावको अरतिः सुमेधा मर्त्येष्वाग्निरमृतो निधायि । इयर्ति

पिता यदि पुत्रके दीर्घायु होनेकी कामना करे तो फिर पुत्रके शरीरको अपने हाथसे स्पर्श करता हुआ इन आगे लिखे हुए मन्त्रोंको जपे । " ॐ दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निरस्मद्द्वितीयं परि जातवेदाः ।, तृतीयमप्सु नृमणा अजस्रमिंधान एनं जरते स्वाधीः ॥ १ ॥ ॐ विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्मा ते धाम बिभृता पुरुत्रा। विद्मा ते नाम परमं गुहा यद्विद्मा तमुत्सं यत आजगंथ ॥ २ ॥ ॐ समुद्रे त्वा नृमणा अप्स्वंतर्नृचक्षा ईधे दिवो अग्न ऊधन्तृतीये त्वा रजसि तस्थिवाꣳसमपामुपस्थे महिषा अवर्द्धन ॥ ३ ॥ ॐ अक्रंददग्निस्तनयन्निव द्योः क्षामारे रिहद्वीरुधः समंजन् । सद्यो जज्ञानो व्विहीमिद्धो अख्यदा रोदसी भानुना भात्यंतः ॥ ४ ॥ ॐ श्रीणामुदारो वरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः। वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा विभात्यग्र उपसामिधानः ॥ ५ ॥ ॐ विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः । वीडुं चिदद्रिमभिनत्परायं जनायदग्निमयजंत पंच ॥ ६ ॥ ॐ उशिक् पावको अरतिः सुमेधा मर्त्ये-

धूममरुषं भरिभ्रदुच्छुक्रेण शोचिषा द्यामिनक्षन् ॥ ७ ॥ ॐ दृशानो रुक्म उर्व्या व्यद्यौद्दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निरमृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः ॥८॥ ॐ यस्ते अद्य कृणवद्भद्रशोचेऽपूपं देव घृतवंतमग्ने। प्रतन्नय प्रतरं वस्यो अच्छाभि सुम्नं देवभक्तं यविष्ठ ॥९॥ ॐ आतं भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थ उक्थ आभज शस्यमाने। प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवात्युज्जातेन भिनददुज्जनित्वैः ॥१०॥ ॐ त्वामग्ने यजमाना अनुद्यून् विश्वा वसु दधिरे वार्याणि। त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमंतमुशिजो विवव्रुः ॥ ११ ॥ ततः कुमारं प्रतिदिशमेकैकं ब्राह्मणं मध्ये पंचममूर्ध्वमवेक्षमाणमवस्थाप्य तमुद्दिश्य इममनुप्राणितेति पिता ब्रूयात् ततस्तेषु प्राणेति पूर्वो व्यानेति दक्षिणोऽपानेति अपर उदानेति

व्यग्निरमृतो निधायि। इयर्ति धूममरुषं भरिभ्रदुच्छुक्रेण शोचिषा द्यामिनक्षन् ॥ ७ ॥ ॐ दृशानो रुक्म उर्व्या व्यद्यौद्दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निरमृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः॥ ८ ॥ ॐ यस्ते अद्य कृणवद्भद्रशोचेऽपूपं देव घृतवंतमग्ने। प्रतन्नय प्रतरं वस्यो अच्छाभि सुम्नं देवभक्तं यविष्ठ ॥ ९ ॥ ॐ आतं भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थ उक्थ आभज शस्यमाने प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवात्युज्जातेन भिनददुज्जनित्वैः ॥ १० ॥ ॐ त्वामग्ने यजमाना अनुद्यून् विश्वा वसु दधिरे वार्याणि त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमंतमुशिजो विवव्रुः ॥ ११ ॥" तिसके पीछे बालकके पूर्व पश्चिम उत्तर और दक्षिण इन चारों दिशामें चार ब्राह्मणोंको बैठाल देवे और उनके बीचमें एक पाँचवें ब्राह्मणको ऊर्ध्वदृष्टि करके बैठाले अर्थात् वह पाँचवां ब्राह्मण ऊपरको देखता रहे। तब पिता पूर्व तरफके ब्राह्मणकी ओर देखकर 'इममनुप्राणितेति' कहे। तत् पश्चात् उन चारों ब्राह्मणोंमेंसे पूर्वकी ओर बैठा हुआ ब्राह्मण 'प्राणेति' उच्चारण करे। दक्षिणकी दिशामें बैठा हुआ ब्राह्मण 'व्यानेति' पश्चिमदिशामें बैठाहुआ ब्राह्मण 'अपानेति' और उत्तर दिशामें बैठाहुआ ब्राह्मण 'उदानेति' उच्चारण करे। तथा बीचमें ऊर्ध्वदृष्टि खडा हुआ ब्राह्मण'

उत्तर उपरिष्ठादवेक्ष्यमाणः समानेति पंचमो ब्रूयात् । एषामसंभवे
मेव तत्र तत्रोपविश्य तथैव ब्रूयात् । अथ कुमारस्य .
येत् ॐ वेद ते भूमि हृदयं दिवि चंद्रमसि श्रितम् । वेदाहं तन्मां
त्पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत॰ शृणुयाम . .द॰ . .
अथ कुमारमभिमृशति । अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमश्रुतं .
वै पुत्रनामासि त्वं जीव शरदः शतमित्यनेन । तत्र
येत् । इडासि मैत्रावरुणी वीरे वीरमजीजनथाः । सा त्वं वीरवती भव
यास्मान्वीरवतोकरत् इत्यनेन । ततः कुमारनाभिवर्द्धने कृते तस्या
दक्षिणस्तनं प्रक्ष्याल्य कुमाराय प्रयच्छति ॐ इम॰ स्तनमूर्जस्वंतं धया
पां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये उत्सं जुषस्व मधुमंतमर्वन्त्समुद्रिय॰ सद
नमाविशस्व इति मंत्रेण । ततो वामस्तनं प्रक्षाल्य प्रयच्छति ॐ इम॰

'समानेति' उच्चारण करे। यदि उस समय यह पाँच ब्राह्मण नहीं मिल सकें तो पिताको चाहिये कि उन पूर्वादि चारों दिशाओंमें स्वयं जाकर उन उन मन्त्रोंको उच्चारण कर देवे । फिर आगे लिखे ' ॐ वेद ते भूमि हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितं वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत॰ शृणुयाम शरदः शतम् ' इस मन्त्रसे कुमारकी जन्मभूमिको भी अभिमन्त्रित करे । अनन्तर आगे लिखे ' अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमश्रुतं भव आत्मा वै पुत्रनामासि त्वं जीव शरदः शतम् ' इस मन्त्रसे कुमारको स्पर्श करे । इसके पश्चात् आगे लिखे 'इडासि मैत्रावरुणी वीरे वीरमजीजनथाः सा त्वं वीरवती भव यास्मा- वीरवतोऽकरत् ' इस मन्त्रसे कुमार (बालक) की माताको भी अभिमन्त्रित करे फिर बालकके नालछेदन करनेपर उसकी माताके दाहिने स्तनको धुलावे और आगे लिखे 'ॐ इम॰ स्तनमूर्जस्वन्तं, धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये उत्सं जुषस्व मधुमंतमर्वन्त्समुद्रिय॰ सदनमाविशस्व ' इस मन्त्रसे बालकको दुग्धपान करावे अर्थात् बालकके मुखमें स्तन देवे । फिर बांये स्तनको धोकर पूर्वोक्त ' ॐ इम॰ स्तनमूर्जस्वन्तं ' इत्यादि और दूसरे ' यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्यो रत्न

स्तनमित्यादि। यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः। येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवेऽकः इति मंत्राभ्याम्। ततः प्रसवित्री शयनीयमस्तकोपरि भूमौ वारिपूर्णभाजनं निदध्यात् अपो देवेषु जागृथ यथा देवेषु जागृथ एवमस्यां सूतिकायां सपुत्रिकायां जागृथेत्यनेन मंत्रेण। तच्च सूतिकोत्थापनपर्यंतं तत्रैव धर्तव्यम्। ततः सूतिकागृहद्वारप्रवेशे पंचभूसंस्कारान् कृत्वाग्नेरुपसमाधानं स चाग्निरुत्थानदिनपर्यंतं तत्रैव धर्तव्यः। तत्र चाग्नौ संध्ययोः फलीकरणांस्तंडुलांस्तन्मिश्रान् सर्षपान् दश दिनानि पिता अन्यो वा ब्राह्मणो नित्यं हस्तेन जुहोति तत्र प्रथमाहुतौ मंत्रः। ॐ शंडामर्का उपवीरः शौंडिकेय उलूखलः मलिम्लुचो द्रोणासश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहा इदं शंडामर्काभ्यामुपवीराय मलिम्लुचाय द्रोणेभ्यश्च्यवनाय०। द्वितीयाहुतौ ॐ आलिखन्ननिमिषः किंवदंत उपश्रुतिर्हर्यक्षः कुंभीशत्रुः पात्रपाणिर्नृमणिर्हंत्रीमुखः सर्ष-

वसुविद्यः सुदत्रः। येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवेऽकः' इस मंत्रसे बालकको देवे। फिर उस पुत्रवती स्त्रीके शिरहानेकी तरफ आगे लिखे 'आपो देवेषु जाग्रथ यथा देवेषु जाग्रथ एवमस्यां सूतिकायां सपुत्रिकायां जाग्रथेति' इस मन्त्र द्वारा एक जलसे भराहुआ पात्र (कलश) स्थापन करे और दश दिनपर्यन्त अर्थात् जबतक सूतक निवृत्त न हो उसको वहांसे नहीं उठावे। फिर जहां पुत्र जन्मा हो उसी कोठरी (सोवर) के दरवाजे पर पञ्चभूसंस्कारपूर्वक अग्निको स्थापन करे। यह अग्निभी सूतकान्ततक रहनी चाहिये। उस घरकी स्थापित अग्निमें प्रातः तथा सायंकालको धानोंकी पृथक् की हुई भुस्सी (चोकर) चावलोंकी कनी और सरसों मिलाकर आगे लिखे "ॐ षण्डामर्का उपवीरः शौंडिकेय उलूखलः॥ मलिम्लुचो द्रोणासश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहा इदं शंडामर्काभ्यामुपवीराय मलिम्लुचाय द्रोणेभ्यश्च्यवनाय॥। द्वितीयाहुतौ ॐ आलिखन्ननिमिषः किंवदंत उपश्रुतिर्हर्यक्षः कुंभीशत्रुः पात्रपाणिर्नृमणिर्हंत्रीमुखः सर्षपारुणश्च्यवनो नश्यतादितः

पारुणश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहा इदमालिखतेऽनिमिषाय उपश्रुतये हर्यक्षाय कुंभीशत्रवे पात्रपाणये नृमणये हंत्रीमुखाय रुणाय० । अथ यदि दशाहाभ्यंतरे कुमारग्रहो बालमाविशेत्तेनाविष्टो नामयति न रोदति न हृष्यति न तुष्यति च तदेतन्नैमित्तिकं कर्तव्यं तदा बालकं जालेन प्रच्छाद्य उत्तरीयेण वाससा अंकमादाय तं बालं कूर्कुरस्तु कूर्कुरः कूर्कुरो बालबंधनः चेचेच्छुनक सृज नमस्ते सीसरोलपेतापव्हरत्सत्यं यत्ते देवा वरमददुः सत्वं कुमारमेव चेचेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरोलपेतापव्हर सत्यं यत्ते सरमा माता सीसरः पिता श्यामशबलौ भ्रातरौ चेचेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरोलपेतापव्हरेति जपः। न नामयति न रोदिति न हृष्यति न ग्लायति यत्र वयं वदामो यत्र चाभिमृशामसि। इत्यभिमृशति ॥ इति जातकर्म ॥४॥

स्वाहा इदमालिखतेऽनिमिषाय किंवदद्भ्य उपश्रुतये हर्यक्षाय कुंभीशत्रवे पात्रपाणये नृमणये हन्त्रीमुखाय सर्षपारुणाय० । इन मंत्रोंसे पिता अथवा और कोई ब्राह्मण दश दिनतक आहुति देता रहे फिर यदि दश दिनके भीतर बालकको किसी (पूतनादि) बालग्रहजनित पीडा (व्याधि) मालूम हो, और उससे ग्रसित होनेपर बालक न हाथ पैर हिलावे, न रोवे, न हँसे और न प्रसन्न रहे तब इस व्याधिके शमनार्थ यह कर्म करना चाहिये कि उस बालकको उसके ओढनेके वस्त्रसहित जालसे ढककर पिता अपनी गोदमें बैठाले और इन आगे लिखे ' कूर्कुरस्तु कूर्कुरः कूर्कुरो बालबन्धनः चेचेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरोलपेतापह्वरत्सत्यं यत्ते देवा वरमददुः सत्वं कुमारमेव वावृणीथाः चेचेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरोलपेतापह्वरत्सत्यं यत्ते सरमा माता सीसरः पिता श्यामशबलौ भ्रातरौ चेचेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरोलपेतापह्वरेति जपः। न नामयति न रोदिति न हृष्यति न ग्लायति यत्र वयं वदामो यत्र चाभिमृशामसि " इत्यभिमृशति मंत्रोंको जपे ।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीयमिश्रसुखानन्दसूरिसूनु-पण्डित-कन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायां जातकर्मसंस्कारः समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ नामकर्म ।

अथ दशमेऽहनि सूतिकां चोत्थाप्यैकादशेऽहनि विहितदिनांतरे वा पिता नाम कुर्यात् तत्र प्रथमं मातृपूजाभ्युदयिकादि कृत्वा ब्राह्मणान् भोजयेत्। कुमारं संस्नाप्य अहतवासः परिधाप्य कृतस्वस्त्ययनं प्राङ्मुखं दक्षिणकर्णे असुकशर्मासीति त्रिः श्रावयति । अथ आयुर्वेदात्मंत्रः । ॐ अंगादंगात्संभवसि हृदयादधिजायसे आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदः शतम् । नाम द्व्यक्षरं चतुरक्षरं सुखोद्यं शर्मांतं ब्राह्मणस्य वर्मांतं क्षत्रियस्य गुप्तांतं वैश्यस्य दासांतं शूद्रस्य ॥ इति नामकर्म ॥ ५ ॥

अब नामकर्मसंस्कार कहा जाता है। दशवें दिन सूतिकाको स्नान कराकर घरको (झाड बुहार लीप पोतकर) शुद्ध करे। फिर ग्यारहवें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिये । यदि कदाचित् उस दिन न होसके तो जिस दिनको निश्चय कर लिया है उसी दिन कर देवे। उस दिन पहले मातृपूजा और नान्दीमुखश्राद्ध करके ब्राह्मणोंको भोजन करावे फिर बालकको स्नान कराकर नवीन वस्त्र पहरावे । अनन्तर स्वस्तिवाचनपूर्वक पूर्वको मुख किये हुए बालकके दाहिने कानमें 'अमुक शर्मासि' ऐसा तीन बार सुनावे और फिर अगले 'ॐ अंगादंगात्सम्भवसि हृदयादधिजायसे आत्मा वै पुत्रनामासि सजीव शरदः शतम्' मंत्रका पाठ करे। ब्राह्मणके पुत्रका नाम दो अक्षरयुक्त चार अक्षरयुक्त सहजही उच्चारण करने योग्य और शर्मान्त करे अर्थात् नामके अन्तमें शर्मा पद जोड देना चाहिये । क्षत्रियका वर्मान्त नाम करण करे अर्थात् उसके नामके पीछे वर्मा पद जोड देना चाहिये । वैश्यका गुप्तान्त नामकरण करे अर्थात् वैश्यके नामके अन्तमें गुप्त पद जोड देना चाहिये और शूद्रका दासान्त नामकरण करे अर्थात् शूद्रके नामके अन्तमें दासपद जोड देना चाहिये ।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-मिश्रसुखानंदसूनुसु-
पण्डितकन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायां नामकर्मसंस्कारः
समाप्तः ॥ ५ ॥

अथ निष्क्रमणम् ।

तत्र चतुर्थे मासि चंद्रतारानुकूले दिने स्नातमलंकृतं शिशुं
रानीय पितान्यो वा ब्राह्मणः सूर्यमुदीक्ष्यति ॐ . ,
तत्र फलपुष्पान्वितपयसा भास्करस्य अर्घो देय इति निष्क्रमणम्

अथान्नप्राशनम् ।

तत्र षष्ठे मासि चंद्रतारानुकूलशुभदिने स्नातः शुचिराचांतः
वासाः पिता सूतिकागृह एव कुशकंडिकां कुर्यात् तत्र कुशैर्हस्तपरिमि
तचतुरस्रभूमि परिसमूह्य तानैशान्यां निक्षिप्य गोमयोदकेनोपलिप्य
रुफ्येन स्रुवेण वा प्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण प्रागग्रं त्रिरुल्लिख्य उल्लेखन

अब निष्क्रमण संस्कार लिखा जाता है। यह संस्कार चौथे महीनेमें और चन्द्र ताराकी अनुकूलताके दिन करना चाहिये। प्रथम बालकको स्नान कराकर नवीन गहने और वस्त्र पहिराय पिता या कोई दूसरा पुरुष उसको बाहर ले जावे और फिर इस आगे लिखे 'ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक०' इत्यादि मन्त्रका उच्चारण करके बालकको सूर्यनारायणका दर्शन करावे। फिर उपरोक्त मन्त्रका पाठ कर चुकनेपर फल पुष्प गन्धयुक्त जलके द्वारा भगवान् सूर्यको अर्घ्य देना चाहिये।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीयमिश्र सुखानन्दसूरिसूनु पण्डितकन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायां निष्क्रमणसंस्कारः समाप्तः ॥६॥

अब अन्नप्राशन संस्कार लिखा जाता है। यह संस्कार छठे महीनेमें जिस दिन चन्द्र और तारा अनुकूल हों उसी शुभ दिनमें करना चाहिये। उस दिन पिता प्रातःकाल स्नानपूर्वक शुद्ध हो आचमन करके पवित्र हो सफेद वस्त्र धारणपूर्वक जिस घरमें बालकका जन्म हुआ हो उसी घरमें चौखूंटी वेदी बनावे और उससे वेदीको तीन कुशोंसे बुहारकर उन कुशोंको ईशान दिशामें फेंक देवे। फिर गोबरसे वेदीको लीपकर स्फ्य नामक यज्ञपात्र अथवा स्रुवेसे क्रमशः प्रादेशप्रमाण तीन रेखा करके अनामिका और अंगूठसे रेखा खैंचनेके क्रमानुसार मिट्टी उठाकर फेंक

क्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां मृदं समुद्धृत्य वारिणा तं देशमभ्युक्ष्य कांस्यपात्रस्थं वह्निं प्रत्यङ्मुखमुपसमाधाय ॐ अद्यकर्तव्यान्नप्राशनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंदनतांबूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे इति ब्रह्माणं वृणुयात् ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनं ॐ यथाविहितं कर्म कुर्विति यजमानेनोक्ते ॐ करवाणीति तेनोक्ते अग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं निधाय तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य अग्निं प्रदक्षिणं कारयित्वा ब्रह्माणमुदङ्मुखं तत्रोपवेश्यास्मिन्नन्नप्राशनहोमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय ॐ भवानीति तेनोक्ते प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतो निदध्यात् । ततः परिस्तरणम् । बर्हिषश्चतुर्थभागमादायाग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यंतं नैर्ऋत्याद्वायव्यांतं

देवे । फिर जलसे वेदीको सेचन करे । अनन्तर कांसीके पात्रमें अग्निको लेकर पूर्वकी ओर उसका मुख करके स्थापन करे फिर आगे लिखे 'ॐ अद्य कर्तव्यान्नप्राशनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ' इस संकल्पको उच्चारण करके ब्रह्माका वरण करे तब ब्रह्मा उस पुष्पादि सामग्रीको लेकर ' ॐ वृतोऽस्मि ' कहे फिर यजमानके ' ॐ यथाविहितं कर्म कुरु ' ऐसा कहनेपर ब्रह्मा ' ॐ करवाणि ' ऐसा कहे । फिर अग्निके दक्षिणकी तरफ चौकी इत्यादि शुद्ध आसन बिछावे और उसपर पूर्वको अग्रभाग करके कुशा बिछावे और फिर ब्रह्मासे अग्निकी प्रदक्षिणा कराकर और उत्तरकी तरफ मुख कराकर उसपर ब्रह्माको बैठाल देवे और कहे कि 'अस्मिन्नन्नप्राशनहोमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव' तब इसके उत्तरमें ब्रह्मा 'ॐ भवानि' ऐसा कहे तत्पश्चात् यजमान प्रणीतापात्रको अपने आगे रखकर जलसे भर देवे और कुशोंसे उसको ढक देवे और ब्रह्माका मुख देखकर अग्निके (वेदीके) उत्तरकी ओरको रख देवे । इसके पीछे परिस्तरण करना चाहिये। एक मुट्ठी कुशा लेकर उसके चार भाग करे। पहले भाग

अग्नितः प्रणीतापर्यंतम् । ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमादिशि कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनंतर्गर्भितकुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं स्थाली चरुस्थाली संमार्जनकुशाः उपयमनकुशाः धस्तिस्रः स्रुवः आज्यं पूर्णपात्रं चर्वर्थास्तंडुला एतानि पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयानि । ततः पवित्रच्छेदनकुशैर्यजमानप्रादेशमितपवित्रच्छेदनं सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय द्वाभ्यामनामिकांगुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनं ततः प्रोक्षणीपात्रं सव्यहस्तेन गृहीत्वा दक्षिणानामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्गिनं ततः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीपात्रमभ्युक्ष्य प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तुसेचनम् । अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात् । ततः

द्वारा अग्निकोनसे ईशान कोनतक, दूसरे भागद्वारा ब्रह्माके आसनसे अग्निपर्यन्त, तीसरे भाग द्वारा नैर्ऋतकोनसे वायव्यकोनतक और चौथे भागको अग्नि (वेदी) से लेकर प्रणीतापात्रतक बिछा देवे । फिर अग्निके उत्तरकी ओर पश्चिम दिशामें पवित्र छेदनके लिये तीन कुशा रक्खे। पवित्र बनानेके लिये अग्रभागसहित तथा बीचके पत्तेसे रहित (अर्थात् जिनके भीतर अन्य कुशा न हों) दो कुशपत्र रखने चाहिये । फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, पाँच संमार्जन कुशा, तीनसे लेकर तेरहतक उपयमनकुशा, प्रादेशप्रमाण (बिलस्तभर लंबी) ढाककी तीन समिधा, स्रुवा, घृत, दो सौ छप्पन मुट्ठी चावलोंसे भरा हुआ पूर्णपात्र और चरुके निमित्त चावल इन सब वस्तुओंको क्रमशः पवित्रच्छेदनकी कुशाओंके पूर्वपूर्वकी ओर रखता जावे । फिर पवित्रच्छेदनकी कुशाओंसे यजमान प्रादेशप्रमाण पवित्रच्छेदनपूर्वक पवित्रोंको हाथमें ग्रहण कर प्रणीताके जलको तीन वार प्रोक्षणीपात्रमें डाले । अनन्तर अनामिका और अंगुष्ठसे पवित्रोंको पकडकर तीन बार प्रोक्षणीके जलको उछाले फिर प्रोक्षणीपात्रको बायें हाथमें रख दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठद्वारा पवित्रोंको ग्रहण करके तीन वार प्रोक्षणीका जल ऊपरको

आज्यस्थाल्यामाज्यं निरूप्य प्रणीतोदकेन तंडुलान्प्रक्षाल्य चरुपात्रे प्रणीतोदकं दत्त्वा तत्र तंडुलान् प्रक्षिप्य स्वयं चरुं गृहीत्वा ब्रह्मा चाज्यवह्नावुत्तरतश्चरुं दक्षिणतः आज्यं निदध्यात् । ततः सिद्धे चरौ तृणादि प्रज्वाल्य उभयोरुपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षेपः । ततस्त्रिः स्रुवप्रतपनम् । संमार्जनकुशानामग्रैरंतरतो मूलै-र्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रतप्य दक्षिणतो निदध्यात् तत आज्यमग्नितश्चरोः पूर्वेणानीयाग्रे धृत्वा आज्यपश्चिमेन चरुमानीयाज्यस्योत्तरतो निदध्यात् । तत आज्यस्य प्रोक्षणीवत्त्रिरुत्पवनं

फेंके । तिसके पीछे प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीका सेचन करे फिर प्रोक्षणीके जलसे पूर्व स्थापन करी हुई सब वस्तुओंको सेचन करे । पश्चात् अग्नि (वेदी) और प्रणीताके बीचमें प्रोक्षणीपात्रको रख देवे । अनन्तर आज्यस्थालीमें घृत डालकर प्रणीताके जलसे चरुके निमित्त रक्खे हुए चावलोंको धोवे और चरु पकानेके पात्रमें प्रणीताका जल डालकर फिर उसमें चावलोंको डाल देवे पीछे यजमान चरुपात्रको उठाकर और ब्रह्मा घृतपात्रको लेकर अग्निमें उत्तरकी तरफको चरु और दक्षिणकी तरफ घृतको रख देवे । फिर चरुके पक जानेपर एक तिनकेको बाले और उसको चरुतथा घृतके ऊपर दक्षिण तरफसे घुमाता हुआ अग्निमें डाल देवे । तत्पश्चात् स्रुवेको तीन बार अग्निमें तपाना चाहिये फिर संमार्जन कुशाओंके अग्रसे स्रुवेके भीतर और मूलभागसे बाहरकी तरफ स्रुवेको झाडे अर्थात् शुद्ध करे । अनन्तर प्रणीताके जलसे स्रुवेको छिडककर फिर तीन बार तपाकर (वेदीके) दक्षिणकी ओर रख देवे । फिर घृतको अग्नि-मेंसे उठाकर और उसको चरुके पूर्वभागसे लाकर अपने आगे रक्खे और फिर घृतके पश्चिमकी तरफसे चरुको लाकर घृतके उत्तरकी ओर रख देवे पश्चात् प्रोक्षणीकी तरह तीन बार पवित्रोंसे उछाले और देखे यदि उसमें कोई

अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं ततः प्रोक्षण्युत्पवनं तत उत्थाय
नकुशान्वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं . ..
घास्तिस्रः प्रक्षिपेत् तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन .
पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय ब्रह्मणान्वारब्धः
समिद्धतमेऽग्नौ जुहुयात् । तत्र प्रथमाहुतिचतुष्टये तत्तदाहुत्यनंतरं
वस्थितहुतशेषस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं
तये० । इति मनसा । ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिंद्राय० । इत्याघारौ । ॐ अग्न-
ये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ ।[1]
ततोऽनन्वारब्धेनासाधारणासाधारणाहुतिद्वयम् तत्र प्रथमाहुतिमंत्रः
ॐ देवीं वाचमजनयंत देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदंति सानो मंद्रेषमूर्जं

मक्खी इत्यादि अशुद्ध वस्तु पडी हो तो उसको निकालकर बाहर फेंक देवे फिर प्रोक्षणीके जलको भी उछाले और फिर यजमान खडा होकर उपयमन कुशाओंको बायें हाथमें ग्रहणपूर्वक मनसे प्रजापतिका ध्यान करता हुआ तीनों समिधाओंको घृतमें भिगोकर स्वाहा मंत्रके सहित चुपचाप अग्निमें डाल देवे। तदनन्तर आसनमें बैठकर पवित्रोंके साथ प्रोक्षणीका जल हाथमें ग्रहणपूर्वक दक्षिण क्रमसे अग्निके चारों तरफ छिडके फिर पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रख देवे। अनन्तर ब्रह्मासे मिलकर और दाहिनी जानुको नवायकर जलती हुई अग्निमें होम करे। पहली चार आहुति देनेके अनन्तर स्रुवेमें शेष रहे घृतको प्रोक्षणी-पात्रमें डालता जाय। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय०। इत्याघारौ। ॐ अग्नये० स्वाहा इदं अग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। फिर ब्रह्मासे मिलेहुए यजमानको आगे लिखे मन्त्रोंसे साधारण और असाधारण दो आहुति देनी चाहिये। तिनमें पहली आहुतिका मन्त्र निम्न लिखित जानना ॐ देवीं वाच-मजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सानो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वा-

१ यह दो आहुति आज्यभाग कहाती हैं।

दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु० । इदं वाचे० । द्वितीयाहुतिस्तु ॐ देवीं वाचमित्यादिमंत्रः ॐ वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाꣳ ऋतुभिः कल्पयाति । वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयꣳ स्वाहा इदं वाचे वाजाय० । इति मंत्राभ्याम् । ततः स्थालीपाकेनाहुतिचतुष्टयम् ॐ प्राणेनान्नमशीय स्वाहा इदं प्राणाय० । ॐ अपानेन गंधमशीय स्वाहा इदमपानाय० । ॐ चक्षुषा रूपाण्यशीय स्वाहा इदं चक्षुषे० । ॐ श्रोत्रेण यशोऽशीय स्वाहा इदं श्रोत्राय० । ततो ब्रह्मणान्वारब्धकर्तृको होमः तत्र तत्तदाहुत्यनंतरं स्रुवावस्थितहुतशेषद्रव्यस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । तत्रैवाज्यस्थालीपाकाभ्यां स्विष्टकृतम् । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० । तत आज्येन ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० ।

गस्मानुपसुष्टुतैतु= इदं वाचे स्वाहा । और दूसरी आहुतिका वही पहला 'ॐ देवीं वाचमित्यादि' मन्त्र जिससे कि प्रथम आहुति दी गई है और एक यह नीचे लिखा तीसरा मन्त्र जानना । 'ॐ वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाꣳ ऋतुभिः कल्पयाति । वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयꣳ स्वाहा इदं वाचे वाजाय०' अर्थात् पहली आहुतिका मन्त्र और एक दूसरा मंत्र इन दोनोंको मिलाकर दूसरी आहुति देनी चाहिये । इसके अनन्तर स्थालीपाकमें घृत मिलाकर आगे लिखे 'ॐ प्राणेनान्नमशीय स्वाहा इदं प्राणाय० । ॐ अपानेन गन्धमशीय स्वाहा इदमपानाय० । ॐ चक्षुषा रूपाण्यशीय स्वाहा इदं चक्षुषे० । ॐ श्रोत्रेण यशोऽशीय स्वाहा इदं श्रोत्राय० ।' मन्त्रसे स्थालीपाक चरुकी चार आहुति देवे । इसके आगेका हवन भी ब्रह्मासे मिलकरही किया जाता है प्रत्येक आहुतिके अनन्तर स्रुवेमें बची हुई वस्तुको प्रोक्षणीपात्रमें डालना चाहिये । अब प्रथम घृत और चरु इन दोनोंसे आगे लिखे 'ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते' मन्त्रद्वारा स्विष्टकृत् आहुति देवे । फिर घृतद्वारा आगे लिखे भूरादि मन्त्रोंसे नव आहुति देवे

१ यह दोनों आघार आहुति कहलाती हैं ।

ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न० । महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि त्स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती अस्या उपसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यः० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । इति प्राजापत्यम् । अथ संस्रवप्राशनम् ।

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न० । एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्० । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति

तत आचम्य ओमद्य कृतैतदन्नप्राशनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणां दद्यात्। ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततः प्रणीताविमोकः। ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः संतु इति पठित्वा पवित्राभ्यां प्रणीताजलमानीय तेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः-इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम् ततस्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य हस्तेनैव जुहुयात्। ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत। इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा। इति बर्हिर्होमः। अथ सर्वान् कटुमधुरलवणादिरसान्सर्वाणि च शाल्यादीन्यन्नानि यथासंभवमुद्धृत्यैकस्मि-

---

मनसा। इति प्राजापत्यम्। अनन्तर मोक्षणीपात्रके जलको यत् किंचित् पान करे फिर शुद्ध जलसे आचमन करे पुनः आगे लिखे हुए 'ओमद्य कृतैतदन्नप्राशनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे' ऐसा संकल्प करके पूर्णपात्रका दान करके ब्रह्माको देवे। तब ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' कहकर उसको ग्रहण करे। फिर पवित्रोंसे प्रणीतापात्रके जलको लेकर आगे लिखे 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' मन्त्रसे अपने शिरमें छिडके। अनन्तर आगे लिखे 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः' मंत्रसे प्रणीतापात्रको ईशानकोनमें उलटा कर देना चाहिये। इसके पीछे स्तरणक्रमसे अर्थात् जिस क्रमसे कुश बिछाये थे उसी क्रमसे कुशोंको उठाकर घृतमें भिगोवे और फिर उनको हाथसे ही आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत। इदं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः स्वाहा' इस मन्त्रद्वारा अग्निमें होम कर देवे फिर सब प्रकारके कडवे, तीखे, कसैले, मीठे, खट्टे, लवण रसोंको, सब प्रकारके चावल इत्यादि अन्नको, जिस परिमाणसे घरमें बनाये गये हों, उस

न्युत्तमपात्रे कृत्वा कृतस्नानादिरलंकारादियुतो बालस्तूष्णीं ॐ इति मंत्रेण वा अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः तारिष ऊर्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे इत्यनेन वा प्राशनीयम् । कुमारस्य वाक्प्रसरणकामेन भरद्वाजमांसेन अन्नाद्यकामेन मांसेन मत्स्येन जवनकामस्य आयुःकामेन कृकलासमांसेन सकामेन आटिमांसं सर्वफलकामेन काथितसर्वमांसं कापिंजलः गौरतित्तिर इति केचित् । अलाभे पिष्टकमयानां भरद्वाजप्रभृतीनामेकदेशः प्राशयितव्यः । तत आचम्योत्थाय फलमूलपुष्पसमन्वितघृतेन स्रुवं परिपूर्य ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविᳪ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं

सबमेंसे थोडा थोडा एक उत्तम पात्रमें परोसकर स्नानपूर्वक शुद्ध,नवीन वस्त्र पहराये हुए बालकको चुपचाप 'ॐ हन्त' या आगे लिखे 'अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः प्रप्रदातारं तारिष ऊर्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे' मन्त्रसे उस पात्रमें रक्खे हुए सब अन्न चटा देवे । यहाँ विशेषता यह है यदि पिता इच्छा करे कि यह मेरा बालक उत्तम वक्ता हो तो भारद्वाज (पक्षी विशेष) के मांससे उसको प्राशन कराना चाहिये। यदि बालकके विशेष अन्नशाली होनेकी कामना हो तो कपिञ्जल (पक्षी) के मांससे प्राशन कराना चाहिये । यदि पुत्रके वेगवान् होनेकी चाहना हो तो मत्स्यमांस द्वारा, विशेष दीर्घायु होनेकी लालसा होनेपर छकलास (गिरगट) के मांस द्वारा और पुत्रके ब्रह्मतेजस्वी होनेकी अभिलाषा होनेपर सफेद तीतरके मांससे प्राशन कराना चाहिये । यदि बालकके सर्वगुणसम्पन्न होनेकी अभिलाषा हो तो उसको सब प्रकारके भक्ष्य मांसद्वारा प्राशन कराना चाहिये । यदि उपरोक्त मांस न मिल सके तो आटे द्वारा उन उन पक्षियोंका आकार (मूर्त्ति) बनाकर उसके कुछ अंशको प्राशन करा देवे फिर आचमनपूर्वक स्रुवेमें मल फल पुष्प घृत भरकर खड़ा होजाय और आगे लिखे 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजात मग्निम् । कवि ᳪ

जनयंत देवाः स्वाहा। इति मंत्रेण पूर्णाहुतिं दद्यात्। तत उपविश्य भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ॐ कश्यपस्य त्र्यायुष्यमिति ग्रीवायां ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहुमूले ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि। अनेनैव क्रमेण कुमारललाटादावपि तन्नो इत्यत्र तत्ते आस्त्विति विशेषः ततो। दूर्वाक्षतादिदानं ब्राह्मणानां भोजनं च। इत्यन्नप्राशनम् ॥ ७ ॥

अथ चूडाकर्म।

तच्च पूर्णवर्षे तृतीये वा असंपूर्णे उपनीत्या सह वा यथाचारं उदगयन आपूर्यमाणपक्षे शुक्रास्तादिदोषरहितरिक्तादिदोषरहितसोमगुरुबुध-

सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा' इस मन्त्रसे पूर्णाहुति देवे। तत्पश्चात् आसनमें बैठकर स्रुवेमें होमकी भस्म लगावे और फिर अनामिका अंगुली द्वारा उस स्रुवेकी भस्म लेकर 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' उच्चारण करके माथेमें, 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' कहकर गलेमें, 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं' पढकर दक्षिणबाहुमूलमें और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' ऐसा बोलकर उस भस्मको हृदयमें लगा लेना चाहिये। इस प्रकार पिता अपने भस्म लगाकर फिर ऐसेही पुत्रके भी लगावे किन्तु जब पुत्रके भस्म लगावे तब 'तन्नो अस्तु' के स्थानमें 'तत्ते अस्तु' ऐसा उच्चारण करे। फिर ब्राह्मणसे दूर्वा अक्षत पुष्पादि द्वारा आशीर्वाद ग्रहण करे इसके उपरान्त ब्राह्मणोंको भोजन कराना चाहिये।

इति श्रीमुरादाबादनिवासिकान्यकुब्जवंशावतंसस्वर्गीयमिश्रसुखानन्दसूरिसनुपण्डितकन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायामन्नप्राशनसंस्कारः समाप्तः ॥७॥

अब चूडाकरणसंस्कार लिखा जाता है। यह चूडाकरणसंस्कार वर्षके पूर्ण हो जाने पर अथवा तीसरे वर्ष या यज्ञोपवीत संस्कारके साथ अपने यहाँकी रीतिके अनुसार किया जाता है। चूडाकरण संस्कार उत्तरायण शुक्लपक्ष और शुक्रादिके अस्तरहित समयमें तथा रिक्तातिथिरहित समयमें और सोम,

शुक्रान्यतमवारविहितनक्षत्रसमन्वितायां तिथौ मातृपूजाभ्युदयिकादि कृत्वा मंडपे परिष्कृतभूमौ तत्र क्रमः । कुशैर्हस्तमितां भूमिं परिसमूह्य तानैशान्यां गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेन प्रादेशमात्रं त्रिरुल्लिख्य णानामिकांगुष्ठाभ्यामुद्धृत्य , वारिणा तं देशमभ्युक्ष्य मानीय प्रत्यङ्मुखमग्नेरुपसमाधानं कुर्यात् । ततोऽग्नेः पश्चिमतो नदक्षिणदिशि स्नापितमहतवासः परिधाय्य कुमारमंके निधाय उपविशति । ततः पुष्पचंदनतांम्बूलवासांस्यादाय ॐ अद्य कर्तव्यचूडाकरणहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंदनतांबूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे इति

गुरु, बुध तथा शुक्र इन वारोंमें और ज्योतिषशास्त्रोक्त चूडाकर्म कथित नक्षत्रयुक्त तिथिमें होना चाहिये । उस दिन यजमान स्नान तथा नित्यकर्म करके मातृपूजा और नान्दीमुख श्राद्ध कर रचे हुए मण्डपकी शुद्ध भूमिमें वेदी बनायकर कुशकण्डिकाका आरंभ करे । प्रथम तीन कुशाओंसे वेदीको परिष्कार (साफ) करे और फिर उन कुशाओंको ईशानकोनमें फेंक देवे । अनन्तर गोबरमें जल मिलाकर वेदीको लीपे फिर स्रुवेसे प्रादेशप्रमाण तीन रेखा खैंचकर रेखा खैंचनेके क्रमानुसार अनामिका और अंगुष्ठ द्वारा उन रेखाओंमेंसे मिट्टी उठाकर ईशानकोनमें डाल देवे तत्पश्चात् वेदीको जलसे सेचन करना चाहिये और काँसीके पात्रमें अग्नि लाकर उसको पश्चिमाभिमुख करके वेदीमें स्थापन करे । फिर अग्निके पश्चिमकी तरफ आसन बिछाकर यजमान नवीन वस्त्र पहरकर उसपर बैठे पश्चात् बालकको स्नान कराय नवीन वस्त्र पहराय माता अपनी गोदीमें लेकर पतिके दाहिनी तरफ बैठे तदनन्तर पुष्प, चन्दन, ताम्बूल तथा वस्त्र लेकर यजमान आगे लिखेहुए " ॐ अद्य कर्त्तव्यचूडाकरणहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे, इस संकल्पको उच्चा-

ब्रह्माणं वृणुयात् "ॐ वृतोऽस्मीति-प्रतिवचनम् ॐ यथाविहितं कर्म कुर्विति यजमानेनोक्ते ॐ करवाणीति प्रतिवचनम्। ततो यजमानोऽग्ने-र्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्याग्निं प्रद-क्षिणं कारयित्वा अस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय ॐ भवा-नीति तेनोक्ते ब्रह्माणमुदङ्मुखं तत्रोपवेश्य प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशो-परि निदध्यात्। ततः परिस्तरणं बर्हिषश्चतुर्थभागमादायाग्नेयादीशानांतं ब्रह्मणोऽग्निपर्यंतं नैर्ऋत्याद्वायव्यांतं अग्नितः प्रणीतापर्यंतं ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनंतर्गर्भित-कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली संमार्जनकुशाः समिधस्तिस्रः

रण पूर्वक ब्रह्माका वरण करे तब ब्रह्मा उस पुष्पादि सामग्रीको लेकर 'ॐ वृतोऽस्मि' ऐसा कहे। फिर यजमान 'ॐ यथाविहितं कर्म कुरु' कहे तब (उसके उत्तरमें) ब्रह्मा 'ॐ करवाणि' ऐसा कहे। तत्पश्चात् यजमान अग्निके दक्षिणकी ओर चौकी आदि शुद्ध आसन बिछाकर उसपर पूर्वको जिनका अग्र-भाग हो ऐसे कुश बिछावे और ब्रह्मासे अग्निकी प्रदक्षिणा कराकर 'अस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव' अर्थात् इस कर्ममें आप मेरे ब्रह्मा हो ऐसा कहे तब इसके उत्तरमें ब्रह्माके 'ॐ भवानि' कहने पर उस आसनपर ब्रह्माको उत्तराभिमुख करके बैठाल देना चाहिये। फिर प्रणीतापात्रको आगे रखकर जलसे परि-पूर्ण करके कुशाओंसे ढक देवे और ब्रह्माके मुखकी तरफ देखकर अग्निके उत्तरकी ओर कुशाओं पर रख देवे तिसके पीछे अग्निके सब ओर परिस्तरण करना चाहिये। मुट्ठीभर अथवा सौ कुश लेकर उसके चार भाग करे। प्रथम भाग अग्निकोनसे लेकर ईशानकोनतक, दूसरा भाग ब्रह्माके आसनसे अग्निकोनतक, तीसरा भाग नैर्ऋत्यकोनसे वायुकोनतक और चौथा भाग अग्निसे प्रणीतापात्रपर्यन्त बिछा देवे। फिर अग्निसे उत्तर पश्चिम दिशामें पवित्रच्छेदनके लिये तीन कुशा रक्खे और पवित्र बनानेके लिये

स्रुवः आज्यं
पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वादेशे क्रमेणासादनीय
साधारणवस्तून्युपकल्पनीयानि तत्र शीतोदकमुष्णोदकं
तान्यतमस्य पिंडः त्रिश्वेतशल्लकीकंटकं
लोहक्षुरः नापितः वृषभगोमयपिंडः
ततः पवित्रच्छेदनकुशाः पवित्रे छित्त्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं प्रोक्षणीपात्रे निधाय द्वाभ्यामनामिकांगुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे त्रिरुत्पवनं ततः प्रोक्षणीपात्रं वामहस्ते कृत्वाऽनामिकांगुष्ठगृहीतपवित्राभ्यां प्रोक्षणीजलं त्रिरुत्क्षिप्य प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीपात्रमभ्युक्ष्य प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तून्यभिषिच्याग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात्।

अग्रभागसहित और बीचके पत्तेसे रहित ऐसे दो कुशपत्र रक्खे। फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, पांच संमार्जनकुशा, तीन समिधा, स्रुवा, घृत और दो सौ छप्पन मुट्ठी चावलोंसे भरा हुआ पूर्णपात्र इन सब पदार्थोंको पवित्रच्छेदनकी कुशाओंके आगे आगे रखता जावे और इन सबके आगे आगे अन्यान्य साधारण वस्तुओंको भी रखता जावे। (इनके सिवाय) शीतल और उष्णजल रक्खे। घृत, दही अथवा माखन इनमें यथालब्ध किसी एक पदार्थका गोलाकार पिंड बनाकर रख देवे। तीन स्थानमें सफेद सेही पक्षीका कांटा, सत्ताईस कुशा, लोहेका उस्तरा, नापित (नाई), बैलके गोबरका पिंड (लौंदा) तथा अन्यान्य कमलके पत्ते इत्यादि मांगलिक पदार्थोंको स्थापन करे। फिर पवित्रच्छेदनकी कुशाओंसे पवित्र छेदनकर उन पवित्रोंको हाथमें ले प्रणीताके जलको प्रोक्षणीपात्रमें डाले। पश्चात् अनामिका और अंगुष्ठ इन दोनों अंगुलियोंके द्वारा पवित्रोंको पकड प्रोक्षणीका जल तीन बार उछाले। फिर प्रोक्षणीपात्रको बायें हाथमें रखकर अनामिका तथा अंगुष्ठसे पकडे हुए पवित्रोंसे प्रोक्षणीका जल तीन बार ऊपरको छिडके। पीछे प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीपात्रको सेचन कर प्रोक्षणीके जल द्वारा पूर्वस्थापित सब वस्तु

आज्यस्थाल्यामाज्यं कृत्वाधिश्रित्य ज्वलत्तृणादिकमादायाज्यस्योपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत् क्षिपेत्। ततस्त्रिः स्रुवप्रतपनं संमार्जनकुशानामग्रैरंतरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पूर्ववत् त्रिः प्रताप्य दक्षिणतो निदध्यात्। ततः अग्नितः प्रदक्षिणक्रमेणाज्यमवतार्याग्रतो निदध्यात्। ततः प्रोक्षणीवद्विराज्योत्पवनं अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं पूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनं तत उत्थाय उपयमनकुशानादाय वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः प्रक्षिपेत्। तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निं पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे कृत्वा ब्रह्मणान्वारब्धः पातितदक्षिणजानुः

ओंको छिडके। फिर उस प्रोक्षणीपात्रको अग्नि और प्रणीताके बीचमें रख देना चाहिये। अनन्तर आज्यस्थालीमें घृत डालकर उसको वेदीकी अग्निमें रख देवे। फिर एक तिनका बालकर घृतके चारों ओर दक्षिण क्रमसे घुमाकर अग्निमें डाल देवे तदनन्तर तीन बार स्रुवेको (वेदीकी अग्निसे) तपावे और फिर संमार्जनकुशाओंके अग्रभागसे भीतर और मूलभागसे बाहरकी तरफ स्रुवेको शुद्ध कर प्रणीताके जलसे छिडके अनन्तर पूर्वोक्तप्रकारसे ही फिर तीन बार तपाकर दक्षिणकी ओर रखदेवे। तत्पश्चात् दक्षिण क्रमसे अग्निसे घृतको उठाकर यजमान अपने आगे रख लेवे फिर प्रोक्षणीपात्रकी तरह यजमान उस घृतको पवित्रोंद्वारा उछाले और देखे यदि उसमें मक्खी इत्यादि कोई अपवित्र वस्तु पडी हो तो उसको निकालकर फेंक देना चाहिये। फिर पूर्ववत् पवित्रोंद्वारा तीन बारही प्रोक्षणीपात्रके जलको उछलना उचित है। फिर यजमान खडा हो उपयमन कुशाओंको बायें हाथमें ले मनमें प्रजापतिका ध्यान करता हुआ उन पूर्व स्थापित तीनों समिधाओंको घृतमें भिगोकर स्वाहा शब्दके साथ चुपचाप अग्निमें डाल देवे। फिर आसन पर बैठकर पवित्र और प्रोक्षणीका जल हाथमें ग्रहणपूर्वक अग्निके चारों तरफ छिडक पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रखदेवे फिर ब्रह्मासे मिलकर और अपने दाहिने घुटुएको नवाकर प्रज्वलित अग्निमें होम

समिद्धतमेऽग्नौ जुहुयात् । तत्र प्रत्याहुत्यनंतरं
स्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०
मनसा । ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिंद्राय० २ । इत्याघारौ ।
स्वाहा इदमग्नये० ३ । सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० ४ ।
ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० ५ । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० ६
ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय ७ । एता महाव्याहृतयः । ॐ
अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः ।
शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० ८
ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उपसो व्युष्टौ । अव
नो वरुणᳬ रराणो वीहि मृडीकᳬ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरु-
णाभ्यां० ९ । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि ।
अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजᳬ स्वाहा इदमग्नये० १० ।

करे प्रत्येक आहुति देनेपर स्रुवेमें जो घृत शेष रहे उसको प्रोक्षणीपात्रमें डालता जाय । हवन करनेके मन्त्र यथा । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम । ॥ १ ॥ इति मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय न मम ॥ २ ॥ इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम ॥ ३ ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ ४ ॥ इत्याज्यभागौ । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम ॥ ५ ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ ६ ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ ७ ॥ एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो ऽअव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० ॥८॥ ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणᳬ रराणो वीहि मृडीकᳬ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ९ ॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजᳬ स्वाहा इदमग्नये० ॥ १० ॥

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च० ११। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० १२। इति सर्वप्रायश्चित्तम्। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० १३। इति मनसा। इति प्राजापत्यम्। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० १४। इति स्विष्टकृत्। अथ संस्रवप्राशनम्। तत आचम्य ॐ अद्यामुष्य कुमारस्य कृतैतच्चूडाकरणहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे। इति ब्रह्मणे दक्षिणां तु दद्यात्। ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततो ब्रह्मग्रं-

---

ॐ ये ते शतं वरुणये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ११ ॥ ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० ॥ १२ ॥ इति सर्वप्रायश्चित्तम्। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० ॥ १३ ॥ इति मनसा। इति प्राजापत्यम्। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० ॥ १४ ॥ इसके पीछे प्रोक्षणीके जलद्वारा प्राशन करना चाहिये और फिर दूसरी बार शुद्ध जलसे आचमन करे अनन्तर आगे लिखे 'ॐ अद्यामुष्य कुमारस्य कृतैतच्चूडाकरण होमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे' इस संकल्पको पढकर ब्रह्माके निमित्त पूर्णपात्रका दान करे। तब ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' कहकर वह दक्षिणा लेलेवे। फिर पवित्रोंकी गांठ खोल देनी चाहिये और उन्हीं पवित्रोंसे आगे लिखे

थिविमोकः । ततः ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः संतु इति त्राभ्यां प्रणीताजलमानीय तेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्म । इत्यैशान्यां ... ततस्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य ॐ देवा गातुविदो वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञ॰ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा इति मंत्रेण बर्हिर्होमः । अथ शीतोदकमुष्णोदकेन ॐ उष्णेन वा उदकेनेह्यदिते केशान्वप इति मंत्रेणाभिषिच्य तन्मिश्रितोदके तान्यतमपिंडं तूष्णीं प्रक्षिप्य दक्षिणपश्चिमोत्तरक्रमेण ... कुमारकेशजूटिकात्रये दक्षिणजूटिकाम् । ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्या आप उंदंतु ते तनु दीर्घायुत्वाय वर्चसे । इति मंत्रं पठित्वा तेनैन मिश्रितवारिणा

'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' यह मन्त्र पढकर यजमान प्रणीताके जलद्वारा शिरमें मार्जन करे और पश्चात् आगे लिखे 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि य च वय द्विष्म' इस मन्त्रको पढकर प्रणीतापात्रको ईशानकोनमें उल्टा कर देवे । तिस पीछे बिछानेके क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रमसे कुश बिछाये थे उसी क्रमसे उन कुशोंको उठावे और फिर उनको घृतमें भिगोकर आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इम देव यज्ञ॰ स्वाहा वाते धाः स्वाहा इस मन्त्रसे अग्निमें डाल देवे तदनन्तर पूर्वस्थापित शीतल जलको गरम जलमें आगे लिखे 'ॐ उष्णेन वा य उदकेनेह्यदिते केशान् वप' इस मन्त्र द्वारा मिलावे। फिर उस जलमें थोडासा मट्ठा डालकर पूर्व स्थापित घृत, दही वा माखनके पिंडमेंसे भी यत्किंचित् पिंडही बनाकर चुपचाप उसमें डालदेवे । फिर चूडाकर्मके निर्दिष्ट दिनसे पहले दिन बालकके केशोंके तीन भाग कर कलावेसे दक्षिण पश्चिम उत्तर तीन तरफ जूटिका (जूडा) बांधे । उन पहले दिन बाँधी हुई तीनों जूटिकाओंमे दक्षिण तरफवाली जूटिकाको आज चूडाकर्मके दिन आगे लिखे 'ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्या आप उन्दन्तु ते तनुम् । दीर्घायुत्वाय वर्चसे' इस मन्त्रको पढकर शीतोदक, उष्णोदक-

ततो दक्षिणभागस्थितजूटिकाभागत्रयं कुर्यात् तत्र एकैकां जूटिकां प्रति कुशपत्रत्रयसंयोजनं कुर्यात् शल्लकीकंटकेन तूष्णीं विवरणं कृत्वा भागत्रयं कुर्यात् ततः सप्तविंशतिकुशपत्रतः पत्रत्रयमानीय तत्केशमूलसंलग्नायजूटिकाप्रथमभागमध्यांतरितं कुर्यात् ॐ ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳ हिꣳसीः शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिꣳसीः इति मंत्रेण लोहक्षुरं गृहीत्वा ॐ निवर्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय इति मंत्रेण जूटिकासंलग्नं कुर्यात् ततः कुशपत्रत्रयसहितां जूटिकां छिनत्ति। ॐ येनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्। तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्यायुष्यं जरदष्टिर्यथा सत्। इति मंत्रेण पश्चिमजूटिकाच्छेदनं कुर्यात्। ततस्तान् लूनकुशपत्रत्रयसहितान् अनडुद्गोमयपिंडोपरि उत्तरस्यां निदध्यात्। अत्रैव पूर्वप्रक्षालितपरभागद्वये कुशपत्रत्रितयांतर्निधानादि च्छेदवर्ज

मट्ठा और दधि इत्यादि मिश्रित जलसे भिगोवे। फिर उस दक्षिण तरफकी जूटिकाके भी सेहीके काटेसे सुलझाकर तीन भाग करे और पूर्व स्थापित सत्ताईस कुशोंमेंसे तीन कुश ले कलावा लपेटकर उनकी भी पिंजूलिका बना लेवे और पहली जूटिकाके साथ उस पिंजूलिकाको युक्त करे। अनन्तर आगे लिखे 'ॐ ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैन ꣳहिꣳसीः शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिꣳसी।' इस मन्त्रसे उस्तरेको हाथमें लेवे। तदनन्तर आगे लिखे 'निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय' इस मन्त्रसे उस उस्तरेको बालोंमें लगावे और फिर आगे लिखे 'ॐ येनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्। तेन ब्रह्मणो वपतेदमस्यायुर्ष्यं जरदष्टिर्यथा सत्।' इस मंत्रसे उस पिंजूलिकासमेत बालोंके जूड़ेको काट लेवे। पश्चात् उन कुशसहित काटे हुए बालोंको उत्तरको ओर स्थापित बैलके गोबर पर रखदेवे फिर पहले भिगोई हुई दक्षिणभागकी दोनों जूटिकाको तीन तीन कुशोंकी पिंजूलिकामें युक्त कर केश काटनेके अतिरिक्त तीन तीन

सर्वं पूर्ववदेव च्छेदनं तूष्णीम् ततः पश्चिमजूटिकायां मंत्रेण प्रक्षालनं तूष्णीं शल्लकीकंटकेन भागत्रयकरणं लग्नाग्रकेशांतरितमध्यकुशपत्रत्रयधारणक्षुरग्रहणतत्संयोजनानि तत्तन्मंत्रेणैव । तत्र प्रथमजूटिकाछेदने मंत्रः ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषं इति मंत्रेण छित्त्वा ततः पूर्ववद्गोमयपिंडोपरि निदध्यात् । तत्रावशिष्टभागद्वये कुशपत्रत्रयं केशांतर्निधानादि च्छेदनवर्जं सर्वं पूर्ववदेव च्छेदनं तूष्णीमेव लूनकुशपत्रत्रयकेशानां गोमयपिंडोपरि धारणं च । तत उत्तरभागजूटिकायां प्रक्षालनादिक्षुरसंयोजनांतेषु पूर्ववत्तत्तन्मंत्रं प्रयोज्य प्रथमभागजूटिकायां छेदने मंत्रः ॐ येन भूरिश्चरा दिवं ज्योक्च पश्चाद्धि सूर्यं तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्याय स्वस्तये ।

कुशपत्र रखना तथा सेहीके काँटेका लगाना इत्यादि सब काम पूर्ववत् करे, किन्तु छेदन अर्थात् बालोंके काटनेका काम चुपचाप करे अनन्तर पश्चिमकी तरफके जूडामें पूर्ववत् तत्तन्मन्त्रों द्वारा भिजोना सेईके काँटेसे चुपचाप बालोंके तीन भाग करना और फिर तीन तीन कुश पिंजूलिकाओंका युक्त करना, क्षुरे (उस्तरे) को हाथमें लेना, बालोंमें उस्तरेका लगाना यह सब काम करे। पश्चात् आगे लिखे 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ' इस मन्त्रसे पहली जूडाको काट लेवे । फिर पूर्ववत् काटी हुई जूटिका इत्यादिको उसी गोबरके लौंदे पर रख देवे । अनन्तर बची हुई दो जूटिकाओंको तीन तीन कुशोंसे संयुक्त कर छेदनके अतिरिक्त सब कार्य पूर्ववत् करे किन्तु छेदन चुपचाप करना चाहिये । फिर इन केश और पिंजूलिकाको पूर्ववत् गोबरके लौंदे पर रख देवे इसके पश्चात् उत्तर भागके जूडामें बाल भिगोनेसे लेकर बालोंमें छुरेको रखनेतक उन उन मन्त्रोंद्वारा सब कार्य पूर्ववत् करके प्रथम भागके जूडाको आगे लिखे 'ॐ येन भूरिश्चरा दिवं ज्योक्च पश्चाद्धिसूर्यं तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्याय स्वस्तये ।

ता· फशा‌न् गामयपिंडोपरि निदध्यात्। ततोऽवशिष्टभागद्वये कुशपत्रत्रये केशांतर्निधानादि च्छेदनवर्जं सर्वं पूर्ववदेव च्छेदनं तूर्ष्णीं गोमयपिंडोपरि धारणमपि। ततः समस्तशिरः प्रक्ष्याल्य त्रिः केशोपरि क्षुरं प्रदक्षिणक्रमेणानुकेशान् भ्रामयति। ॐ यत् क्षुरेण मज्जयता सुपेशसा वप्त्वा वपति केशांश्छिंधि शिरोमास्यायुः प्रमोपीः। इति मंत्रेण। ततस्ताभिरेवाद्भिः समस्तं शिरः प्रक्ष्याल्य ॐ अक्षण्वन्परिवप इति नापिताय क्षुरं प्रयच्छति अथ नापितः शिखां धृत्वा समस्तशिरोवपनं यथाकुलधर्मं कुर्यात्। तांश्च केशान्नूतनवस्त्रेण प्रतीक्ष्य माता दधिभक्तदुग्धसमन्वितगोमयपिंडोपरि निदध्यात्। इति समाचारः। पूर्ववत्पूर्णाहुतिः ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा इति मंत्रेण

इस मन्त्रसे छेदन करें अर्थात् काट लेवे। फिर उन केश तथा कुशाओंको गोबरके लौंदेपर रख देवे। तत्पश्चात् शेष रहे उत्तरके दो भागोंमें तीन तीन कुशाओंको केशोंके भीतर रखना इत्यादि सारे कार्य पहलेकी नाईं चुपचाप करे और बालोंको काटकर गोबरके लौंदेपर रख देवे। तदनन्तर समस्त शिरको गीला कर अर्थात् जलसे भिगोकर छुरेको दक्षिण क्रमसे तीन वार आगे लिखे 'ॐ यत्क्षुरेण मज्जयता सुपेशसा वप्त्वा वा वपति केशांश्छिन्धि शिरोमास्यायुः प्रमोषीः' इस मन्त्रद्वारा शिरके चारों ओर घुमावे फिर उन्हीं पहले गुनादि मिले शीतल और उष्ण जलसे सारे शिरको भिगोकर 'ॐ अक्षण्वन्परिवप' ऐसा उच्चारण करके उस छुरे (उस्तरे) को नाईके हाथमें देदेना चाहिये और तब फिर वह नाई कुलधर्मानुसार शिखाको छोडकर शेष समस्त शिरका मुण्डन कर देवे। अनन्तर बालककी माता उन बालोंको नवीन वस्त्रमें लपेटकर दही दूध सहित गोबरके लौंदेपर रख देवे। इस रीतिको सब किसीके पक्षमें समान जानना चाहिये। फिर पूर्ववत् आगे लिखे 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजात मग्निम्। कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा'

पूर्णाहुतिः। तत उपविश्य स्रुवेण भस्मानीय स्मना त्र्यायुषं कुर्यात् ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ॐ त्र्यायुषमिति ग्रीवायां ॐ यद्देवानां त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहुमूले तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि अनेनैव क्रमेण कुमारललाटादावपि तत्र तत्ते अस्तु इति विशेषः। ततो दूर्वाक्षतादिग्रहणम्। ततस्तान् केशान् सगोमयपिंडान् गोष्ठे सरित्तीरे वा अन्यस्मिन्नुदकांतरे वा निदध्यात्। तत आचाराद्भोज्यादिकम्॥ इति चूडाकरणम्॥ ८॥

अथ कर्णवेधः।

तत्र तृतीये वर्षे पंचमे वा पुष्येंदुचित्राहरिरेवत्यन्यतमनक्षत्रसमन्वितरिक्तातिथिपूर्वाह्ने पिताऽन्यो वा पूर्वाभिमुखोपविष्टः कुमारस्य मधुरं

इस मन्त्रसे पूर्णाहुति देनी चाहिये। फिर आसनपर बैठकर स्रुवेसे अग्निकी भस्म ले दाहिने हाथकी अनामिका अंगुलीसे उस भस्मको ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः ऐसा कह कर माथेमें, ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं यह कहकर गलेमें ॐ यद्देवानां त्र्यायुषं ऐसा कहकर दक्षिणबाहुमूलमें और ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं कहकर यजमान अपने हृदयमें लगावे। फिर इसी रीतिसे पुत्रके भस्म लगानी चाहिये। किन्तु जब पुत्रके भस्म लगावे तब 'तन्नो अस्तु' के स्थानमें 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करे फिर दूर्वाक्षतादि रूप आशीर्वाद ग्रहण करे। तत्पश्चात् उन केशोंको गोबरके लौंदे समेत गोशालामें अथवा किसी नदीके किनारे किंवा किसी अन्य जलाशयके समीप रख देवे और फिर अपने कुलकी रीतिके अनुसार ब्राह्मण तथा इष्ट मित्रोंको भोजन करावे।

इति श्रीब्रह्मकुब्जवर्तसमुरादाबादनिवासिसर्वौषधिश्रसुखानन्दसूरिसूनु-पण्डित-कन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायां चूडाकरणसंस्कारः समाप्तः॥८॥

अब कर्णवेध (कनछेदन) संस्कार लिखा जाता है। तीसरे अथवा पाँचवें वर्षमें पुष्य, इन्दु, चित्रा, हरि, रेवती, इन नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र युक्त, रिक्ता तिथिके अतिरिक्त अन्य तिथिके पूर्वाह्न समयमें पिता अथवा दूसरा घरका

दत्त्वा ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥ इति मंत्रेण दक्षिणकर्णमभिमंत्र्य ॐ वक्ष्यंती वेदा गनीगंति कर्णं प्रियꣳ सखायं परिषस्वजाना। योषेव शिंक्ते विततावि धन्वञ्ज्या इयꣳ समने पारयंती ॥ इति मंत्रेण वामकर्णमभिमंत्रयेत्। ततो मध्यं वीक्ष्य नापितद्वारा वेधयेत्। तस्मिन् समये मधुरादिदानमाचारात्। ततो ब्राह्मणभोजनम् ॥ इति कर्णवेधः ॥ ९ ॥

अथोपनयनम्।

तत्र शुद्धसमये रविगुरुचंद्रतारादिशुद्धौ जन्मतो गर्भाष्टमेऽब्दे वानुकूल्ये षोडशसंवत्सराभ्यंतरे ब्रह्मवर्चसकामस्य पंचमेऽप्युदगयन आपूर्यमा-

कोई शुद्ध पुरुष पूर्वाभिमुख बैठ कर बालकके हाथमें कोई मोदकादि (मीठी) वस्तु देकर आगे लिखे ' ॐ भद्रं करणेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ' इस मन्त्रसे दाहिने कानको अभिमन्त्रित करे फिर आगे लिखे मन्त्रसे बायें कानको भी अभिमन्त्रित करे मन्त्र यथा ॐ वक्ष्यन्ती वेदा गनीगंति कर्णं प्रियꣳ सखायं परिषस्वजाना योषेव शिंक्ते विततावि धन्वञ्ज्या इयꣳ समने पारयन्ती ' अनन्तर कर्णवेधके ठीक मध्यस्थानको देखकर नाईके[1] द्वारा वेध करावे अर्थात् कानको छिदावे कर्णवेधके समय बालकके हाथमें मोदकादिका देना समाचार अर्थात् परंपरा है। तत्पश्चात् ब्राह्मणोंको भोजन कराना चाहिये।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीयमिश्रसुखानंदसूरिसूनु-पण्डित-कन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायां कर्णवेधसंस्कारः समाप्तः ॥९॥

अब उपनयनसंस्कार लिखा जाता है। सूर्य,गुरु,चन्द्र, तारादिकी शुद्धिवाले शुभ समयमें जन्म अथवा गर्भसे आठवें वर्ष अथवा सोलह वर्षके भीतर अपने अनुकूल समयमें और ब्रह्मतेजकी इच्छा करनेवाला पुरुष पाँचवें वर्ष उत्तरायण

१ यहां नाई शब्दसे स्वर्णकारको समझना चाहिये।

णपक्षेऽनध्यायषष्ठीरिक्ताद्यतिरिक्ततिथौ रविगुरुशुक्रान्यतमवारे मध्याह्ना-दर्वाक् कुमारपित्राभ्युदयिके कृते तदभावे आचार्येणैव कृते ब्राह्मणान्मा-णवकं च भोजयित्वा सशिखकृतक्षौरं स्नानानंतरं यथाशक्त्यलंकृत्वा बहिः शालायां तुषकेशशर्करादिशून्यपरिष्कृतभूमौ आचार्योऽग्निस्थापनं कु-र्यात्। तत्र हस्तमात्रपरिमितचतुरस्रभूमिकुशकरणकसमूहनानंतरं गोम-योदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेन प्रागग्रप्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणाऽनामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य नवीनकांस्य-पात्रेणाग्निमानीय स्वाभिमुखं निदध्यात् । ततः कुमारमाचार्यः शिष्यद्वा-राग्नेः पश्चाद्दक्षिणपार्श्वेऽवस्थापयति ततः कुमारं बद्धांजलिं संबोधयति ॐ ब्रह्मचर्यमागामि ब्रूहि इति प्रेषानंतरं ॐ ब्रह्मचर्यमागामिति कुमार

और शुक्लपक्षयुक्त कालमें, अनध्याय षष्ठी रिक्ताके सिवाय अन्यान्य तिथिमें, रवि, गुरु, शुक्र इन वारोंके बीच किसी वारमें मध्याह्नसे पहले यज्ञोपवीत करना चाहिये । पिता अथवा पिताके न होनेपर आचार्य नान्दीमुख श्राद्ध करके ब्राह्मण[1] और बालकको भोजन करावे । फिर शिखा धरवाय क्षौर करवाय स्नान करावे और उस बालकको अपनी सामर्थ्यके अनुसार अलंकृत कर बाहर तुष-केश धूरि इत्यादि रहित संस्कृत तथा शुद्ध भूमि पर रची हुई शालामें आचार्य अग्नि स्थापन करे । तहाँ एक हाथ परिमित चौकोन वेदी बनाकर कुशोंसे शुद्ध करनेके अनन्तर गोबरसे उसको लीपना चाहिये । फिर स्रुवेकी जडसे पूर्वको अग्रभागवाली प्रादेशप्रमाण उत्तरोत्तर क्रमसे तीन रेखा खैंचकर रेखाओंके क्रमानुसार अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंद्वारा रेखाओंमेंसे मिट्टी उठाकर ईशानकोनमें डाल देवे फिर जलसे उस वेदीको सेचन करे पीछे नवीन काँसीके पात्रमें अग्नि मंगाकर अपने सन्मुख अर्थात् पश्चिमाभिमुख स्थापन करे। फिर आचार्य उस कुमार (बालक) को अपने शिष्यके द्वारा अग्निके पश्चिम ओर अपनी दाहिनी तरफ बैठाले तदनन्तर कुमारसे हाथ जुडवाकर कहे कि 'ॐ ब्रह्मचर्यमागाम् ' ऐसा उच्चारण कर इस प्रकार आज्ञा देवे । ऐसी आज्ञा

१ अन्यान्य पद्धतियोंमें तीन ब्राह्मणोंको भोजन कराना लिखा है ।

आह । ततः ॐ ब्रह्मचार्यसानीति ब्रूहीत्याचार्येणोक्ते ॐ ब्रह्मचार्यसानीति कुमार आह । अथ माणवकमाचार्यो वासः परिधापयति तत्र आचार्यपठनीयो मंत्रः । ॐ येनेंद्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतं तेन त्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे । ततो माणवकस्य द्विराचमनम् । अथ माणवकस्य वेष्टनत्रयेण तत्प्रवरग्रंथितां मेखलामाचार्यो बध्नाति तत्र माणवकपठनीयो मंत्रः । इय दुरुक्तं परिबाधमाना वर्णं पवित्रं पुनती म आगात् । प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम् । ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान्भवति जायमानः । तं धीरासः कवय उन्नयंति स्वाध्यो मनसा देवयंत इति वा । तत आचाराद्यज्ञोपवीतसहितभांडाष्टतयं ब्राह्मणेभ्यो दत्त्वा तत्सद्यामुकगोत्रः स्वकीयोपनयनकर्मविषयकसत्संस्कारप्राप्त्यर्थं इदं भांडाष्टतयं सयज्ञोपवीतं सदक्षिणं यथानामेति । ततो यज्ञोपवीतं परिदधाति माण-

---

देनेपर कुमार कहे कि 'ॐ ब्रह्मचर्यमागाम्' फिर आचार्य 'ॐ ब्रह्मचर्यसानि' ऐसा उच्चारण कर आचार्यके आज्ञा देने उपरान्त 'ॐ ब्रह्मचर्यसानि' ऐसा कुमार कहे। तत्पश्चात् कुमारको आचार्य आगे लिखे 'ॐ येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यधादमृतं तेन त्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे' इस मन्त्रसे वस्त्र (कौपीन) पहरावे । फिर कुमारको दो आचमन करावे । इसके अनन्तर तीन लड (लपेट) वाली और प्रवरके अनुसार ग्रन्थिवाली मूँजकी मेखला आचार्य कुमारके बांध देवे । तब कुमार आगे लिखे मन्त्रोंको उच्चारण करे । 'ॐ यं दुरुक्तं परिबाधमाना वर्णं पवित्रं पुनती न आगात् । प्राणापानाभ्यां बलमादधानां स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम् । ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान् भवति जायमानः । तं धीरासः कवय उन्नयंति स्वाध्यो मनसा देवयंतः ।' अनन्तर परम्परानुसार यज्ञोपवीतयुक्त तथा दक्षिणासहित चौबीस पात्र कुमारसे आगे लिखे संकल्प द्वारा ब्राह्मणोंको प्रदान करावे । संकल्पः । अद्यामुकगोत्रः स्वकीयोपनयनकर्मविषयकसत्संस्कारप्राप्त्यर्थं

वकः । ॐ यज्ञोपवीतमिति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिर्लिंगोक्ता देवता छंदो यज्ञोपवीतपरिधाने विनियोगः । ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं पतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः । इति मंत्रेण । तत ऐणेयमजिनं तूष्णीं परिधत्ते । ततो माणवककेशपरिमितपालाशदंडमाचार्यस्तूष्णीं तस्मै प्रयच्छति । तं च यो मे दंड इति प्रजापतिर्ऋषिर्दंडो देवता यजुर्दंडग्रहणे विनियोगः । ॐ यो मे दंडः परापतद्वैहायसोऽधिभूम्याम् । तमहं पुनरादद आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय । इति मंत्रेण माणवको गृह्णाति । तत आचार्यो वारिणा स्वमंजलिं पूरयित्वा कुमारस्यांजलिं तेनैवांजलिजलेन पूरयति । ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे । ॐ यो वः

इदं भाण्डादनयं सयज्ञोपवीतं सदक्षिणं यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः यथांशेन विभज्य दास्ये ॐ तत्सत् । तदनन्तर आचार्य कुमारको यज्ञोपवीत धारण करावे और कुमार आगे लिखे ' ॐ यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठिर्ऋषिलिंङ्गोक्ता देवता त्रिष्टुप् छन्दो यज्ञोपवीतपरिधाने विनियोगः ' इस मन्त्रसे यज्ञोपवीतधारणका विनियोग छोडे फिर आगे लिखे ' ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः । ' इस मन्त्रसे यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये । अनन्तर आचार्य कुमारको चुपचाप मृगचर्म प्रदान करे और कुमार उसको धारण कर लेवे । फिर कुमारके केशतक प्रमाणवाले पालाश (ढाक) के दंडको आचार्य चुपचाप कुमारके निमित्त देवे । उसको लेकर कुमार आगे लिखे ' यो मे दण्ड इति प्रजापतिर्ऋषिर्दंडो देवता यजुर्दंडग्रहणे विनियोगः । ' इस मन्त्रसे विनियोग छोडे । पश्चात् आगे लिखे ' ॐ यो मे दंडः परापतद्वैहायसोऽधिभूम्यां तमहं पुनरादद आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय ' इस मंत्रसे दण्डको ग्रहण करे । फिर आचार्य प्रथम अपनी अंजली जलसे भरकर पुनः उसी जलसे आगे लिखे मन्त्र द्वारा कुमारकी अंजली भर देवे । ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे

शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः । ॐ तस्माऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ।इति ऋग्भिः । ततः सूर्यमुदीक्षस्वेति आचार्यप्रेषानंतरं ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत॰ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् इत्यनेनादित्यं पश्यति । अथ कुमारस्य दक्षिणांसं सहृदयं दक्षिणहस्तेन स्पृशत्याचार्यः । ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु । मम वाचमेकमनाजुपस्व बृहस्पतिस्त्वा नियुनक्तु मह्यं इति मंत्रेण । ततः कुमारस्य दक्षिणहस्तं गृहीत्वा तं पृच्छति को नामासि श्रीअमुकशर्माहं भोः इति कुमार आह । कस्य ब्रह्मचार्यसीत्याचार्यः भवत इति कुमार आह । पुनराचार्यो भाषते ॐ इंद्रस्य ब्रह्मचार्यस्य-

---

रणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। ॐ तस्मा ऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः । फिर नीचे लिखे मन्त्रसे आचार्य कुमारको सूर्यका दर्शन करनेकी आज्ञा देवे। ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरद शत॰ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् । कुमार यह अञ्जली इन मन्त्रोंके सहित सूर्यके सन्मुख छोड देवे। तदनन्तर कुमारके दाहिने कन्धेकी तरफ अपना दाहिना हाथ डालकर आचार्य कुमारके हृदयको स्पर्श करे और फिर आगे लिखे ' ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमनाजुपस्व बृहस्पतिस्त्वा नियुनक्तु मह्यम् । ' इस मन्त्रको उच्चारण करे। फिर कुमारके दाहिने हाथको पकडकर आचार्य पूछे ' को नामासि ' तब ' श्रीअमुकशर्माहं भोः ' ऐसा कुमार कहे। ' कस्य ब्रह्मचार्यसि ' ऐसा आचार्य कहे, तब ' भवतः ' ऐसा कुमार कहे। फिर पुनर्वार आचार्य कहे ' ॐ इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्यग्निराचार्यस्तवाह-

ग्निराचार्यस्तवाहमाचार्यः श्रीअमुकशर्मन्। अथ माणवकं पूर्वादिदिक्षु प्रदक्षिणमुपस्थानं कारयति। अथाचार्यो माणवकं परिददाति तत्र आचार्यस्य मंत्रपाठः। ॐ प्रजापतये त्वा प्राच्यां ॐ देवाय त्वा सवित्रे परिददामि इति दक्षिणस्यां ॐ स्त्वोषधीभ्य परिददामि इति प्रतीच्यां ॐ द्यावापृथिवीभ्यां त्वा ददामि इति उदीच्यां ॐ विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः परिददामि ॐ सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददाम्यरिष्ट्यै इत्यूर्ध्वम्। ततोऽग्निं णीकृत्य आचार्यः दक्षिणदिशि उपविशति माणवकः। ततः पुष्पचंदन-तांबूलवासांस्यादाय ततः ॐ अद्यकर्तव्योपनयनहोमकर्मणि कृताकृता-

---

मांचार्यः श्रीअमुकशर्मन्' इसके उपरान्त कुमारके हाथ जुड़वाकर पूर्वादि दिशाओंमें प्रदक्षिणपूर्वक सूर्यके सन्मुख खड़ा करावे। फिर आचार्य कुमारको भूतोंके अर्थ सौंपे और वह आचार्य यह मन्त्र पाठ करे ॐ प्रजापतये त्वा परिददामीति प्राच्याम्। ॐ देवाय त्वा सवित्रे परिददामि इति दक्षिणस्याम्। ॐ अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यः परिददामि इति प्रतीच्याम्। ॐ द्यावापृथिवीभ्यां त्वा परिददामि इति उदीच्याम्। ॐ विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः परिददामि इत्यधः। ॐ सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददाम्यरिष्ट्यै इत्यूर्द्ध्वम्। तदनन्तर अग्निकी प्रदक्षिणा करके आचार्यके दक्षिणकी ओर कुमारको बैठना चाहिये फिर पुष्प, चन्दन, ताम्बूल तथा वस्त्रादि वरणकी सामग्री हाथमें लेकर आगे लिखे 'ॐ अद्य कर्त्तव्योपनयनहोमकर्मणि कृता-

---

१ इसका तात्पर्य यह है कि आचार्य 'प्रजापतये०' इत्यादि मंत्रसे हाथ जोड़े हुए बालकको पूर्वादि दिशामें उपस्थान करावे। मंत्रोंको आचार्य स्वयं पढ़े। (प्रजापतये त्वा) मंत्रको पढ़ता हुआ पूर्वाभिमुख बालकको उपस्थान करावे। (देवायत्वा) से दक्षिणाभिमुख (अद्भ्यस्त्वा) से पश्चिमाभिमुख (द्यावापृथिव्या) से उत्तराभिमुख (विश्वेभ्यस्त्वा) से नीचेकी दिशाको देखता हुआ (ॐ सर्वेभ्यस्त्वा) से ऊपरकी दिशामें उपस्थान करावे।

वेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंदनतांबूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे इति, ब्रह्माणं वृणुयात्। ॐ वृतोऽस्मीति वचनम्। पुष्पचंदनतांबूलवस्त्राण्यादाय अद्य कर्तव्योपनयनकर्मणि होतृत्वकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंदनतांबूलवासोभिर्होतृत्वेन त्वामहं वृणे इति होतारं वृणुयात् ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ॐ यथाविहितं कर्म कुर्वित्याचार्येणोक्ते ॐ करवाणीति ब्राह्मणो वदेत्। ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य ब्राह्मणमग्निप्रदक्षिणं कारयित्वास्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय भवानीति तेनोक्ते तदुपरि ब्राह्मणमुदङ्मुखमुपवेश्य ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् ततः परिस्तरणम्। बर्हिषश्चतुर्थभा-

---

कृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे०' इस संकल्पसे ब्रह्माका वरण करना चाहिये। तब 'ॐ वृतोऽस्मीति' ब्रह्मा कहे। फिर पुष्प, चन्दन, तांबूल, वस्त्रादि सामग्री आगे लिखे हुए 'अद्य कर्तव्योपनयनकर्मणि होतृत्वकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्होतृत्वेन त्वामहं वृणे' इस वाक्यसे ब्रह्माको प्रदान करे। तब ब्रह्मा उस सामग्रीको 'स्वस्ति' ऐसा कहकर ग्रहण करे। अनन्तर 'ॐ यथाविहितं कर्म कुरु' ऐसा यजमानके कहनेपर 'ॐ करवाणि' ऐसा ब्रह्मा कहे। फिर अग्निके दक्षिणकी ओर शुद्ध आसन स्थापन पूर्वक उसको ऊपर पूर्वको अग्रभाग करके कुशा बिछावे और फिर ब्रह्मासे अग्निकी प्रदक्षिणा कराकर इस यज्ञोपवीतकर्ममें आप मेरे ब्रह्मा हुए ऐसा कहे। तब वह ब्राह्मण 'मैं ब्रह्मा होता हूं' ऐसा कहे फिर ब्रह्माको उत्तराभिमुखसे उस आसन पर बैठाल देना चाहिये। फिर प्रणीतापात्रको आगे रखकर जलसे भरदेवे और उसको कुशाओंसे ढक देवे अनन्तर ब्रह्माका मुख देखकर अग्निके उत्तरकी ओर प्रणीतापात्रको

गमादायाग्नेयादीशानांतं ब्रह्मणोऽग्निपर्यंतं नैर्ऋत्याद्वायव्यांतं प्रणीतापर्यंतं ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमादिशि पवित्रच्छेदनार्थं पवित्रार्थं साग्रमनंतर्गर्भं कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं ... जनार्थं कुशाः उपयमनकुशाः समिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं चाशतुत्तराचार्यमुष्टिशतद्वयावाच्छिन्नामतंडुलपूर्णपात्रं शानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम् । ततः पवित्रे छित्त्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे । अनामिकांगुष्ठाभ्यां गृहीतपवित्राभ्यां तज्जलं किंचित्त्रिरुत्क्षिप्य तोदकेन प्रोक्षणीं त्रिरभिषिच्य प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तुसेचनं

रख देना चाहिये। फिर परिस्तरण करे मुट्ठीभर अथवा सौ कुश ग्रहण करके उसके चार भाग करे। उनमें पहला भाग अग्निकोनसे ईशान दिशातक, दूसरा भाग ब्रह्माके आसनसे अग्नितक, तीसरा भाग नैर्ऋत्यकोनसे वायुकोनतक और चौथा भाग अग्निसे प्रणीतापात्र तक बिछा देना चाहिये। फिर अग्निसे उत्तरको ओर पश्चिमको पवित्र छेदनके अर्थ तीन कुशा स्थापन करे। पवित्र बनानेके निमित्त अग्रभागसहित तथा बीचके पत्तेसे रहित अर्थात् जिसके भीतर अन्य कुश न हों ऐसे दो कुशपत्र रक्खे। फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, पांच संमार्जन कुशा, तीनसे तेरहतक अर्थात् तीन अथवा तेरह उपयमनकुशा, प्रादेशमात्र (बिलस्तभर) ढाककी तीन समिधा, स्रुवा, घृत और दो सौ छप्पन मुट्ठी चावलोंसे भरा हुआ पूर्णपात्र, इन सब वस्तुओंको पवित्र छेदनकी कुशाओंसे आगे आगे रखता जाय फिर पवित्र छेदनकी कुशाओंसे पवित्र छेदन करे। अनन्तर पवित्रोंको हाथमें लेकर प्रणीताके जलको प्रोक्षणीपात्रमें तीन बार सेचन करे। फिर दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंको ग्रहण करके उसके जलको तीन बार ऊपरकी ओर फेंके फिर प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीको तीन बार सेचन करे। अनन्तर पवित्रोंको लेकर प्रोक्षणीके जलसे पूर्व स्थापित सब वस्तुओंको सेचन करके उस प्रोक्षणीपात्रको अग्नि और प्रणीतापात्रके बीचमें

ग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात्। आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः अधिश्रयणं ततः कुशं प्रज्वाल्याज्योपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षिप्य स्रुवं त्रिः परितप्य संमार्जनकुशानामग्रैरंतरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रताप्य दक्षिणतो निदध्यात्। तत आज्यमग्नेरवतार्य त्रिः प्रोक्षणीवदुत्पूयावेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं कृत्वा पुनः प्रोक्षण्युत्पवनं तत उत्थायोपयमनकुशान्वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूर्ष्णीं घृताक्तास्तिस्रः समिधः प्रक्षिपेत्। उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निं पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय पातितदक्षिणजानुर्ब्रह्मणान्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहोति तत्र तत्तदाहुत्यनंतरं स्रुवावस्थितघृतशेषस्य प्रोक्ष-

---

रख देना चाहिये। तब आज्यस्थालीमें घृत डालकर उसको अग्निपर चढादेवे। फिर एक कुशा बालकर उसको घृतके चारों तरफ घुमाय वेदीकी अग्निमें डाल देवे। तत्पश्चात् स्रुवेको अग्निमें तीन बार तपाकर संमार्जन कुशाओंके अग्रभागसे स्रुवेके भीतर और मूलभागसे बाहर शुद्ध करे। फिर प्रणीतापात्रके जलसे स्रुवेको सेचन करे और उसको तीन बार तपाकर दक्षिणकी ओर रख देना चाहिये। तदुपरान्त उस घृतको अग्निसे उतारकर प्रोक्षणीकी नाईं तीन बार पवित्रोंसे उछाले और फिर देखे कि उसमें मक्खी इत्यादि कोई अपवित्र वस्तु तो नहीं पडी है यदि पडी हो तो उसको निकालकर फेंक देना चाहिये। फिर प्रोक्षणीके जलको पवित्रोंसे तीन बार उछाले और फिर खडा होकर यजमान उन उपयमन कुशाओंको बायें हाथमें लेकर मनमें प्रजापतिका ध्यान करता हुआ घृतमें भिजोकर तीनों समिधाओंको स्वाहा शब्दके साथ अग्निमें चुपचाप डाल देवे। फिर आसनपर बैठकर पवित्र सहित प्रोक्षणीका जल हाथमें लेकर दक्षिण क्रमसे वेदीके चारों ओर सेचन करे। फिर उन पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रख देना चाहिये। अनन्तर दाहिनी जानु नवाय और ब्रह्मासे मिलकर प्रज्वलित अग्निमें स्रुवेके द्वारा नीचे लिखे मन्त्रोंसे घृतकी आहुति देवे प्रत्येक आहुतिके अनंतर

णीपात्रे प्रक्षेपः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति
ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिंद्राय० । इत्याघारौ । ॐ अग्नये
ग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ । ॐ भूः
इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐस्वः स्वाहा इदं
एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य
यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि
स्मत् स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो
नेदिष्ठो अस्या उपसो व्युष्टौ । अव यक्ष्वनो वरुणᳬ रराणो
मृडीकᳬ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ
स्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं
धेहि भेषजᳬ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः
पाशा वितता महांतः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः
स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः

स्रुवेमें शेष रहे घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डालता जाय मन्त्र यथा । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय० । इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ । ॐ भूः स्वाहा० इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्निमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्याम्० । ॐ सत्वान्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उपसो व्युष्टौ । अव यक्ष्वनो वरुणᳬ रराणो वीहि मृडीकᳬ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्० । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजᳬ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितना महांतः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो

त्वकेभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम० श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । एताः सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । इति प्राजापत्यम् । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० । इति स्विष्टकृद्धोमः । ततः संस्रवप्राशनम् आचमनं च । ततो ब्रह्मणे दक्षिणादानम् । ॐ अद्येतस्मिन्नुपनयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणां दद्यात् । ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततो ब्रह्मग्रंथिविमोकः । ततः ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः संतु इति पवित्राभ्यां जलमानीय तेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः इत्यैश्यान्यां प्रणीतान्युब्जाकरणम् । ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्य घृतेमरुद्भयः स्वकेभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम्० श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । एता सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजा०। इति मनसा। इति प्राजापत्यम्। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम । इति स्विष्टकृद्धोमः। फिर घृतमिश्रित प्रोक्षणीपात्रके जलका आचमन करे और फिर शुद्ध जलसे आचमन करे । अनन्तर दक्षिणासहित पूर्णपात्रको आगे लिखे ' ॐ अद्यैतस्मिन्नुपनयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ' इस मन्त्रसे दान करके ब्रह्माके निमित्त देवे और ब्रह्मा उसको ' ॐ स्वस्ति ' कहकर लेवे। फिर ब्रह्मग्रन्थिको खोल देवे तिसके पश्चात् ' ॐ आप ओषधयः सन्तु ' ऐसा कहकर पवित्रोंसे जल ग्रहण पूर्वक अपने मस्तकपर सेचन करे। फिर ' ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ' यह मन्त्र उच्चारण करके ईशानकोनमें प्रणीताको उलटा कर

नाभिघार्य हस्तेनैव जुहुयात्। ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा मनसस्पत इमं देव यज्ञ॑ स्वाहा वाते धाः स्वाहा। इति आचार्यः कुमारस्यानुशासनं करोति। ॐ ब्रह्मचार्यसीत्याचार्यः असानीति ब्रह्मचारी। ॐ अपदोशान इत्याचार्यः ॐ अशानीति आह। ॐ कर्म कुर्वित्याचार्यः ॐ करवाणीति माणवकः। ॐ दिवा सुषुप्स्व इत्याचार्यः न स्वपानीति कुमारः। ॐ वाचं इत्याचार्यः ॐ अच्छानीति कुमारः। ॐ समिधमाधेहीत्याचार्यः आदधानीति माणवकः। ॐ अपोशानेत्याचार्यः ॐ अशानीति कुमारः अथाग्नेरुत्तरतः ... न्नायाचार्यं समीक्ष्यमाणायाचार्यः। स्वयमपि समीक्षितायास्मै

देना चाहिये। तदनन्तर परिस्तरणके क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रमसे कुश बिछाये थे उसी क्रमसे उनको उठाकर घृतमें बोर हाथसेही आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञ॑ स्वाहा वाते धाः स्वाहा' इस मन्त्र द्वारा अग्निमें डाल देवे। फिर आचार्य आगे लिखे वाक्योंसे कुमारको शिक्षा करे। अर्थात् 'ॐ ब्रह्मचार्यसि' ऐसा आचार्य कहे। 'ॐ अशानि' ऐसा ब्रह्मचारी कहे। 'ॐ अपोशान' ऐसा आचार्य कहे। 'ॐ अशानि' ऐसा ब्रह्मचारी कहे। 'ॐ कर्म कुरु' ऐसा आचार्य कहे। 'ॐ करवाणि' ऐसा कुमार कहे। 'ॐ मा दिवा सुषुप्स्व' ऐसा आचार्य कहे। 'न स्वपानि' ऐसा कुमार कहे। 'ॐ वाचं यच्छ' ऐसा आचार्य कहे। 'ॐ यच्छानि' ऐसा कुमार कहे। 'ॐ समिधमाधेहि' ऐसा आचार्य कहे। 'ॐ आदधानि' ऐसा कुमार कहे। 'ॐ अपोशान' ऐसा आचार्य कहे। 'ॐ अशानि' ऐसा कुमार कहे। इसके उपरान्त अग्निके उत्तरकी ओर पश्चिमको मुख किये आचार्यके चरणोंको पकडकर और उनके मुखको देखता हुआ और आचार्यभी कुमारके मुखको देखता हुआ अपने समीप बैठे हुए कुमारके निमित्त स्वयं बाजोंको बन्द कर लग्नके उपस्थित

तदंशस्तुर्यादि शब्दइष्टांशेक सावित्रीमन्वाह तत्र प्रथमावृत्तौ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ पुनर्वारद्वयं अत्र तु सहपाठो विशेषः । अथ माणवक आचार्यदक्षिणादिशि अग्निपश्चिमोपविष्टो घृताक्तशुष्कानिषिद्धेतरेंधनेन जुहुयात् । ततः ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मां कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवा असि । ॐ एवं मा सुश्रवः सौश्रवसं कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् । ततः प्रदक्षिणमग्निं वारिणा पर्युक्ष्य उत्थाय स्वप्रादेशमितां घृताक्तपलाशसमिधमादाय ॐ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्च-

होनेपर गायत्रीका उपदेश करे अर्थात् आचार्य आगे लिखे ' ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ' इस मन्त्रको कुमारके दाहिने कानमें तीन वार उपदेश करे । फिर कुमार आचार्यके दक्षिणकी ओर पश्चिममें बैठा हुआ घृतसे भिगोकर सूखे और शुद्ध ईंधनसे आगे लिखे ' ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रव सं मां कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि स्वाहा । ॐ एवं मा सुश्रवः सौश्रवसं कुरु स्वाहा । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि स्वाहा । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासं स्वाहा ' इन मन्त्रोंसे होम करे । फिर जल हाथमें लेकर अग्निके चारों ओर सेचन करे । फिर उठकर प्रादेशप्रमाण समिधाको ग्रहणपूर्वक घृतमें भिगोकर आगे लिखे ' ॐ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस

१ यहां तीन वार कहनेका तात्पर्य यह है कि मंत्रके तीन भाग करके उपदेश करे किन्तु इस पद्धतिकारके मतानुसार मंत्रका एक साथही उपदेश करे यह विशेष है ।

२ यहां यह प्रतीत होता है कि आगे लिखे हुए पांच मंत्र तो वेदोंसे इधर उधर गिरी हुई जो समिधा तथा अग्नि इत्यादि है उसको पुनर्वार अग्निमें एकत्रित करके आहुति देनेके है और शेष समिधाधानके अर्थात् समिधाको घृतमें भिगोकर आहुति देनेके

सेन समिंधे जीवपुत्रो ममाचर्यो
तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्व्यन्नादो भूया० स्वाहा इति मंत्रेण जुहुयात् ।
समिदंतरद्वयं जुहुयात् । ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मां कुरु । ॐ
त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि। ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु।
त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि । ॐ एवमहं मनुष्याणां
निधिपो भूयासम् । ततः प्रदक्षिणमग्निं पर्युक्ष्य तूष्णीं पाणी प्रताप्य
प्रतिमंत्रांतेऽवमृशति । ॐ तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि । ॐ आ-
युर्दा अग्नेस्यायुर्मे देहि । ॐ वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मे देहि । ॐ अग्ने
यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण । ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु ।
ॐ मेधामश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ । ततः सर्वगात्रादिषु दक्षिण-

---

एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी ब्रह्मवर्चस्व्यन्नादो भूयास० स्वाहा ' इन मन्त्रोंसे आहुति देवे । तत्पश्चात् इसी प्रकार और इसी मन्त्रसे पृथक् पृथक् दो समिधाओंकी आहुति देवे । फिर उन्हीं पाँच मन्त्रोंसे अग्निको एकत्रित करे (अथवा होम करे) । ' ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मां कुरु स्वाहा। ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवःसुश्रवा असि स्वाहा । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु स्वाहा । ॐ यथात्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि स्वाहा । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासं स्वाहा । ' तदनन्तर हाथमें जल लेकर अग्निके चारों ओर सेचन करे । तदनन्तर चुपचाप दोनों हाथोंको अग्निमें तपाकर आगे लिखे हुए प्रत्येक मंत्रके साथ अपने मुखको स्पर्श करे । ' ॐ तनूपा अग्नेसि तन्वं मे पाहि । ॐ आयुर्दा मे अग्नेस्यायुर्मे देहि । ॐ वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मे देहि । ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण । ॐ मेधां देवः सविता आदधातु । ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु । ॐ मेधां मेऽश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ' फिर दाहिने हाथको तपाकर सब शरीरको स्पर्श करे । उन सब

प्राणिना स्पर्शः अत्र प्रत्येकं मंत्रः। ॐ अंगानि च म आप्यायतां इति सर्वांगा-ग्रालंभने। ॐ वाक्च म आप्यायतामिति मुखालंभने। ॐ प्राणश्च म आ-प्यायतामिति नासिकयोः। ॐ चक्षुश्च म आप्यायतामिति चक्षुषोः। ॐ श्रोत्रं च म आप्यायतामिति श्रोत्रयोः। ॐ यशो बलं च म आप्यायतामिति मंत्रपाठमात्रम्। ततो दक्षिणकरानामिकाग्रगृहीतभस्मना ललाटे ग्रीवायां दक्षिणबाहुमूले हृदि च त्र्यायुषं कुर्यात्। तत्र यथासंख्येन मंत्रचतुष्टयम्। ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने इति ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् इति दक्षिणबाहुमूले। ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् इति हृदि। ततो व्यस्तपाणिभ्यां पृथिवीं स्पृशन्नभिवादनं कुर्यात्। तत्र प्रकारः ॐ अमुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽहममुकशर्माहं भो वैश्वानर त्वाम-

अंगोंके स्पर्श करनेका मन्त्र आगे लिखा है ' ॐ अंगानि च म आप्यायताम्। यह मन्त्र उच्चारण करके सब शरीरको स्पर्श करे। ॐ वाक् च म आप्याय-ताम्। यह मन्त्र उच्चारण करके मुखको स्पर्श करे। ॐ प्राणश्च म आप्याय-ताम्। यह मन्त्र उच्चारण करके नासिकाको स्पर्श करे। ॐ चक्षुश्च म आप्या-यताम्। यह मन्त्र उच्चारण करके नेत्रोंका स्पर्श करे। ॐ श्रोत्रञ्च म आप्या-यताम्। ऐसा उच्चारण करके कानोंको स्पर्श करे। ॐ यशो बलञ्च म आप्या-यताम्। इस मन्त्रका केवल उच्चारणही कर लेना चाहिये। तदनन्तर दाहिने हाथकी अनामिका अंगुली द्वारा स्रुवेमें लगाई हुई होमीय भस्मको मस्तकमें दक्षिण बाहुमूल और हृदयमें त्र्यायुष करे। उन चारों मन्त्रोंको क्रमानुसार लिखते हैं। अर्थात् ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः ऐसा कहकर ललाटमें, ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं ऐसा उच्चारण करके गलेमें, ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं यह पढकर दक्षिण-बाहुमूलमें और ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं ' ऐसा बोलकर हृदयमें उस स्रुवेकी भस्मको लगाना चाहिये। फिर बायें हाथके ऊपर दाहिने हाथको रखकर पृथ्वीको स्पर्श करता हुआ आगे लिखे वाक्यका उच्चारणपूर्वक अग्निके निमित्त प्रणाम करे। ' ॐ अमुकगोत्रममुकप्रवरोऽहममुकशर्माहं भो वैश्वानर त्वामभि-

भिवादये । ततोऽनेनैव क्रमेण संबोध्य वरुणमभिवाद्याचार्यं वादयेत् । ततः आयुष्मान् भव सौम्येत्याचार्यो ब्रूयात् । ततो पात्रमादाय प्रथमं मातुः सकाशात् ॐ भवति भिक्षां मे प्रार्थनानंतरं तद्दत्तां चादायाचार्याय निवेदयेत् तथैव भिक्षांतरं याचेत तत आचार्येण भुंक्ष्वेत्यनुज्ञातो भिक्षां स्वीकुर्यात् ।ततः घृतपूर्णस्रुवेण ब्रह्मचारिदक्षिणकरस्पृष्टेनाचार्यः पूर्णाहुतिं दद्यात् ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । संम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा इदमग्नये० । ततः स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवे-

वादये ' फिर इसी क्रमानुसार ' अमुकगोत्रोऽहमसुकप्रवरोऽहममुकशर्माहं भो वरुण त्वामभिवादये ' फिर ' अमुकगोत्रोऽहमसुकप्रवरोहमसुकशर्माहं भो गुरो त्वामभिवादये ' तिस पीछे ' आयुष्मान् भव सौम्य ' ऐसा कहकर आचार्य कुमारको आशीर्वाद देवे । अनन्तर भिक्षापात्र हाथमें लेकर ब्रह्मचारी । प्रथम अपनी मातासे भिक्षा मांगनेको जावे और ' ॐ, भवति भिक्षां देहि ' ऐसा कहकर भिक्षा मांगे फिर मांगनेके पीछे ' मिली हुई भिक्षाको गुरु (आचार्य) के अर्थ, निवेदन करे । फिर इसी प्रकार और भिक्षा माँगनी चाहिये तब पीछे आचार्यके ' भुंक्ष्व ' 'ऐसी आज्ञा देने पर कुमार भिक्षाको ग्रहण करे । तदुपरांत फल, पुष्प, चन्दन और घृत इन सब वस्तुओंसे स्रुवेको परिपूर्ण कर उसमें ब्रह्मचारीके दाहिने हाथका स्पर्श कराय आचार्य आगे लिखे 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविः सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा इदं मग्नये० ' इस मन्त्रसे पूर्णाहुति देवे । फिर स्रुवेसे वेदीकी भस्म ग्रहण-पूर्वक उसको दाहिने हाथकी अनामिका द्वारा लेकर त्र्यायुष करे अर्थात् ' ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः ' यह कहकर माथेमें ' ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं '

षु त्र्यायुषम् इति दक्षिणबाहुमूले। ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं इति हृदि इति त्र्यायुषं कुर्यात्। कुमारपक्षे तन्नो इत्यस्य स्थाने तत्ते इति विशेषः। अथ क्षारलवणमधुमांसादिनिवृत्तिः उद्धृतजलस्नानदंडकृष्णाजिनधारण-वृक्षारोहणविषमभूमिलंघननग्नस्त्रीनिरीक्षणस्त्रीसंभोगव्यसनव्यावृत्तिरूपा ब्रह्मचारिणो नियमाः। तद्दिने ब्रह्मचारी वाग्यतोऽहःशेषं स्थित एव गमयेत्। ततः सायंसंध्यां कृत्वा तस्मिन्नेवाग्नौ पूर्ववत्पर्युक्षणपरिसमूहने कृत्वा वाचं विसृजेत्। परिसमूहनांते शुष्कानिषिद्धेतरेंधनस्याग्नौ प्रक्षेपः। ततः संध्यामुपास्य प्रतिदिनं सायंप्रातरपि ब्रह्मचारिणाकर्तव्या॥ इत्युपनयनसंस्कारः॥

यह उच्चारण कर गलेमें, 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं' बोलकर दक्षिणबाहुमूलमें और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' ऐसा उच्चारण करके हृदयमें उस भस्मको लगाना चाहिये। किन्तु जब कुमारके त्र्यायुष करे अर्थात् स्रुवेकी भस्म लगावे तो 'तन्नो अस्तु' के स्थानमें 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करना चाहिये। फिर आगे लिखे वाक्योंसे ब्रह्मचारीको उपदेश करे। अर्थात् खारी वस्तु लवण, मधु (मद्य), मांस इनकी निवृत्ति करे अर्थात् इनको भोजन नहीं करना चाहिये। नग्न होकर (बिलकुल नग्न होकर) जलमें स्नान नहीं करे, दंड और कृष्णाजिन (काले मृगका चर्म) धारण करे, वृक्षपर चढना, ऊँची नीची भूमिको कूदना, नंगी स्त्रीको देखना, स्त्रीके संग मैथुन करना, व्यसन अर्थात् जुए (चौसर, तास इत्यादि) में आसक्त होना इत्यादि कुष्कर्मोंको त्याग देनाही ब्रह्मचारीके नियम कहे गये हैं। उस यज्ञोपवीतके दिन ब्रह्मचारी मिथ्या भाषणादि त्यागपूर्वक चुपचाप यज्ञोपवीतकर्मसे बचे हुए दिनको बितावे। फिर सायंकालकी संध्या कर उसी वेदिकाकी अग्निमें पूर्ववत् जलद्वारा चारों ओर वेदीका सेचन करे। फिर पूर्वोक्त पाँच मन्त्रोंके द्वारा अग्निको एकत्रित करके वाणीको उच्चारण करे अर्थात् यह उपरोक्त कार्य करके तब फिर बातचीत कर सकता है। तिसके उपरान्त अग्निके एकत्रित करनेपर शुद्ध अथच सूखी समिधा

अथ वेदारंभः ।

तत्र कृतनित्यक्रिय आचार्यः कुशैर्हस्तमात्रपरिमितां भूमिं शुद्ध तान्कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेनोत्तरतः प्रागग्रप्रादेशमात्रं त्रिरुल्लिख्य मृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य कांस्येनाग्निमानीयाभिमुखमुपसमाधाय चंदनतांबूलवस्त्राण्यादाय ॐ अद्यकर्त्तव्यवेदारंभहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्त्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमोभिः पुष्पचंदनतांबूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे इति ब्राह्मणं वृणुयात् । ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनं ॐ यथाविहितं कर्म कुर्वित्याचार्यः ॐ करवाणीति तेनोक्ते

ग्रहणपूर्वक घृतमें भिजोकर पूर्ववत् अग्निमें होम करे । इसी नियमसे ब्रह्मचारीको प्रतिदिन करना चाहिये ।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीयमिश्रसुखानन्दसूरिसूनु-पण्डित-कन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायामुपनयनसंस्कारः समाप्तः ।

अब वेदारंभसंस्कार लिखा जाता है । तहां नित्य कृत्यको समाप्त करके आचार्य एक हाथकी बराबर शुद्ध भूमिमें वेदी बनाकर उसको तीन कुशाओंसे शुद्ध कर उन कुशाओंको ईशानकोनमें डाल देवे । फिर गोबरसे उस वेदीको लीपकर स्रुवेके मूलसे उत्तर उत्तरको पूर्वकी ओर अग्रभागवाली प्रादेशप्रमाण तीन रेखा खेंचे और रेखा खेंचनेके क्रमानुसार अनामिका और अंगुष्ठ द्वारा उन रेखाओंमेंसे मिट्टी उठाकर ईशान कोनेमें फेंक देवे । फिर जलद्वारा वेदीको सेचन कर कांसीके पात्रमें अग्नि लाय अपने समीप स्थापन करे । अनन्तर पुष्प, चन्दन, ताम्बूल, वस्त्र लेकर आगे लिखे हुए संकल्पसे ब्रह्माका वरण करे । ' ॐ अद्य कर्त्तव्यवेदारम्भहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ' तब ब्रह्मा ' ॐ वृतोऽस्मि ' कहकर उस दक्षिणाको ले लेवे । फिर ' ॐ यथाविहितं कर्म कुरु ' ऐसा आचार्य कहे । तब ' ॐ करवाणि '

अग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान्कुशानास्तीर्य ब्रह्माणमग्निप्रदक्षिणक्रमेण भ्रामयित्वा अस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय ॐ भवानीति तेनोक्ते ब्रह्माणमुदङ्मुखं तत्रोपवेश्य प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्। ततः परिस्तरणं बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय आग्नेय्यादीशानांतं ब्रह्मणोऽग्निपर्यंतं नैर्ऋत्याद्वायव्यांतम् अग्नितः प्रणीतापर्यंतम्। ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनंतगर्भं कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रमाज्यस्थाली संमार्जनकुशाः उपयमनकुशाः समिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं पूर्णपात्रं पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम्। ततः पवित्रच्छेदनकुशैः

ऐसा ब्रह्माके कहनेपर अग्निके दक्षिणकी ओर शुद्ध आसन बिछावे और उस आसनपर पूर्वाग्र कुशाओंको बिछाय ब्रह्माको अग्निकी प्रदक्षिणा कराय 'अस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव' ऐसा कहे तब ब्रह्माके 'ॐ भवानि' ऐसा कहनेपर उसको उत्तर मुख करके उस आसनपर बैठाल देवे। फिर प्रणीतापात्रको आगे रक्खे और उसको जलसे भरकर कुशाओंद्वारा आच्छादन कर देवे। पश्चात् ब्रह्माके मुखको देखकर अग्निके उत्तरकी ओर कुशाओंके ऊपर रख देवे। तदनन्तर परिस्तरण करना चाहिये। मुट्ठीभर अथवा सौ कुशाओंको लेकर उसके चार भाग करे। पहला भाग अग्निकोनसे लेकर ईशान कोनतक, दूसरा भाग ब्रह्मासे अग्नि (वेदी) तक, तीसरा भाग नैर्ऋतसे वायुकोनतक और चौथा भाग अग्निसे प्रणीतापात्रतक बिछा देना चाहिये। फिर अग्निके उत्तरसे पश्चिम दिशामें पवित्र छेदनके लिये तीन कुशा रक्खे और पवित्र बनानेके लिये अग्रभागसहित तथा बिचले पत्तेसे रहित दो कुशपत्र रक्खे। अनन्तर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, पांच संमार्जन कुशा, तीनसे तेरहतक उपयमन कुशा, तीन समिधा, स्रुवा, घृत, पूर्णपात्र इन सब वस्तुओंको पवित्र च्छेदन कुशाओंसे क्रमशः पूर्वपूर्वकी ओर रखता

पवित्रे छित्त्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे
मनामिकांगुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनं ततः
वामहस्ते गृहीत्वा दक्षिणहस्तानामिकांगुष्ठाभ्यां त्रिरूर्ध्वंगनम् ।
प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीपात्रमभ्युक्ष्य प्रोक्षणीजलेन .
पिच्याऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात् ।
माज्यं निरूप्याधिश्रयणम् । ततः कुशं प्रज्वाल्याज्यस्याग्नेश्चोपरि
क्षिणं भ्रामयित्वा अग्नौ तत्प्रक्षेपः ततस्त्रिः स्रुवप्रतपनं संमार्जनकुशानाम
ग्रैरंतरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रतप्य
दक्षिणतो निदध्यात् । ततः आज्यमग्निप्रदक्षिणं भ्रामयित्वाऽवतार्याग्रे
निदध्यात् । ततः आज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनं अवेक्ष्य सत्य-

जाय । फिर पवित्र च्छेदन के कुशाओंसे पवित्रोंको छेदन करे । पीछे पवित्र हाथमें लेकर प्रणीताके जलको प्रोक्षणीपात्रमें डाले । पश्चात् अनामिका तथा अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंको ग्रहण कर तीन बार प्रोक्षणीपात्रका जल ऊपरको उछाले । फिर प्रोक्षणीपात्रको बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रको पकडकर तीन बार प्रोक्षणीके जलसे ऊपरको सेचन करे अनन्तर प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीपात्रको सेचन कर प्रोक्षणीके जलसे पूर्व स्थापित सब वस्तुओंको सेचन करे। फिर प्रोक्षणीपात्रको प्रणीता और अग्निके बीचमें रख देवे फिर आज्यस्थालीमें घृत डालकर अग्निपर रखदेवे । पश्चात् एक कुशाको बाल लेवे और उसको दक्षिण क्रमसे घृत तथा अग्निके ऊपर घुमाकर अग्निमें डालदेवे । फिर स्रुवेको अग्निमें तीन बार तपावे और समार्जनकुशाओंके अग्रभागसे भीतर और मूलभागसे बाहर उस स्रुवेकोशुद्ध करे । अनन्तर प्रणीताके जलसे उस स्रुवेको और पुनर्वार तीन बार तपाकर अग्निके दक्षिणकी ओर रख देवे । फिर घृतको अग्निसे उतारे और अग्निके चारों तरफ घुमाकर अपने आगे रख लेवे अनन्तर पवित्रोंसे घृतको प्रोक्षणीपात्रकी नाई तीन बार उछाले और देखे यदि उसमें

पद्भ्ये तन्निरसनं ततः प्रोक्षण्युत्पवनं तत उत्थायोपयमनकुशानादाय प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः क्षिपेत्। तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निं पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय ब्रह्मणान्वारब्धः पातितदक्षिणजानुः समिद्धतमेऽग्नौ जुहुयात्। तत्र प्रथमाहुतिचतुष्टयेन स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिंद्राय०। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। ततः प्राकृतोऽनन्वारब्धकर्तृको होमः। ॐ अंतरिक्षाय स्वाहा इदमंतरिक्षाय०। ॐ वायवे

मक्खी इत्यादि कोई अपवित्र वस्तु पडी हो तो उसको निकालकर फेंक देवे। फिर पवित्रोंसे प्रोक्षणीपात्रके जलको तीन वार उछाले इसके पीछे खडा होजाय और बांये हाथमें उपयमनकुशाओंको लेकर मनसे प्रजापतिका ध्यान करता हुआ चुपचाप घृतसे भिजोई हुई तीनों समिधाओंको स्वाहा शब्दके साथ अग्निमें डाल देवे। फिर आसनपर बैठकर पवित्रोंको सहित प्रोक्षणीके जलको हाथमें लेकर दक्षिण क्रमसे अग्निके चारों ओर सेचन करे और पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रख देवे। अनन्तर ब्रह्माके साथ एकत्रित हो दाहिनी जानुको नवाय जलती हुई अग्निमें होम करे। प्रथम चार आहुति देनेके समय जो स्रुवेमें घृतादि शेष रहे उसको प्रोक्षणीपात्रमें डाल देवे। आहुतिके मन्त्र आगे लिखे हैं (उपरोक्त चार आहुतियोंमें पहली दो आहुति आघार और दूसरी दो आहुति आज्यभाग कहलाती हैं। आघारकी पहली आहुति मानसिक अर्थात् मनसे मन्त्र बोलकर दी जाती है।) ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०-इति मनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय०। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। ततः प्राकृतोऽनन्वारब्धकर्तृको होमः। ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदमन्तरिक्षाय। ॐ वायवे

स्वाहा इदं वायवे०। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं
स्वाहा इदं छंदोभ्यः०। एताः सामान्याहुतयः।
इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ देवेभ्यः स्वाहा
ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदं ऋषिभ्यः०। ॐ श्रद्धायै
यै०। ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै०। ॐ
सदसस्पतये०। ॐ अनुमतये स्वाहा इदमनुमतये०।
र्तृको होमः तत्तदाहुत्यनंतरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य
प्रक्षेपः। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये०। ॐ भुवः स्वाहा इदं
ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय०। एता महाव्याहृतयः। ॐ
वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो
शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां०
ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव
यक्ष्वनो वरुणᳬ रराणो वीहि मृडीकᳬ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नी-

स्वाहा इदं वायवे०। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे०। ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो०। एताः सामान्याहुतयः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यो०। ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदं ऋषिभ्यो०। ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै०। ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै०। ॐ सदसस्पतये स्वाहा इदं सदसस्पतये०। ॐ अनुमतये स्वाहा इदमनुमतये०। ततोन्वारब्धकर्तृको होमः। (आहुतियोंके अनन्तर स्रुवेमें शेष रहे घृतादिको प्रोक्षणीपात्रमें डालते जाना चाहिये) ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये०। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे०। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय०। एताः महाव्याहृतयः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य। विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्०। ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणᳬ रराणो वीहि मृडीकᳬ सुहवो न एधि

[illegible]भ्यां०। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि। [illegible]नो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये०। ॐ ये ते [illegible] वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः। तेभिर्नो अद्य [illegible]तोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे [illegible]ष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च०। ॐ उदुत्तमं वरुण [illegible]शमस्मदवाधमं विमध्यमꣳश्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानाग[illegible]ो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय०। इति सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। इति प्राजापत्यम्। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते०। इति स्विष्टकृद्धोमः। [illegible]तः संस्रवप्राशनम्। तत आचम्य ॐ अद्य कृतैतद्देदारंभहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थं इदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणां

स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम्। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये०। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च०। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय०। इति सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। इति प्राजापत्यम्। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते०। इसके उपरान्त प्रोक्षणीपात्रके घृतमिश्रित जलका प्राशन करना चाहिये और फिर शुद्ध जलसे आचमन करे अनन्तर आगे लिखे संकल्पको उच्चारणपूर्वक पूर्णपात्रका दान करके ब्रह्माको देवे। 'ॐ अद्य कृतैतद्देदारंभहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थं इदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे' तब ब्रह्मा

दद्यात्। ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततो ब्रह्मग्रंथिविमोक
त्रिया न आप ओषधयः संतु इति पवित्राभ्यां
शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च
इति मंत्रेण ऐशान्यां प्रणीतां न्युब्जीकुर्यात्। तत
घृतेनाभिघार्य क्रमेण हस्तेनैव जुहुयात्। ॐ देवा गातुविदो
वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः स्वाहा।
बर्हिर्होमः। ततः काश्मीरगमनम्। तत इष्टांशके वेदारंभं गुरुः
येत् तत्र क्रमः। ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ इति प्रणवांतं पठित्वा पंक्तिं नमस्कारं
कारयित्वा ॐ समिधाग्निं दुवस्यतघृतैर्बोधयतातिथिम्।
जुहोतन। ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे। इति कंडिकांतरं वा फक्किकां वा पाठ

उसको 'ॐ स्वस्ति' ऐसा कहकर ग्रहण करे। फिर ब्रह्मग्रंथिको खोल देना चाहिये। तत्पश्चात् आगे लिखे 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' इस मन्त्रद्वारा पवित्रोंसे प्रणीतापात्रका जल लेकर अपने मस्तकपर मार्जन करे। तदुपरान्त आगे लिखे 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः' इस मन्त्र द्वारा प्रणीतापात्रको ईशानकोनमें उलट देवे। फिर पूर्व बिछाई हुई कुशाओंको ग्रहणपूर्वक घृतमें बोरकर आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इदं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः स्वाहा इस मन्त्रसे अग्निमें होम कर देवे। इसके पीछे विद्याध्ययनके निमित्त ब्रह्मचारीको काश्मीर (अथवा काशी) भेजदेना चाहिये। फिर लग्नके उपस्थित होनेपर गुरु ब्रह्मचारीको वेदाध्ययन कराना आरंभ करावे उसका क्रम यह है। 'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ' इस प्रकार प्रणवान्त गायत्री पढाकर नमस्कार करावे और फिर आगे लिखे हुए 'ॐ सुसमिधा अग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिं अस्मिन्हव्याजुहोतन। ॐ समिद्धाय शोचिषे' इस मन्त्रको उच्चारण करावे।

येत् । ततः सप्रणवं स्वस्ति वाचयित्वा उत्थाय फलपुष्पसमन्वितब्रह्मचारिदक्षिणकरस्पृष्टेन घृतपूर्णेन पूर्णाहुतिं दद्यात् ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविᳪं संम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः । इति पूर्णाहुतिः । तत उपविश्य स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकागृहीतभस्मना त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायां ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं इति दक्षिणबाहुमूले ॐ तन्नो अस्तुत्र्यायुषमिति हृदि । अनेनैव क्रमेण ब्रह्मचारिललाटादावपि तत्र तत्ते इति विशेषः । इति वेदारंभः ॥

अनन्तर ' ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे ' इस कण्डिका अथवा अन्य किसी कंडिकाको वा किसी शाखकी फक्किकाको पढावे फिर प्रणव ॐ का उच्चारण करा देवे । और पीछे स्वस्तिवाचन करावे । तदनन्तर उठकर स्रुवेमें फल पुष्प तथा घृत भरकर ब्रह्मचारीका हाथ स्पर्श कराय आगे लिखे ' ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् कविᳪं संम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः ' इस मन्त्रसे पूर्णाहुति करानी चाहिये । पश्चात् आसनपर बैठकर स्रुवेसे होमकी भस्म ले दक्षिण हाथकी अनामिका अँगुली द्वारा फिर उस स्रुवेसे भस्म लेकर ' ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः ' ऐसा कहकर माथेमें ' ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं ' यह उच्चारण करके गलेमें ' ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं ' यह कहकर दक्षिणबाहुमूलमें और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' ऐसा कहकर हृदयमें लगानी चाहिये । और फिर इसी क्रमसे ब्रह्मचारीके त्र्यायुष करे अर्थात् भस्म लगावे किन्तु जब ब्रह्मचारीके लगावे तो ' तन्नो अस्तु ' के स्थानमें 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करे ।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीयमिश्रसुखानंदसूरिसूनु-पण्डित-कन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायां वेदारम्भसंस्कारः समाप्तः ।

अथ समावर्तनम् ।

तत्र शुभे दिने प्रह्वीभूय आचार्यं स्नास्यामीति कुमार
पते तत्र स्नाहीत्याचार्यः ततो ब्रह्मचारिणि
उपविष्टे कृतस्नानादिराचार्य· कुशैर्हस्तमात्रां भूमिं
परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेनोत्तरोत्तरक्रमेण
उल्लेखनक्रमेणोद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य कांस्येनाग्निमानीय प्रत्यङ्मुखं
ध्यात् । ततः पुष्पचंदनतांबूलवासांस्यादाय ॐ अद्यामुकस्य
समावर्तनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुक-
शर्म्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंदनतांबूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे
वृतोऽस्मीति प्रतिवचनं यथाविहितं कर्म कुर्वित्यभिधाय ॐ करवाणीति

अब समावर्तन संस्कार लिखा जाता है। किसी शुभ दिनमें नम्र होकर ब्रह्म-चारी आचार्यसे प्रार्थना करे कि ' मैं स्नान करूंगा ' तब आचार्य ब्रह्मचारीसे कहे कि ' स्नाहि अर्थात् स्नान कर । फिर आचार्यके दाहिनी ओर समीपमें ब्रह्मचारीके बैठ जानेपर जो· कि स्नानादि नित्यकर्मसे निश्चिन्त हो चुका है ऐसा आचार्य शुद्ध भूमिमें इस प्रमाण वेदी रचकर उसको तीन कुशाओंसे शुद्ध कर उन कुशाओंको ईशानकोनमें डाल देना चाहिये । फिर गोबरसे वेदीको लीपकर स्रुवेके मूलसे क्रमशः उत्तर उत्तरकी ओरको तीन रेखा खेंचकर रेखा खेंचनेके क्रमानुसार मिट्टी उठाकर जलसे सेचनपूर्वक कांसीके पात्रमें अग्नि लाय उत्तराभिमुख स्थापित करे पीछे पुष्प, चन्दन, ताम्बूल और वस्त्र लेकर आगे लिखे ' ॐ अद्यामुकस्य कर्तव्यसमावर्तनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्ष-णरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवा-सोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे इस संकल्पद्वारा ब्रह्माका वरण करे । तब ब्रह्मा ' वृतोऽस्मि ' ऐसा उच्चारण करके उस सामग्रीको लेवे । फिर ' यथाविहितं कर्म कुरु ' ऐसा आचार्य कहे । अनन्तर ' ॐ करवाणि ' ऐसा ब्रह्माके कहने-

तेनोक्ते अग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य्याऽस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय ॐ भवानीति तेनोक्ते ब्राह्मणमुदङ्मुखं तत्रोपवेश्य ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याऽग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्। ततः परिस्तरणं बर्हिषश्चतुर्थभागमादायाग्नेयादीशान्यांतं ब्रह्मणोऽग्निपर्यंतं नैर्ऋत्याद्वायव्यांतं अग्नितः प्रणीतापर्यंतं ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनंतर्गर्भं कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली संमार्जनार्थं कुशा उपयमनकुशाः समिधस्तिस्रः स्रुव आज्यं पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम्। ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्त्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे

पर अग्निके दक्षिणकी ओर शुद्ध आसन बिछाय उसके ऊपर पूर्वको जिनका अग्रभाग हो ऐसे कुशा बिछाकर इस समावर्तनसंस्कारमें आप मेरे ब्रह्मा हूजिये ऐसा कहकर ब्रह्माके ' ॐ भवानि ' कहनेपर उसको उत्तरमुख करके उस आसनपर बैठाल देना चाहिये। फिर प्रणीतापात्रको आगे रखकर जलसे परिपूर्ण करे और उसको कुशाओंसे ढककर ब्रह्माके मुखको देख अग्निके उत्तरकी ओर कुशाओंपर रख देवे। फिर परिस्तरण करना चाहिये। मुट्ठीभर अथवा सौ कुशा लेकर उसके चार भाग करे। पहला भाग अग्निकोनसे ईशानकोनतक, दूसरा भाग ब्रह्मासे अग्नि (वेदी) तक, तीसरा भाग नैर्ऋतकोनसे वायुकोनतक और चौथा भाग अग्निसे प्रणीतापर्यन्त बिछा देना चाहिये। फिर अग्निके उत्तर पश्चिमदिशामें पवित्र छेदनके लिये तीन कुशा रक्खे और पवित्र बनानेके निमित्त अग्रभाग सहित तथा बीचके पत्तेसे रहित अर्थात् जिसके भीतर अन्य कुशपत्र न हो, ऐसे दो कुशपत्र रक्खें। फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, पांच संमार्जन कुशा, तीनसे तेरह तक उपयमनकुशा, तीन समिधा, स्रुवा और घृत इन सब वस्तुओंको पूर्वपूर्वकी तरफ रखता जावे। तत्पश्चात् पवित्र छेदनकी कुशाओंसे पवित्रोंको छेदन करे और पवित्रयुक्त

निधायानामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पूय प्रोक्षणीपात्रं
णादायाऽनामिकांगुष्ठगृहीतपवित्राभ्यां तज्जलं किंचित्रिः
तोदकेन प्रोक्षणीमभ्युक्ष्य प्रोक्षणीजलेन
ग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात्। तत
निर्वाप· अधिश्रयणम्। ततस्तृणं प्रज्वाल्याज्यस्याग्नेश्चो...
भ्रामयित्वा वह्नौ तत् प्रक्षिप्य स्रुवं त्रिः प्रतप्य...
मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य स्वस्य
णतो निदध्यात् तत आज्यमाग्नें प्रदक्षिणं भ्रामयित्वावतार्य्य त्रि·
वदुत्पूयावेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं कृत्वा पुनः पूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनं

हाथसे प्रणीतापात्रका जल लेकर प्रोक्षणीमें तीन बार रक्खे। फिर और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंको ग्रहण करके प्रोक्षणीके जलको तीन बार उछाले। पश्चात् प्रोक्षणीपात्रको बायें हाथमें उठाकर दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंको ग्रहण पूर्वक प्रोक्षणीके जलको तीन बार फेंकें। प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीको सेचन करे। फिर प्रोक्षणीके जलद्वारा पूर्वस्थापित वस्तुओंको सेचन कर प्रोक्षणीपात्रको अग्नि और प्रणीताके बीचमें रख देवे। इसके पीछे आज्यस्थालीमें घृतको रक्खे और फिर उस आज्यस्थालीको उठाकर वेदीकी अग्निमें स्थापन करे। फिर एक कुशा बाल लेवे और उसको घृत तथा अग्निके चारों तरफ घुमाकर अग्निमें ही डालदेवे। अनन्तर स्रुवेको अग्निसे तीन बार तपाकर संमार्जनकुशाओंके अग्रभागसे भीतर और मूलभागसे बाहर शुद्ध कर प्रणीतापात्रके जलसे सेचन करे और फिर दूसरी बार तपाकर वेदीके दाहिनी तरफ रख देवे। घृतको अग्निसे उतार लेवे, और उसको अग्निके चारों तरफ घुमाता हुआ आगे रखकर प्रोक्षणीकी नाईं पवित्रोंमें तीन बार उछाले और देखे यदि उसमें मक्खी इत्यादि कोई पड़ीहो तो उसको निकालकर बाहर फेंक देवे। फिर पूर्ववत् प्रोक्षणीके जलका

त्यायोपयमनकुशान्वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णी-मग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः क्षिपेत् तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्ष-ण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निं पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय पाति-तदक्षिणजानुः समिद्धतमेऽग्नौ ब्रह्मणान्वारब्धः स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहुयात्। तत्र प्रथमाहुतिचतुष्टये प्रत्याहुत्यनंतरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिंद्राय०। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इद-मग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। ततोऽन-न्वारब्धकर्तृकहोमः। ॐ अंतरिक्षाय स्वाहा इदमंतरिक्षाय०। ॐ वा-यवे स्वाहा इदं वायवे०। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे०। ॐ छंदोभ्यः

पवित्रोंसे उछाले और फिर खडा होकर उपयमन कुशाओंको वायें हाथमें ले मनसे प्रजापतिका ध्यान करता हुआ चुपचाप तीनों समिधाओंको घृतमें बोरकर स्वाहा शब्दके साथ अग्निमें डाल देवे। फिर पीछे आसनपर बैठकर पवित्रसहित प्रोक्षणीके जलको दाहिने हाथमें लेकर दक्षिणक्रमसे अग्निके चारों ओर सेचन करे फिर पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रख देवे। पश्चात् दाहिनी जानुको नवायकर ब्रह्मासे एकचित हो प्रज्वलित अग्निमें स्रुवेके द्वारा घृतकी आहुति देवे। पहली चार आहुतियोंमें प्रत्येक आहुतिके अनन्तर स्रुवेमें शेष रहे हुए घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डालना जाय (यहाँका शेष विवरण पीछे कई बार लिखा जाचुका है वहाँ देख लेना) आहुतिके मन्त्र निम्न लिखित हैं। 'ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम। इति मनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिंद्राय न मम। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। (इनसे आगेकी आहुतियाँभी ब्रह्मासे युक्त होकरही दीजानी हैं) ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदमन्तरिक्षाय०। ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे०। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे०। ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः०।

-स्वाहा इदं छंदोभ्यः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये॰ मनसा । ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यः । ॐ ऋषिभ्यः ऋषिभ्यो॰ । ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै॰ । ॐ मेधायै इदं मेधायै॰ । ॐ सदसस्पतये स्वाहा इदं सदसस्पतये॰ । मतये स्वाहा इद मनुमतये॰ । ततो ब्रह्मणान्वारब्धो जुहुयात् । हुतिदशतये तत्तदाहुत्यनंतरं स्रुवावस्थिताज्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये॰ । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे॰ । ॐ स्वाहा इदं सूर्याय॰ । एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां॰ । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्वनो वरुणᳬ रराणो वीहि मृडीकᳬ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां॰ । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये॰ । इति मनसा । ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यः॰ । ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदं ऋषिभ्यः॰ । ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै॰ । ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै॰ । ॐ सदसस्पतयेस्वाहा इदं सदसस्पतये॰ । ॐ अनुमतये स्वाहा इदमनुमतये॰ । फिर ब्रह्मासे मिलकरही होम करे । यहां दश आहुतियोंमें प्रत्येक आहुतिके पीछे स्रुवेमें शेष रहे घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डालता जाय । ' ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये॰ । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे॰ । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय॰ । एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्॰ । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोता नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणᳬ रराणो वीहि मृडीकᳬ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम् । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजᳬ स्वाहा

महास्ययानो धेहि भेषजं स्वाहा इदमग्नये०। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च०। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय०। इति सर्वप्रायश्चित्तम्। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। इति प्राजापत्यम्। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते०। इति स्विष्टकृत्। ततः संस्रवप्राशनम्। तत आचम्य। ॐ अद्य कृतैतत्समावर्तनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे। इति दक्षिणां दद्यात्। ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततो ब्रह्मग्रंथिविमोकः। ततः

इदमग्नये। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः। तेभिर्नो अद्य सवितोत्त विष्णुर्विश्वे मुञ्चंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च०। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय०। इति सर्वप्रायश्चित्तम्। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। इति प्राजापत्यम्। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते०। इति स्विष्टकृत्०। फिर प्रोक्षणीपात्रके घृतमिश्रित जलका प्राशन करे और इसके पश्चात् शुद्ध जलसे आचमन कर लेना चाहिये। अनन्तर आगे लिखे 'ॐ अद्य कृतैतत्समावर्तनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे' इस संकल्पको उच्चारणपूर्वक पूर्णपात्रका दान करके ब्रह्माके निमित्त देना चाहिये। तब उसको ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' ऐसा बोलकर ग्रहण करे।

पवित्राभ्यां प्रणीताजलेन ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयस्संत।
मंत्रेण शिरः संमृज्य। ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान्
वयं द्विष्मः। इति मंत्रेणैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम्
मेण बर्हिरानीय घृतेनाभिघार्य हस्तेनैव जुहुयात्। ॐ देवा
गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञ९ स्वाहा व्वाते
स्वाहा। इति बर्हिर्होमः। ततो ब्रह्मणान्वारब्धकर्तृकं कर्म।
मोपविष्टो ब्रह्मचारी परिसमूहनं कुर्यात्। तत्र
तरेंधनेन पंचाहुतीर्हस्तेनैव जुहुयात्। ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु।
ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि। ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं
कुरु। ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि। ॐ एवमहं

तत्पश्चात् ब्रह्मगांठको खोल देनाचाहिये। अनन्तर पवित्रोंद्वारा प्रणीताके जलको ग्रहण करके आगे लिखे 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' इस मन्त्रसे अपने शिरमें मार्जन करे। फिर आगे लिखे 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान् द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः' इस मन्त्रसे प्रणीतापात्रको ईशानकोनमें उलट देवे। तदनन्तर परिस्तरणके क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रमसे कुश बिछाये थे उसी क्रमसे उन कुशोंको उठालेवे और उनको घृतमें बोरकर आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञ९ स्वाहा वाते धाः स्वाहा।' इस मन्त्र द्वारा हाथसेही अग्निमें होम कर देवे। फिर ब्रह्मासे मिलकर आगेका कर्म करना चाहिये। ब्रह्मचारी अग्निके पश्चिमकी तरफको बैठा हुआ अग्निका परिसमूहन[१] पश्चात् पवित्र और सूखे ईंधनकी पांच समिधा लेवे और उनको घृतमें बोरकर आगे लिखे पांच पृथक् पृथक् मन्त्रोंसे आहुति देवे। 'ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रव सं मां कुरु। ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि। ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु। ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि।

१ वेदीके इधर उधर जो होमीय द्रव्य अर्थात् होमके समय साकल्यादि छितराकर गिर पडते हैं उन सबको फिर इकट्ठा कर देनेका नामही परिसमूहन है।

ुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् । ततः प्रदक्षिणमग्निं वारिणा ुक्ष्य उत्थाय घृताक्तां प्रादेशमितां समिधमादाय जुहुयात् तत्र मंत्रः । अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिधे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भूयासं स्वाहा । ततः समिदंतरद्वयमनेनैव क्रमेण प्रत्येकं हुत्वा उपविश्य तेनैव क्रमेण पंचाहुतीर्घृताक्तशुष्कानिषिद्धेतरेंधनेन जुहुयात् । ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् । ततः प्रदक्षिणमग्निं वारिणा पर्युक्ष्य तूष्णीं पाणी प्रतप्य मुखं

ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् । ' फिर अग्निके चारों तरफ जलसेचनपूर्वक खडा हो प्रादेश प्रमाण समिधा घृतमें भिजोकर आगे लिखे ' ॐ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस एवमहमायुष्य मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भूयासं स्वाहा ' इस मन्त्रसे आहुति देवे । तिसके पीछे इसी मन्त्रसे दो समिधाओंको अलग अलग आहुति देवे । फिर आसनमें बैठकर पूर्वकथनानुसार सूखे अथच पवित्र ईंधनकी पांच समिधाओंको घृतमें भिजोकर आगे लिखे ' ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मां कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् ' इन मन्त्रोंसे आहुति देवे । पश्चात् दक्षिण क्रमसे अग्निके चारों ओर जल सेचन करे और फिर अग्निमें चुपचाप हाथोंको तपाकर आगे लिखे प्रत्येक मन्त्रसे मुखको स्पर्श करे ।

प्रतिमंत्रांतेऽवमृशति। ॐ तनूपा अग्नेसि तन्वं मे पाहि। ॐ अग्नेस्यायुर्मे देहि। ॐ वर्चोदाः अग्नेसि वर्चो मे देहि। ॐ तन्वा ऊनं तन्म आपृण। ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु। मे देवी सरस्वती आदधातु। ॐ मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां स्रजौ। तत्र सर्वगात्रादिषु दक्षिणपाणिना स्पर्शः। तत्र प्रत्येकं ॐ अंगानि च म आप्यायताम्। इति सर्वगात्रालंभने। ॐ वाक् आप्यायतामिति मुखालंभने। ॐ प्राणश्च आप्यायतामिति ॐ चक्षुश्च म आप्यायतामिति चक्षुर्द्वयस्पर्शः। ॐ श्रोत्रं म आप्यायतामिति श्रोत्रद्वयस्पर्शः। ॐ यशो बलं च म यतामिति मंत्रपाठमात्रम्। ततो दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ग्रीवायां दक्षिणबाहुमूले हृदि च त्र्यायुषं कुर्यात् यथासंख्येन मंत्रचतु-

' ॐ तनूपा अग्नेसि तन्वं मे पाहि। ॐ आयुर्दा अग्नेस्यायुर्मे देहि। ॐ वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मे देहि। ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण। ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु। ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु। ॐ मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ' अनन्तर आगे लिखा प्रत्येक मन्त्र बोलकर दाहिने हाथसे शरीरके समस्त अंगोंको स्पर्श करे। ' ॐ अङ्गानि च म आप्यायताम् ' यह मन्त्र उच्चारण करके समस्त शरीरको स्पर्श करे। ' ॐ वाक् च म आप्यायताम् ' यह मन्त्र बोलकर मुखको ' ॐ प्राणश्च म आप्यायताम् ' यह मन्त्र उच्चारण करके नासिकाके दोनों छिद्रोंको ' ॐ चक्षुश्च म आप्यायताम् । यह मन्त्र पढकर दोनों नेत्रोंको और 'श्रोत्रञ्च म आप्यायताम्। यह मन्त्र उच्चारण करके दोनों कानोंको स्पर्श करे और ' ॐ यशो बलञ्च म आप्यायताम् ' इस मन्त्रका केवलमात्र पाठही कर लेना चाहिये। फिर दाहिने हाथकी अनामिका अंगुलीसे स्रुवेकी भस्म लेकर माथे गले दक्षिणबाहुमूल और हृदयमें त्र्यायुष करे। अर्थात् इन सब स्थानोंमें स्रुवेकी उपरोक्त भस्म लगानी चाहिये। उसके क्रमसे निम्नलिखित चार मन्त्र यह हैं यथा ' ॐ त्र्यायुषं

षू। ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति
ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं इति दक्षिणबाहुमूले। ॐ तन्नो अस्तु
त्र्यायुषं इति हृदि। ततो व्यस्तपाणिभ्यां पृथिवीं स्पृशन् प्रथमं वैश्वा-
नरं संबोध्याभिवादयेत्। तत्रामुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽहममुकशर्माहं भो
वैश्वानर त्वामभिवादये इति प्रकारः। ततस्तथैव वरुणं संबोध्याभिवाद-
येत्। तथैवाचार्यं चाभिवादयेत्। ततः आयुष्मान् भव सौम्य इत्याचार्यो
ब्रूयात्। ततोऽग्नेरुत्तरतः प्रागग्रान्कुशानास्तीर्य तदुपरि दक्षिणोत्तरक्रमे-
णासादितवारिपूर्णकलशाष्टतये कलशानां पुरतः प्रागग्रेषु कुशेषु स्थित्वा
एकस्मादाम्रपल्लवेनोदकं गृहीत्वा ॐ येऽप्स्वंतरग्नयः प्रविष्टा गोह्य उप-

---

जमदग्नेः' यह मन्त्र उच्चारण करके माथेमें, 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' यह मन्त्र
बोलकर कंठमें, ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं' यह मन्त्र बोलकर दक्षिणबाहुमूलमें, और
'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' यह मन्त्र उच्चारण करके हृदयमें लगानी चाहिये।
फिर व्यस्तपाणि अर्थात् बायें हाथके ऊपर दाहिने हाथको पट्ट रखकर भूमिको
स्पर्श करताहुआ प्रथम अग्निको सम्बोधन करके प्रणाम करे। उसका क्रम यह
है 'अमुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽहममुकशर्माहं भो वैश्वानर त्वामभिवादये' यह
अभिवादन करनेकी रीति है। फिर इसी प्रकार वरुणको संबोधन करके प्रणाम
करना चाहिये। उसका वाक्य यह है। यथा 'अमुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽह-
ममुकशर्माहं भो वरुण त्वामभिवादये' इसी प्रकार आचार्यको अभिवादन करे।
यथा 'अमुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽहममुकशर्माहं भो आचार्य त्वामभिवादये' अ-
भिवादन करनेके अनन्तर 'आयुष्मान् भव सौम्य' इस प्रकार आचार्य आशीर्वाद
देवे। तत्पश्चात् अग्निके उत्तरसे पूर्वको अग्रभागवाले कुशाओंको बिछाकर
दक्षिण उत्तरको जलसे भरकर रक्खे हुए आठ कलशोंके आगे पूर्वाग्रकुशोंको
बिछावे और उसपर (ब्रह्मचारी) बैठकर उन आठ कलशोंके बीच एक कलशमेंसे
आमके पत्ते द्वारा आगे लिखे 'ॐ येऽप्स्वंतरग्नयः प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मयूषो

गोह्यो मयूषो मनोहारस्खलो विरुजस्तनूपे ॐ
रोचनस्तामिह गृह्णामि। इति मंत्रेण। ततस्तेन मामभिषिंचामि
ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय इत्यात्मानमभिषिंचति। ततो
गृह्णामि ॐ येप्स्वंतरग्नय०। इति मंत्रेण
ॐ येन श्रियमकृणुतां येनावमृश्यताᳫं सुरां येनाक्ष्यावभ्यषिंचतां
तदश्विना यशः। इति मंत्रेण ततस्तेनैव क्रमेण पुनः ॐ येप्स्वंतरग्नय०
इत्यनेन तृतीयकलशस्थजलमादाय। ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता
ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे। इति मंत्रेणाभिषिच्य तेनैव
ॐ येप्स्वंतरग्नय०। इति मंत्रेण चतुर्थकलशस्थजलमादाय। ॐ यो
शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। इति मंत्रेणाभिषि-
च्य पुनः पंचमकलशस्थं ॐ जलं येप्स्वंतरग्नय०। इति मंत्रेण तथैवादाय।
ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।

मनोहारस्खलो विरुजस्तनूपे दुष्टरिंद्रियहोतान्विजहामि यो रोचनस्तमिह गृह्णामि' इस मंत्रसे जल लेवे और फिर इस आगे लिखे 'ततस्तेन मामभिषिंचामि श्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय।' मन्त्रसे अपने शरीरमें सेचन करे। फिर दूसरे कलशसे आमके पत्ते द्वारा पूर्वोक्त 'ॐ येप्स्वंतरग्नयः' मन्त्रसे जल ग्रहण करे और आगे लिखे 'ॐ येन श्रियमकृणुतां येनावमृष्यताᳫं सुरां येनाक्ष्यावभ्यषिंचतां यद्वा तदश्विना यशः' इस मन्त्रसे अपने शरीरपर सेचन करे। फिर जल ग्रहण करनेके पूर्वोक्त मन्त्रसे आमके पत्तेद्वारा तीसरे कलशका जल लेकर आगे लिखे 'ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातनः। महे रणाय चक्षसे' इस मन्त्रसे शरीरमें सेचन करे। अनन्तर जल ग्रहणके उसी मन्त्रसे आमके पत्तेद्वारा चौथे कलशका जल लेकर आगे लिखे 'ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः' इस मन्त्रसे अपने शरीरको सेचन करे। फिर जल ग्रहणके पूर्वोक्त मन्त्रसे आमके पत्तेद्वारा पांचवें कलशका जल लेकर आगे लिखे 'ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।

ते मंत्रेणाभिषिच्य ततोऽवशिष्टकलशत्रितयजलं तथैव येप्स्वंतरग्नय० । ते मंत्रेण प्रत्येकं गृहीत्वा तूष्णीं प्रत्येकमभिषिंचति । ततो मेखलामो- र्न शिरोभागेन ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यम्ᳲश्रथाय । था वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम । इति मंत्रेण । दंड- कृष्णाजिने तूष्णीं भूमौ निधाय अन्यद्वस्त्र परिधायोत्तरीयं च कृत्वाचम्य द्धांजलिरादित्यमुपतिष्ठेत् ब्रह्मचारी । ॐ उद्यन् भ्राजभृष्णुरिंद्रो मरु- द्भिरस्थात् । प्रातर्यावभिरस्थात् दशसनिरसि दशसनिं मा कुर्वाविदन्मा गमयोद्यन् भ्राजभृष्णुरिंद्रो मरुद्भिरस्थाद्दिवा यावभिरस्थाच्छतसनिरसि शतसनिं मा कुर्वाविदन्मा गमयोद्यन् भ्राजभृष्णुरिंद्रो मरुद्भिरस्थात्सायं यावभिरस्थात् सहस्रसनिरसि सहस्रसनिं मा कुर्वाविदन्मा गमय । इति मंत्रेण । ततो दधितिलान्वा प्राश्याचम्य जटालोमनखादींश्छेदयित्वा

आपो जनयथा च नः । इस मन्त्रसे अपने शरीरमें सेचन करे । पश्चात् शेष रहेहुए तीन कलशोंके वीच प्रत्येक कलशमेंसे पूर्वोक्त जल ग्रहणके मन्त्र द्वारा आमके पत्तेसे जल लेकर क्रमानुसार अपने शरीरमें चुपचाप सेचन करे । फिर मूँजकी मेखलाको शिरकी ओरसे आगे लिखे ' ॐ उदुत्तमं वरुण पाश- मस्मदवाधमं विमध्यम् श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम० ' इस मन्त्रको उच्चारण करके निकाल देवे। अनन्तर दण्ड और काली मृगछालाको चुपचाप रख देवे। फिर दूसरा वस्त्र और उत्तरीय वस्त्र धारण पर्वक आचमन करे। पश्चात् ब्रह्मचारी हाथ जोडकर आगे लिखे 'ॐ उद्यन्भ्राजभृष्णु- रिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् प्रातर्यावभिरस्थात् दशसनिरसि दशसनिं माकुर्वाविदन्मा गमयोद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थाद् दिवा यावभिरस्थाच्छतसनिरसि शत- सनिं माकुर्वाविदन्मागमयोद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात्सायं यावभिरस्था- त्सहस्रसनिरसि सहस्रसनिं माकुर्वाविदन्मागमय' इस मन्त्रको उच्चारण करता हुआ सूर्यनारायणके सन्मुख खडा होजाय । फिर दही और तिल इन दोनों वस्तुओंको मिलाकर चख लेवे । पीछे आचमन करले । तदनन्तर नाईके द्वारा क्षौर (हजा-

स्नात्वाचम्य प्रादेशमितोदुंबरकाष्ठेन दंतधावनम्
व्यूहध्वꣳ सोमो राजायमागमत् । स मे मुखं प्रमाक्ष्यते यशसा च
च । इति मंत्रेण । ततो दंतकाष्ठं परित्यज्याचम्य
तरं स्नात्वा । द्विराचम्य । चंदनकुंकुमादिना नासिकाया
ॐ प्राणापानौ मे तर्प्पय । ॐ चक्षुर्मे तर्प्पय । ॐ श्रोत्रं मे
इति मंत्रेणानुलिंपति । ततः पाणी प्रक्षाल्य दक्षिणाभिमुखः
वामजानुः कृतापसव्यो द्विगुणभुग्नकुशत्रयतिलजलान्यादाय
कुशत्रयोपरि पितृंस्तर्पयेत् । ॐ पितरः शुंधध्वामिति मंत्रेण । ततः
कृत्वा आचम्यानुलिप्य जपेत् ॐ सुचक्षा अहमक्षीभ्यां
सुवर्चा मुखेन सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम् । इति ततोऽहतवासः

मत) कराकर जटा लोम नाखून कटवावे और स्नान कराके आचमन करे फिर प्रादेशप्रमाण गूलरकी दँतोन आगे लिखे 'ओमन्नाद्याय व्यूहध्वꣳ सोमो राजायमागमत् । स मे मुखं प्रमक्ष्यंते यशसा च भगेन च' इस मन्त्रको उच्चारण करके करनी चाहिये । पश्चात् दतौनको फेंक देवे और कुल्ला करके फिर आचमन करे तिस पीछे सुगन्धित पदार्थोद्वारा शरीरमें उबटन करे । और फिर स्नानपूर्वक दो बार आचमन करे । फिर चन्दन केशर इत्यादि सुगन्धित द्रव्य ग्रहणपूर्वक 'प्राणापानौ मे तर्पय' यह मंत्र बोलकर नासिका और मुखमें लगावे । 'ॐ चक्षुर्मे तर्पय' यह मन्त्र उच्चारण करके नेत्रोंमें, और 'श्रोत्रं मे तर्पय' यह मन्त्र पढकर कानोंमें लगाना चाहिये । फिर हाथ धोकर दक्षिणकी ओरको मुख किये ब्रह्मचारी वामजानुको नवायकर जनेऊको अपसव्य (उल्टा) कर दुहेरे लपेटे हुए तीन कुश तिल और जल लेकर पृथ्वीमें बिछाये हुए तीन कुशोंके ऊपर आगे लिखे 'ॐ पितरः शुंधध्वम्' इस मन्त्रको उच्चारण करके पितरोंका तर्पण करे । फिर यज्ञोपवीत सव्य (सीधा) करके आचमन करे । पश्चात् कुछ सुगन्धित द्रव्योंको लेपन कर आगे लिखे 'ॐ सुचक्षा अहमक्षीभ्यां भूयासꣳ सुवर्चा मुखेन सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम्' इस मन्त्रका

। ॐ परिधास्ये यशोधास्ये दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि
च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये इति मंत्रेण ।
तो यज्ञोपवीतपरिधानम् । ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्स-
जं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।
ति मंत्रेण द्वितीयग्रहणम् । यज्ञोपवीतमिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुरुपवीतः
देवता यज्ञोपवीतपरिधाने विनियोगः । यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा
यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि आचमनं अथोत्तरीयं । ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी
यशसेंद्राबृहस्पती । यशो भगश्च मा विदद्यशो मा प्रतिपद्यताम् । इति
मंत्रेण । ततः पुष्पमालाग्रहणे मंत्रः ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै
कामायेंद्रियाय ता अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च । इति मंत्रेण

पाठ करना चाहिये । फिर आगे लिखे ' ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि शतं च जीवामि शरदः पुरूची राययस्पोषमभिसंव्ययिष्ये ' इस मन्त्रसे नवीन वस्त्र पहर लेवे । अनन्तर दूसरा यज्ञोपवीत धारण करनेके लिये आगे लिखा ' ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ' यह मन्त्र उच्चारण करके यज्ञोपवीतको हाथमें लेवे । फिर दूसरा यज्ञोपवीत धारण करनेके लिये जल हाथमें ले आगे लिखे हुए ' यज्ञोपवीतमिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुरुपवीतदेवता यज्ञोपवीतदेवता यज्ञोपवीतपरिधाने विनियोगः ' इस वाक्यको उच्चारण करके उसका विनियोग छोडे और फिर आगे लिखे हुए ' ॐ यज्ञोपवीनमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ' इस मन्त्रसे (उस) यज्ञोपवीतको धारण कर लेना चाहिये । पश्चात् आचमन करे फिर आगे लिखे हुए ' ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृस्पती यशो भगस्य मा विदद्यशो मा प्रतिपद्यताम् ' इस मन्त्रसे उत्तरीयवस्त्र[१] धारण करे । तत् पश्चात् आगे लिखे ' ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामायै येन्द्रियाय ता अहं प्रतिगृह्णामि

१ दुपट्टा ।

पुष्पमालाग्रहणम् । ततः पुष्पमालापरिधानम् । ॐ मिंद्रश्चकार विपुलं पृथु तेन संग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि इति मंत्रेण पुष्पमालापरिधानम् । अथ सुप्रतिष्ठा । अथोष्णीषेण वेष्टनं । ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान् भवति मानः । तं धारासः कवय उन्नयंति स्वाध्यो मनसा - देवयंतः । मंत्रेण । ततः कुंडले परिदधाति । ॐ अलंकरणमसि भूयोलंकरणं भूयात् । ततोऽञ्जनम् । ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि । तत आदर्शे आत्मदर्शनम् । ॐ रोचिष्णुरसि इति मंत्रेण । ततश्छत्रग्रहणम् । ॐ बृहस्पते छदिरसि पाप्मनो मामंतर्धेहि तेजसो यशसो मामंतर्धेहि इति मंत्रेण । ततः पद्भ्यामुपानहौ प्रतिगृह्णाति ॐ प्रतिष्ठे स्थो विश्वतो मापातम् इति मंत्रेण । ततो वैणवदंडधारणम् । ॐ विश्वाभ्यो

यशसा च भगेन च' इस मन्त्रसे पुष्पमालाको हाथमें ग्रहण करना चाहिये । और फिर उस पुष्पमालाको आगे लिखे 'ॐ यशोप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु । तेन संग्रथिताः सुमनस आवध्नामि यशो मयि ' इस मन्त्रको उच्चारण करके पहर लेना चाहिये । अथ सुप्रतिष्ठा । तदनन्तर पगडी या टोपी आगे लिखे ' ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः'इस मन्त्रसे धारण करे। इसके पश्चात् आगे लिखे 'ॐ अलङ्करणमसि भूयोलंकरणं भूयात्' इस मंत्रसे कुण्डल धारण करे । फिर आगे लिखे ' ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि ' इस मन्त्रसे अंजन धारण करे अर्थात् आंखोंमें काजल लगावे । फिर आगे लिखे ' ॐ रोचिष्णुरसि ' इस मन्त्रसे दर्पनमें मुख देखे । पश्चात् आगे लिखे ' बृहस्पते छदिरसि पाप्मनो मामन्तर्धेहि ' इस मन्त्रसे छतरी धारण करे । फिर आगे लिखे ' ॐ प्रतिष्ठे स्था विश्वमापातम् ' इस मन्त्रसे पैरोंमें उपानह (चर्मपादुका) धारण करे । अनन्तर आगे लिखे ' ॐ विश्वाभ्यो

नाग्राभ्यस्परिपाहि सर्वतः इति मंत्रेण ततः स्नातकस्य नियमाः। वादित्रनृत्यत्यागः न तत्र गमनं क्षेमे सति न रात्रौ ग्रामांतरगमनं धावेत् न कूपेऽवेक्षणं न वृक्षारोहणं फलत्रोटनं अमार्गेण न गच्छेत् नो न स्नायात् न संधिशयनम् न विषमभूमिलंघनं अश्लीलं नोपवदेत् उदितास्तसमये सूर्यं नोपपश्येत् जलमध्ये सूर्यं आकाशस्थं न पश्येत् देवे वर्षति न गच्छेत् उदके आत्मानं न पश्येत् अजातलोम्नीं प्रमत्तां पुरुषाकृतिं पंढां न गच्छेदित्यादि। तत आचार्याय वरां दक्षिणां दद्यात्। ततः मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजात-

---

मानाग्राभ्यस्परिपाहि सर्वतः ' इस मन्त्रसे लकडी (लाठी) हाथमें लेवे (तत्पश्चात् ब्रह्मचर्य अवस्थापूर्वक विद्याध्ययन कर लेनेपर समावर्त्तन संस्कारके द्वारा गृहस्थाश्रममें आये हुए नियम। यथा गाने, बजाने और नाचनेका त्याग करे और न ऐसे स्थानमें जावे। विशेष कार्य उपस्थित हुए विना रातके समय एक गांवसे दूसरे गांवमें न जाय, दौडकर नहीं चले। कुएमें मुँह डालकर नहीं झांके। वृक्ष पर नहीं चढे। कच्चे फलोंको नहीं तोडे। विना दरवाजेके घरमें न घुसे अर्थात् दरवाजेके होते हुए छोटी मोरी दीवार लांघकर कभी घरमें नहीं घुसे दरवाजेसेही प्रवेश करे। नग्न (बिलकुल नंगा) होकर स्नान नहीं करे। सूर्यके उदय तथा अस्तसमयमें नहीं सोवे। विषमभूमि अर्थात् ऊंची नीची पृथ्वीको लांघकर गमन न करे। अश्लीलवचन (गालीगलौज) नहीं बोले। उदय और अस्त होते हुए सूर्यको नहीं देखे। आकाशस्थ सूर्यकी परछांहीको जलके बीचमें न देखे। वर्षा होते हुए समयमें रास्ता तय न करे। जलमें अपने शरीरको नहीं देखे। जिसके रोम न निकले हों, बावली, पुरुषाकृति (जिस स्त्रीके पुरुषकी नाई दाढी मूछ निकल आई हैं जैसी गिंदिया हीजडी) इनके पास न जाय और न इनकी हाँसी ही उडावे। तदन्तर अपने आचार्यको उत्तम दक्षिणा देवे। फिर आगे लिखे हुए " ॐ मूर्द्धानं

मग्निम् । कवि॑ᳪ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः इति मंत्रेण फलपुष्पसमन्वितघृतपूर्णस्रुवेण . . . . . स्थाय पूर्णाहुतिमाचार्य्यः कुर्य्यादिति । तत उपविश्य स्रुवेण नीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति णबाहुमूले ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि इति त्र्यायुषं अनेनैव क्रमेण कुमारललाटादावपि तत्र तन्नो इत्यस्य स्थाने त विशेषः ततो मूर्द्धाक्षतादिग्रहणम् ।

इति श्रीमहामत्तकमहासामंताधिपतिश्रीरामदत्तविरचिता वाजसनेयिनामुपनयनकर्मपद्धतिः समाप्ता ।

दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कवि॑ᳪ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा " इस मन्त्रसे फल–पुष्प तथा घृतसे परिपूर्ण स्रुवेको उठाय उसमें बालकका हाथ लगवाय आचार्य पूर्णाहुति करे । फिर आसन पर बैठकर स्रुवेमें भस्म ग्रहणपूर्वक दाहिने हाथकी अनामिका अंगुली द्वारा उस स्रुवेसे भस्म लेकर त्र्यायुष करे । 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः ' ऐसा उच्चारण करके माथेमें ' ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं ' ऐसा उच्चारण करके गलेमें ' ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् ' ऐसा उच्चारण करके दक्षिणबाहुमूलमें और ' ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ' ऐसा उच्चारण करके उस भस्मको हृदयमें लगाना चाहिये । इसी प्रकार यह भस्म कुमारके भी ललाटादि स्थानोंमें लगावे । किन्तु जब कुमारके लगावे तो ' तन्नो अस्तु ' के स्थानमें ' नन्ने अस्तु ' ऐसा उच्चारण करना चाहिये । फिर कुमारके माथेमें तिलक अक्षत लगाकर अभिषेकादि करे ।

इति श्रीमहामत्तकमहासामन्ताधिपतिश्रीरामदत्तविरचिता वाजसनेयिनामुपनयनकर्मपद्धतिर्मुरादाबादनिवासि-कात्यायनगोत्रोत्पन्नपण्डित कन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकासहिता समाप्ता ।

शुचिः शुक्लांबरधरः कृतनित्यक्रियो मातृपूजाभ्युदयिके कृत्वा लायां मंडपे प्रत्यङ्मुखः प्राङ्मुखं वरमूर्ध्वजानुं तिष्ठंतं स्वस्तिवाचनं कलशगणेशादीनां पूजनं च कृत्वा ॐ. प्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्मा देवता यजुर्वरार्चनेविनियोगः ॐ साधु र्चयिष्यामो भवंतमिति ब्रूयात् ॐ अर्चयेति वरेणोक्ते शुद्धमासनं दत्त्वा विष्टरमादाय ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टर इत्यनेनोक्ते ॐ विष्टरः प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि इत्यभि धाय वरो विष्टरं गृहीत्वा ॐ वर्ष्मोऽस्मीत्याथर्वणऋषिर्विष्टरो देवताऽनुष्टुप्छंदः उपवेशने विनियोगः । ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्य्यः । इदं तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति । इत्यनेनासने

धारण किये मातृपूजा और नान्दीमुख श्राद्ध करके, वरके पूजनका समय आनेपर मण्डपमें पश्चिमाभिमुखसे बैठे हुए तथा पूर्वाभिमुख और ऊर्ध्वजानु स्थित वरको सम्बोधन करके स्वस्तिवाचन, कलशस्थापन तथा गणेशादिकोंका पूजन करके हाथमें जल ले आगे लिखे हुए ' ॐ साधु भवानास्तामिति प्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्मादेवता यजुर्वरार्चने विनियोगः ' इस वाक्यसे विनियोग छोडे । फिर ' ॐ साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तमिति ' इस प्रकार कन्याका पिता कहे । पश्चात् ' ॐ अर्चय ' ऐसा वरके कहनेपर वरके बैठनेको शुद्ध आसन देकर कुशाके बनाये विष्टरको हाथमें ले । ' ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः ' ऐसा किसी पाधाके कहनेपर ' ॐ विष्टरः प्रतिगृह्यताम् ' इस प्रकार दाता (कन्याका पिता) कहे फिर ' ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि ' ऐसा कहकर वर विष्टरको ले हाथमें जल ग्रहणपूर्वक आगे लिखे हुए ' ॐ वर्ष्मोऽस्मीत्याथर्वणऋषिर्विष्टरो देवताऽनुष्टुप् छन्दः उपवेशने विनियोगः ' इस वाक्यको उच्चारण करके विनियोग छोडे फिर आगे लिखे हुए ' ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्य्यः । इमं तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति ' इस मन्त्रको उच्चारणपूर्वक वर अपने

उत्तराग्रविष्टरोपरि वर उपविशति । तत्र उपविश्य यजमानः पाद्यमंजलिनादाय ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यमित्यन्येनोक्ते ॐ पाद्यं प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् ॐ पाद्यं प्रतिगृह्णामि इत्यभिधाय यजमानांजलितोऽजलिनापाद्यमादाय वरः विराजो दोहोसीति प्रजापतिर्ऋषिरापो देवता यजुःपादप्रक्षालने जलग्रहणे विनियोगः ॐ विराजो दोहोसि विराजो दोहमशीय मयि पद्यायै विराजो दोहः । इति दक्षिणपादं प्रक्षालयति अनेनैव क्रमेणानेनैव मंत्रेण प्रक्षालनम् । ततः पूर्ववद्विष्टरांतरं गृहीत्वा चरणयोरधस्तात् उत्तराग्रं वरः कुर्यात् । ततोदूर्वाक्षतफलपुष्पचंदनयुतार्घपात्रं गृहीत्वा यजमानः ॐ अर्घोऽर्घोऽर्घः इत्यनेनोक्ते ॐ अर्घः प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् ॐ अर्घं प्रतिगृह्णामीत्यभिधाय यजमानहस्तादर्घं

आसनमें विष्टरका उत्तरकी ओर अग्रभाग करके उसके ऊपर बैठ जावे । फिर कन्याका पिता आसनमें बैठकर एक पात्रमें जल भर उसको हाथमें लेवे[1] और ' ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यं ' ऐसा किसी अन्य पाधाके कहनेपर ' ॐ पाद्यं प्रतिगृह्यताम् ' ऐसा कन्याका पिता कहे । फिर ' ॐ पाद्यं प्रतिगृह्णामि ' ऐसा कहकर वर यजमानके हाथसे उस जलपात्रको लेकर आगे लिखे हुए ' ॐ विराजो दोहोसीति प्रजापतिर्ऋषिरापो देवता यजुःपादप्रक्षाने जलग्रहणे विनियोगः ' इस वाक्यसे विनियोग छोडे । पश्चात् आगे लिखे हुए " ॐ विराजो दोहोसि विराजो दोहमशीय मयि पद्यायै विराजो दोहः" इस मंत्रसे दाहिने चरणको धोवे फिर इसी मंत्र और इसी रीतिसे बाँये चरणको धोवे । अनंतर कन्याकापिता दूसरा विष्टर लेकर वरको देवे और वर उसे उत्तरको अग्रभाग करके अपने आसनके नीचे रख लेवे । फिर दूब अक्षत फल पुष्प चन्दन युक्त अर्घ्यपात्रको कन्याका पिता हाथमें लें ' ॐ अर्घो अर्घो अर्घः ऐसा किसी दूसरे पाधाके कहनेपर 'ॐ अर्घः प्रतिगृह्यताम् ' ऐसा कन्याका पिता कहे । ' ॐ अर्घं प्रतिगृह्णामि ' वर ऐसा उच्चारण पूर्वक यजमानके हाथसे उस अर्घपात्रको लेकर ईशानकोनमें

१ विनियोगके निमित्त और जल लेना चाहिये ।

उत्तराग्रविष्टरोपरि वर उपविशति। तत्र उपविश्य यजमानः पाद्यमंजलिनादाय ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यमित्यन्येनोक्ते ॐ पाद्यं प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् ॐ पाद्यं प्रतिगृह्णामि इत्यभिधाय यजमानांजलितोऽजलिनापाद्यमादाय वरः विराजो दोहोसीति प्रजापतिर्ऋषिरापो देवता यजुःपादप्रक्षालने जलग्रहणे विनियोगः ॐ विराजो दोहोसि विराजो दोहमशीय मयि पद्यायै विराजो दोहः। इति दक्षिणपादं प्रक्षालयति अनेनैव क्रमेणानेनैव मंत्रेण प्रक्षालनम्। ततः पूर्ववद्विष्टरांतरं गृहीत्वा चरणयोरधस्तात् उत्तराग्रं वरः कुर्यात्। ततोदूर्वाक्षतफलपुष्पचंदनयुतार्घपात्रं गृहीत्वा यजमानः ॐ अर्घोऽर्घोऽर्घः इत्यनेनोक्ते ॐ अर्घः प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् ॐ अर्घं प्रतिगृह्णामीत्यभिधाय यजमानहस्तादर्घं

आसनमें विष्टरका उत्तरकी ओर अग्रभाग करके उसके ऊपर बैठ जावे। फिर कन्याका पिता आसनमें बैठकर एक पात्रमें जल भर उसको हाथमें लेवे[1] और 'ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यं' ऐसा किसी अन्य पाधाके कहनेपर 'ॐ पाद्यं प्रतिगृह्यताम्' ऐसा कन्याका पिता कहे। फिर 'ॐ पाद्यं प्रतिगृह्णामि' ऐसा कहकर वर यजमानके हाथसे उस जलपात्रको लेकर आगे लिखे हुए 'ॐ विराजो दोहोसीति प्रजापतिर्ऋषिरापो देवता यजुःपादप्रक्षाने जलग्रहणे विनियोगः' इस वाक्यसे विनियोग छोडे। पश्चात् आगे लिखे हुए "ॐ विराजो दोहोसि विराजो दोहमशीय मयि पद्यायै विराजो दोहः" इस मंत्रसे दाहिने चरणको धोवे फिर इसी मंत्र और इसी रीतिसे बाँये चरणको धोवे। अनंतर कन्याकापिता दूसरा विष्टर लेकर वरको देवे और वर उसे उत्तरको अग्रभाग करके अपने आसनके नीचे रख लेवे। फिर दूब अक्षत फल पुष्प चन्दन युक्त अर्घ्यपात्रको कन्याका पिता हाथमें ले 'ॐ अर्घो अर्घो अर्घः ऐसा किसी दूसरे पाधाके कहनेपर 'ॐ अर्घः प्रतिगृह्यताम्' ऐसा कन्याका पिता कहे। 'ॐ अर्घं प्रतिगृह्णामि' वर ऐसा उच्चारण पूर्वक यजमानके हाथसे उस अर्घपात्रको लेकर ईशानकोनमें

१ विनियोगके निमित्त और जल लेना चाहिये।

गृहीत्वा ॐ आप स्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नवानीति शिरस्य दिक्‌ किंचिद्दत्त्वा ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत ष्टास्माकं वीरा मापरा सेचिमत्पयः इत्यर्घपात्रस्थं जलमैशान्यां दिशि त्यजन् पठति । ततं आचमनीयमादाय ॐ आचमनीयमाचमनीयमाचमनीयमित्यनेनोक्ते ततो वरः ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्णामीत्यभिधाय यजमानहस्तादाचमनीयमादाय ॐ आमागन्यशसा स॰सृज वर्चसा तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनां इत्यनेन सकृदाचामेत् इति द्विस्तूष्णीं ततो यजमान कांस्यपात्रस्थदधिमधुघृतानि कांस्यपात्रपिहितान्यादाय ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः इत्यनेनोक्ते ॐ मधुपर्कं प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् ॐ मधुपर्कं प्रतिगृह्णामि इति

उसके जलको छोडता हुआ आगे लिखे 'ॐ आपः स्थ, युष्माभिः सर्वान् कामानवाप्नवानीति शिरस्य क्षतादिक किंचिद्दत्वा ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वा योनिमभिगच्छत । अरिष्टास्माकं वीरा मापरा सेचिमत्पयः' इस मंत्रका पाठ करे । अर्थात् 'ॐ आपः स्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नवानि' यह उच्चारण करके मस्तकमें अक्षत लगावे । फिर आचमनके लिये एक पात्रमें जल भरकर कन्याका पिता हाथमें लेवे और फिर 'ॐ आचमनीयमाचमनीयमाचमनीयम्' ऐसा कन्याके पिताको कहनेपर वर 'ॐ आचमनीयम् प्रतिगृह्णामि' ऐसा कहकर यजमानके हाथसे उस आचमनीय जलपात्रको लेकर आगे लिखे हुए 'ॐ आमागन्यशसा स॰सृज वर्चसा तं मा कुरु प्रिय प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनां' इस मन्त्रसे एक बार आचमन करे । फिर दो बार चुपचाप आचमन करे । तदनन्तर कन्याका पिता कांसीके पात्रमें दही शहत घृत इन तीन वस्तुओंको मिलाकर दूसरे कांसीके पात्रद्वारा उस पात्रको ढककर हाथमें ले 'ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः' ऐसा पाधाके कहनेपर 'ॐ मधुपर्क प्रतिगृह्यताम्' ऐसा दाता (यजमान) कहे । फिर 'ॐ मधुपर्क प्रतिगृह्णामि' इस प्रकार वर कहे । तत्पश्चात् 'ॐ मित्रस्य

वरो वदेत् ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे इति यजमानकरस्थमेव निरीक्ष्य ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामीत्यनेन मधुपर्कं गृहीत्वा वामहस्ते कृत्वा ॐ नमः श्यावास्यायान्नशने यत्त आविद्धं तत्ते निष्कृतामीत्यनामिकयांगुष्ठेन च त्रिः प्रदक्षिणमालोड्य अनामिकांगुष्ठाभ्यां भूमौ किंचिन्निक्षिपेत् पुनस्तथैव द्विः प्रत्येकं क्षिपेत् ततो वरः ॐ यन्मधुन इति कुत्स ऋषिर्मधुपर्को देवता जगती छंदो मधुपर्कप्राशने विनियोगः। ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि इत्यनेन वारत्रयं मधुपर्कप्राशनम्। प्रतिप्राशने चैतन्मंत्रपाठः। ततो मधुपर्कशेषमसंचरदेशे धारयेत्। ततो द्विराचम्य

त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे' ऐसा कहकर यजमानके हस्तस्थित मधुपर्कको देख आगे लिखे हुए 'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि' इस मन्त्रद्वारा कन्याके पिताके हाथसे मधुपर्कको लेकर बायें हाथमें रक्खे। फिर दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे आगे लिखे 'ॐ नमः श्यावास्यायान्नशने यत्त आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि। इस मन्त्र द्वारा उन पात्रस्थ घृत, मधु, दधि इनको तीन बार मिलावें और फिर उसमेंसे यत्किंचित् पृथ्वीमें गिरा देवे। फिर दो बार थोडा थोडा पृथ्वीपर गिराने अनन्तर हाथमें जल लेकर आगे लिखे 'ॐ यन्मधुन इति कुत्सऋषिर्मधुपर्को देवता जगती छन्दो मधुपर्कप्राशने विनियोगः' इस वाक्यसे विनियोग छोडे। इसके पश्चात् आगे लिखे हुए 'ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि' इस मन्त्रसे तीन बार उस मधुपर्कका प्राशन करे, किन्तु मन्त्रको प्रत्येक प्राशनके समय उच्चारण करना चाहिये। फिर शेष रहे मधुपर्कको किसी एकान्त स्थानमें रख देवे। पश्चात् दो बार आचमन करे। तदनन्तर 'ॐ वाङ् म आस्येऽस्तु'

ॐ वाङ् म आस्येऽस्तु ॐ नसोर्मे प्राणोस्तु. ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु ॐ ऊर्वोर्मे ओजोस्तु ॐ अरिष्टानि मेऽगानि तनूस्तन्वा मे सहसंतु इत्यास्यादिप्रत्येकं सर्वगात्राणि स्पृष्ट्वा ॐ गौर्गौर्गौरित्यनेनाभिहिते यजमानेन प्रत्युक्ते ततो वरः ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः । प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामादितिं वधिष्ट मम चामुष्य पाप्मा हतः ॐ उत्सृजत तृणान्यत्विति तृणं छिंद्यात्ततो वेदिकायां तुषकेशशर्करादिरहितायां हस्तमात्रपरिमितायां चतुरस्रां भूमिं कुशैः परिसमुह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्फ्येन स्रुवेण वा प्रागग्रप्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणाना-

यह मन्त्र उच्चारण करके दाहिने हाथसे सुखका स्पर्श करे । ' ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु ' यह मन्त्र उच्चारण करके नासिकाके दोनों छिद्रोंको स्पर्श करें । ' ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ' यह मन्त्र उच्चारण करके दोनों आखोंको स्पर्श करे । ' ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ' यह मन्त्र उच्चारण करके दोनों कानोंको स्पर्श करे । ' ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु ' यह मन्त्र उच्चारण करके हाथोंका स्पर्श करे । ' ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ' यह मन्त्र उच्चारण करके जँघाओंका स्पर्श करे । ' अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सहसन्तु ' यह मन्त्र उच्चारण पूर्वक सुखसे आरंभ करके समस्त शरीरका स्पर्श करे । फिर ' ॐ गौर्गौर्गौः ' यजमानके ऐसा कहने पर वर आगे लिखे ' ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः । प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं वधिष्ट मम चामुष्य पाप्मा हनः ॐ उत्सृजत ' इसमन्त्रको उच्चारण करके तिनकेको तोडकर डाल देवे । फिर भुस्सी, केश, धूरि, कंकडा इत्यादि रहित एक हाथकी बराबर बनाई हुई चौकोन वेदीको तीन कुशाओंसे शोधन करे । और फिर उन कुशाओंको ईशानकोनमें डाल देवे । तदनन्तर, गोबरसे वेदीको लीपकर स्फ्य नामक यज्ञपात्र अथवा स्रुवेसे पूर्वको अग्र भाग-

मिकांगुष्ठाभ्यामुपांशु उद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य तत्र तूष्णीं कांस्यपात्रस्थं वह्निमग्निकोणादानीय प्रत्यङ्मुखमुपसमाधाय तद्रक्षार्थं किंचिन्नियुज्य कौतुकागाराद्वरः कन्यामानीय मंडपे उपविश्य ॐ जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवाकृष्टीनामभिशस्तिपा वा शतं जीवाम शरदः सुवर्चा रयिं च पुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः इति पठित्वा परिधानवस्त्रं तस्यै ददाति वरः ततः ॐ या अकृतन्न वयं या अतन्वता याश्च देवी-स्तंतूनभितो ततंथ तास्त्वा देवीर्जरसे संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः इति पठित्वोत्तरीयं ददाति ततो वरः ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि शतं च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोष-

---

वाली दक्षिणसे उत्तर उत्तरकी तरफको, तीन रेखा खैंचे । रेखा खैंचनेके क्रमानुसार दहिने हाथकी अनामिका तथा अंगुष्ठ इन दो अंगुलियों द्वारा (उन रेखाओंसे) मिट्टी उठाकर ईशानकोनमें फेंक देवे । फिर जल लेकर रेखाओंपर छिडकना चाहिये । पीछे चुपचाप कांसीके पात्रमें अग्नि लेकर अग्निकोनके मार्गसे वेदीके समीप आकर अग्निको पश्चिमाभिमुख वेदीमें स्थापन करे । फिर उस अग्निकी रक्षाके लिये किसीको नियुक्त कर कौतुकागारसे वर उस कन्याको लाकर मण्डपमें बैठे । अनन्तर आगे लिखे हुए ' ॐ जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवाकृष्टीनामभिशस्तिपा वा शतं जीवाम शरदः सुवर्चा रयिं च पुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः ' इस मन्त्रको उच्चारण करके उस कन्याको पहरनेके वस्त्र प्रदान करे । तत्पश्चात् आगे लिखे ' ॐ या अकृतन्न वयं या अतन्वता याश्च देवीस्तन्तूनभितो ततंथ तास्त्वा देवीर्जरसे संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः ' इस मन्त्रका उच्चारण करके कन्याको उत्तरीय वस्त्र प्रदान करना चाहिये । फिर वर आगे लिखे ' ॐ परिधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मिशतञ्च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पो-षमभिसंव्ययिष्ये ' इस मन्त्रको उच्चारण करके अपने आपभी अधोवस्त्र

मभिसंव्ययिष्ये इति पठित्वा अधोवस्त्रं वरः द्यावापृथिवी यशसेंद्राबृहस्पती यशो भगश्च माविंदद्यशो मा इति पठित्वोत्तरीयं परिदधाति वरः ततो वरस्य कन्यायाश्च ततः कन्याप्रदेन परस्परं समंजेथां इति प्रेषणं कन्यावरयोः परस्पराभिमुखीकरणं ॐ समंजंतु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ संमातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातु नौ इति वरः पठति ततः कन्याप्रदकर्तृकं ग्रंथिबंधनम् । बंधनं कन्यावरयोः । अथ हस्तलेपनं शाखोच्चारणम् अथ कन्यादानम् । दाता शंखस्थदूर्वाक्षितफलपुष्पचंदनजलान्यादाय जामातृदक्षिणकरोपरि कन्यादक्षिणकरं निधाय ॐ दाताहं वरुणो राजा द्रव्यमादित्यदेवतं वरोसौ विष्णुरूपेण प्रतिगृह्णात्वयं विधिः इति पठित्वा गोत्रोच्चारणं कुर्यात् । ॐ अद्यामुकमासीयामुकपक्षीयामुकतिथौ अमुकवासरे अमुक-

(धोती इत्यादि) धारण करे । तत्पश्चात् आगे लिखे 'ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती यशो भगश्च माविंदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्' इस मन्त्रको बोलकर वर उत्तरीयवस्त्र धारण करे । फिर वर और कन्या दो दो आचमन करें फिर कन्याका पिता वर और कन्याको परस्पर सन्मुख (आमने सामने) बैठाकर उन दोनोंको परस्पर एक दूसरेके देखनेकी आज्ञा देवे । उस काल वर आगे लिखे 'ॐ समंजन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ संमातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातु नौ' इस मन्त्रको पाठ करे । फिर कोई कन्यापक्षीय पाधा अथवा पुरोहित कन्या और वरका ग्रन्थिबन्धन (गँठजोडा) करे । अनन्तर कन्या और वरके हाथोंमें हलदी लेपन पूर्वक दोनों पक्षके पुरोहित या पाधा शाखोचार करें । फिर यजमान कन्या दान करे । कन्याका पिता शंखमें दुर्वाक्षत फल पुष्प चंदन तथा जल रखकर जामाताके दाहिने हाथ पर कन्याका दाहिना हाथ रख 'ॐ दाताहं वरुणो राजा द्रव्यमादित्यदेवतं वरोऽसौ विष्णुरूपेण प्रतिगृह्णात्वयं विधिः' यह मन्त्र पाठ पूर्वक गोत्रोच्चारण करे । कन्यादानका संकल्प । यथा; ॐ अद्यामुकमासीयामुकपक्षीयामुकतिथौ अमुक-

मुकप्रवरस्यामुकशर्म्मणः प्रपौत्राय अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्या-
शर्मणः पौत्राय अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पुत्राय अमु-
कगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः प्रपौत्रीम् । अमुकगोत्रस्यामुकप्रव-
रस्यामुकशर्मणः पौत्रीम् । अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः
पुत्रीम् इत्यनेन क्रमेण त्रिरावर्त्य पठनीयम् । अमुकगोत्राय अमुकप्रव-
राय अमुकशर्मणे वराय अमुकगोत्रां अमुकप्रवरां अमुकनाम्नीं इमां
कन्यां सालंकारां प्रजापतिदैवत्यां स्वर्गकामः पत्नीत्वेन तुभ्यमहं संप्र-
ददे ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रति-
गृह्णातु इति वरः पठेत् ततः कन्याप्रदः ॐ अद्य कृतैतत्कन्यादानप्रति-
ष्ठार्थं इदं सुवर्णमग्निदैवतं अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकशर्मणे

वासरे अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः प्रपौत्राय[1] अमुकगोत्रस्यामुकप्रव-
रस्यामुकशर्मणः पौत्राय । अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पुत्राय अमुक-
गोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः प्रपौत्रीम् । अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकश-
र्मणः पौत्रीम् । अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पुत्रीम् । इत्यनेन क्रमेण
त्रिरावर्त्य पठनीयम् अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकशर्मणे वराय अमुक-
गोत्रां अमुकप्रवरां अमुकनाम्नीमिमां कन्यां सालंकारां प्रजापतिदैवत्यां स्वर्गकामः
पत्नीत्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे ' तब वर ' ॐ स्वस्ति ' कहकर उस कन्यादानको
ग्रहण करे । फिर वर आगे लिखे " ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु "
इस मन्त्रको उच्चारण करे । तत्पश्चात् कन्याका पिता आगे लिखा ' ॐ अद्य
कृतैतत्कन्यादानप्रतिष्ठार्थमिदं सुवर्णमग्निदैवतं अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय

---

१ इस स्थानमें प्रत्येक श्लोकके अन्तमें ' पुत्राय ' तक तीनों पीढीके नामोंके अमुक पदकी जगह गोत्र प्रवर वेद शाखा सूत्रोंके नामोंका उच्चारण करना चाहिये। गोत्रशाखोच्चारण यहां ' त्रिरावर्त्य पठनीयं ' पदका तात्पर्य यह है कि ' अमुक-गोत्रस्या ' से लेकर ' अमुक शर्मणः पुत्रीम् ' यहाँतकका पाठ तीन वार पढकर फिर आगेके संकल्पका उच्चारण करना चाहिये ।

वराय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणां दद्यात्। ॐ स्वस्तीप्रतिवचनम्। गोमिथुनं वा दद्यात् ॐ कोदात्कस्मा अदात्कामोदात्कामायादात्। कामो दाता कामः प्रतिगृहीता कामैतत्ते इति वरः पठेत् ततस्तां पाणौ गृहीत्वा ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशोनुपवमानो वा हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु। श्रीअमुकदेवी इति पठन्निष्क्रामति। ततो वेदिदक्षिणस्यां दिशि वारिपूर्णदृढकलशं ऊर्द्ध्वं तिष्ठतो मौनिनः पुरुषस्य स्कंधे अभिषेकपर्यंतं धारयेत्। ततः परस्परं समीक्षेथां इति कन्याप्रदप्रैषानंतरं ॐ अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः वीरसूर्देवकामा स्योना शं नो भवद्विपदे शं चतुष्पदे। सोमः प्रथमो

अमुकशर्मणे वराय दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे यह संकल्प उच्चारण करके सुवर्ण या गोमिथुन (एक गाय एक बैल) वरको दक्षिणास्वरूप देवे। तब उसको भी वर ' ॐ स्वस्ति ' ऐसा कहकर ले लेवे। जिसके अन्तर्गत है ऐसे संकल्पके पीछे वर ' ॐ स्वस्ति ' उच्चारण करके ' ॐ द्यौस्त्वा ' मन्त्रका पाठ करे। फिर कन्यादान करनेवाला पिता संकल्पपूर्वक अपने सामर्थ्यके अनुसार सुवर्ण अथवा एक गौ और एक बैल वरके निमित्त कन्यादानकी दक्षिणामें प्रदान करे और वर 'ॐ कोदात्' इत्यादि मन्त्रउच्चारण करके उसको ग्रहण कर लेवे। और आगे लिखे ' ॐ कोऽदात्कस्मा अदात् कामोऽदात् कामायादात् कामो दाता कामो प्रतिग्रहीता कामै तत्ते ' इस मन्त्रको पढे। और फिर कन्याके हाथको पकडकर आगे लिखे ' यदैषि मनसा दूरं दिशोनुपवमानो वा हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्महसां करोतु श्रीअमुक देवी ' इस मन्त्रको उच्चारण करता करता फिर वेदीके समीप आवे। फिर वेदीकी दक्षिण दिशामें जलसे भरा हुआ दृढकलश कन्धेपर रखकर चुपचाप एक मनुष्य अभिषेकपर्यन्त खडा रहे। पीछे कन्याका पिता तथा वरको आपसमें एक दूसरेके देखनेकी आज्ञा देवे। तब वर आगे लिखे ' ॐ अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चा वीसूर्देवकामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे सामः प्रथमो

विविदे गंधर्वो विविद उत्तरः। तृतीयोऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः। सोमोददद्गंधर्वाय गंधर्वोददग्नये। रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम्। सा नः पूषा शिवतमा मे रयसा न ऊरू उशती विहर। यस्यामुशंतः प्रहराम शेपं यस्यामुकामा बहवो निविष्ट्यै। इति वरपठितमंत्रांते परस्परं निरीक्षणं ततोऽग्निं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चादग्नेरहतवस्त्रवेष्टितत‍ृणपुलके कटे वा तदुपरि दक्षिणं चरणं दत्त्वा वधूं दक्षिणतः कृत्वा तामुपवेश्य स्वयमुपविश्य वरः पुष्पचन्दनतांबूलवस्त्राण्यादाय ॐ अद्य कर्तव्यविवाहहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनतांम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन

विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः। 'तृतीयोग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः सोमोददद्गन्धर्वाय गन्धर्वोददग्नये रयिं च पुत्रांश्चाददग्निर्मह्यमथो इमाम्। सा नः पूषा शिवतमा मे रयसा न ऊरू उशती विहर यस्यामुशंतः प्रहराम शेपं यस्यामु कामा बहवो निविष्ट्यै' इस मन्त्रको उच्चारण करे और तब दोनों जने परस्पर एक दूसरेको देखें। फिर वधू वर अग्निकी प्रदक्षिणा करे अग्निके पश्चिमकी ओर नवीन वस्त्रसे लपेटे हुए घासके पूले या चटाईके ऊपर दाहिने चरणको रख और वधूको वर अपने दाहिनी ओर बैठाकर आपभी बैठे फिर पुष्प, चन्दन, ताम्बूल, वस्त्र इन वस्तुओंको हाथमें लेकर 'अद्य कर्तव्यविवाहहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन त्वामहं वृणे' ऐसा कहकर ब्राह्मणका वरण करे। तब 'ॐ वृतोऽस्मि' ऐसा ब्राह्मण कहे। फिर 'यथाविहितं कर्म कुरु' ऐसा वरके कहनेपर 'ॐ करवाणि' ऐसा ब्राह्मण कहे तत्पश्चात् अग्निके दक्षिणकी ओर शुद्ध आसन बिछाकर उसपर पूर्वको अग्रभागवाले कुशा बिछाय ब्रह्माको अग्निकी प्रदक्षिणाके क्रमानुसार समीप बुलाय 'त्वं मे ब्रह्मा भव' ऐसा कह उसको उस आसनपर बैठाल देवे फिर 'ॐ अद्य कर्तव्यविवाहकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपाचार्यकर्म कर्तुमगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः

च त्वामहं वृणे इति ब्राह्मणं वृणुयात् । ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् । यथाविहितं कर्म कुरु इति वरणोक्ते ॐ करवाणीति ब्राह्मणो वदेत् । ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य ब्रह्माणमग्निं प्रदक्षिणक्रमेणानीयात्र त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय कल्पितासने उपवेशयेत् । ॐ अद्य कर्तव्यविवाहकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपाचार्यकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् । ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणापूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् । ततः परिस्तरणं बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय आग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यंतं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यंतं ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनंतर्गर्भकुशद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली सम्मार्जनार्थं कुशत्रयं उपयमनार्थं वेणीरूपकुशत्रयं समि-

पुष्पचंदनताम्बूलवासोभिः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे ' इस प्रकार कहकर आचार्यका वरण करे, तब आचार्य ' ॐ वृतोऽस्मि ' ऐसा कहे । फिर प्रणीतापात्रको आगे रखकर जलसे भर देवे और उसको कुशाओंसे ढककर ब्रह्माके मुखको देख अग्निके उत्तरकी ओर कुशाओंपर धर देवे । फिर परिस्तरण करे अर्थात् मुट्ठीभर या सो कुशा लेकर हाथमें लेकर उसके चार भाग करे उनमें पहला भाग अग्निकोनसे ईशानकोनतक, दूसरा भाग ब्रह्माके आसनसे अग्नितक, तीसरा भाग नैर्ऋत्यकोनसे वायुकोनतक और चौथा भाग अग्निसे प्रणीतापर्यन्त बिछा देना चाहिये । अनन्तर अग्निसे उत्तरकी तरफ पश्चिमदिशामें पवित्र छेदनके लिये तीन कुशा रक्खे और पवित्र बनानेके लिये अग्रभाग सहित और बीचमें पत्तेसे रहित अर्थात् जिसके भीतर अन्य कुशपत्र न हों दो कुशापत्र रक्खे । फिर प्रोक्षणीपात्र आज्य स्थाली संमार्जन कुशाओंके लिये तीन कुशा उपयमनके लिये तीन कुशा वेणीरूप रचके रक्खे । तीन

१ प्रचलित पांच कुशा । २ कुशावोंसे लपेट चोटीकी समान आकार बनाकर रक्खे ।

पस्तिस्रः स्रुव आज्यं षट्पंचाशदुत्तरमुष्टिशतद्वयावच्छिन्नतंडुलपूर्णपात्रं पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम् । अथ तस्यामेव दिशि असाधारणवस्तून्युपकल्पनीयानि । तत्र शमीपालाशमिश्रा लाजाः दृषदुपलं कुमारीभ्राता सूर्यः दृढपुरुषः अन्यदपि तदुपयुक्तमालेपनादिद्रव्यम् । ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्त्वा ततः सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय अनामिकांगुष्ठाभ्यां उत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनं ततः प्रोक्षणीपात्रस्य सव्यहस्तेकरणं अनामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिंगनं प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीजलेन यथासादितवस्तुसेचनं ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रनिधानम् । आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः ततोऽधिश्रयणं ततो ज्वलत्तृ-

समिधा स्रुवा आज्य और दो सौ छप्पन मुट्ठी चावलोंसे भरा हुआ पूर्ण पात्र इन सब वस्तुओंको पवित्रछेदनकी कुशाओंसे आगे पूर्वपूर्वकी तरफको क्रमसे रखता जाय। इसके उपरान्त उसी दिशामें इन असाधारण वस्तुओंको भी इकट्ठी करे वे यह है शमी (जंडवृक्ष) की लकडियोंसे युक्त खीलें पत्थर, लडकीका भाई सूप (छाज) कोई एक दृढ पुरुष तथा औरभी उस विवाहकार्यके योग्य आलेपनादि द्रव्य रक्खे। फिर-पवित्र छेदनकी कुशाओंसें पवित्रको छेदन कर पवित्रसहित प्रणीताके जलको हाथमें लेकर तीन वार प्रोक्षणीपात्रमें डाले। फिर दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंके अग्रभागको आगे करके ग्रहण करे। पश्चात् प्रोक्षणीपात्रका जल तीन वार ऊपरको उछाले और प्रोक्षणीपात्रको बाँये हाथमें रखकर दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंको ग्रहण कर तीन बार जलको ऊपर (आकाशकी ओर) सेचन करे। प्रणीता और प्रोक्षणाके जलसे पूर्वस्थापित सब वस्तुओंको सेचन करे तत्पश्चात् उस प्रोक्षणीपात्रको अग्नि और प्रणीताके बीचमें रख देना चाहिये। फिर आज्यस्थालीमें घृत डालकर अग्निपर चढा देवे और पीछे एक कुश बालकर प्रदक्षिण-

ग्गादिना हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिणक्रमेण वह्नौ तत्प्रक्षेपः पर्यग्निकरणं तत स्रुवप्रतपनं कृत्वा सम्मार्जनकुशानामग्रैरंतरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेन अभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य स्रुवं दक्षिणतो निदध्यात् । तत आज्यस्याग्नेरवतारणं तत आज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनं अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं पुनः प्रोक्षण्युत्पवनं ततः उपयमनकुशानादाय उत्तिष्ठन्प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्तास्तिस्रः समिधः क्षिपेत् तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निपर्युक्षणं कृत्वा प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय पातितदक्षिणजानुः कुशेन ब्रह्मणान्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहोति । तत्राघारादारभ्य द्वादशाहुतिषु तत्तदाहुत्यनंतरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ॐ प्रजापतये स्वाहा

क्रमसे घृतके चारों ओर उसको घुमाता हुआ अग्निमें डालदेवे । इसके पीछे पर्यग्निकरण करे अर्थात् स्रुवेको अग्निमें तपाकर संमार्जन कुशाओंके अग्रभागसे स्रुवेके भीतर और मूलभागसे बाहर स्रुवेको शुद्ध कर प्रणीताके जलसे सेचनपूर्वक फिर दूसरी बार तपावे और तब उसको अग्निके दक्षिणकी ओर रख देवे । फिर उस घृतको अग्निसे उतार लेवे तत्पश्चात् आज्यको प्रोक्षणीपात्रकी नाईं पवित्रोंसे उछाले और देखे यदि उसमें कोई मक्खी इत्यादि अपवित्र वस्तु पड़ी हो तो उसको निकालकर फेंक देना चाहिये । फिर प्रोक्षणीपात्रके जलको पवित्रोंसे उछालि तदनन्तर उपयमन कुशाओंको बाँये हाथमें लेकर खडा हो जाय और पूर्व स्थापित तीन समिधाओंको घृतमें भिजोकर ' स्वाहा ' शब्दके साथ मनमें प्रजापतिका ध्यान करके चुपचाप अग्निमें डाल देवे । फिर आसनपर बैठकर पवित्रोंसहित प्रोक्षणीपात्रका जल हाथमें लेकर अग्निके चारों तरफ सेचन करे और फिर पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रख देवे । अनन्तर दाहिनी जानुको नवायकर कुशके द्वारा ब्रह्मासे मिलित हो जलती हुई अग्निमें स्रुवेकी द्वारा घृतकी आहुति देवे । इन आहुतियोंमें आघारआहुतियोंसे लेकर बारह आहुतियों तक स्रुवेमें रहे हुए शेष घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डालता जाय

इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिंद्राय० । इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः । त्वन्नो अग्ने इति वामदेव ऋषिरग्नीवरुणौ देवते त्रिष्टुप्छंदो होमे विनियोगः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उपसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । अयाश्चाग्ने इति वामदेवऋषिरग्निर्देवता त्रिष्टुप् छंदः सर्वप्रायश्चित्तहोमे विनियोगः । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय० । इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः । त्वन्नो अग्ने इति वामदेवऋषिरग्नीवरुणौ देवते त्रिष्टुप् छन्दो होमे विनियोगः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम् । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उपसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्० । अयाश्चाग्ने इति वामदेव ऋषिरग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः सर्वप्रायश्चित्तहोमे विनियोगः ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो

'तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च०। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमᳲ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय०। एताः प्रायश्चित्तसंज्ञकाः। ततोऽन्वारब्धं विना ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते०। ॐ उदकोपस्पर्शनम्। अथ राष्ट्रभृत्यः। ॐ ऋताषाडृतधामाग्निर्गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदमृतासाहे ऋतधाम्नेऽग्नये गंधर्वाय० १। ॐ ऋताषाडृतधामाग्निर्गंधर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमोषधीभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यो० २। ॐ सᳲहितो विश्वसामा

धेहि भेषजᳲ स्वाहा इदमग्नये०। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च०। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधम विमध्यमᳲ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय०। एताः प्रायश्चित्तसंज्ञकाः। ततोऽन्वारब्धं विना ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते०। उदकोपस्पर्शनम्। अथ राष्ट्रभृतः। ॐ ऋताषाडृतधामाग्निगन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्र पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदमृतासाहे ऋतधाम्नेऽग्नये गन्धर्वाय० १। ऋताषाडृतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमोषधीभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यो० २। ॐ सᳲहितो विश्वसामा सूर्यो

---

१ समस्त आहुतियोंके अन्तमें त्याग वाक्य स्वयं वरकोही उच्चारण करना चाहिये। कारण कि इस होममें यजमान वरही है। इन चोदह आहुतियोंके पीछे ब्रह्माके अन्वारब्ध किये विनाही आहुतियें प्रदान करनी उचित है। यहां जिस-जिस-स्थानमें उदकोपस्पर्शन लिखा है वहां वहां दाहिने हाथसे प्रणीताके जलका स्पर्श करना चाहिये।

सूर्य्यो गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं सꣳहिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गंधर्वाय० ३। ॐ सꣳहितो विश्वसामा सूर्यो गंधर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य आयुभ्यो० ४। ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चंद्रमा गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चंद्रमसे गंधर्वाय ०५। ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चंद्रमा गंधर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यो० ६। ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदमिषिराय विश्वव्यचसे वाताय गंधर्वाय० ७। ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गंधर्वस्तस्यापोऽप्सरस ऊर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमद्भ्योऽप्सरोभ्य ऊर्ग्भ्यो० ८। ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गंधर्वाय० ९। ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गंधर्वस्तस्य दक्षिणा अप्सरसस्तावा

गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं सꣳहिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गन्धर्वाय० ३। ॐ सꣳहितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य आयुभ्यो० ४। ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय० ५। ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यो० ६। ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदमिषिराय विश्वव्यचसे वाताय गंधर्वाय० ७। ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वस्तस्यापोऽप्सरस ऊर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमद्भ्योऽप्सरोभ्य ऊर्ग्भ्यो० ८। ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय० ९। ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणा अप्सरसस्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा।

नाम ताभ्यः स्वाहा इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यः स्तावाभ्यो० १० ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गंधर्वाय० ११ । ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गेधर्वस्तस्य ऋक्सामान्यप्सरस एष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमृक्सामभ्योऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यो० १२ । इति राष्ट्रभृतः । अथ जयाहोम । ॐ चित्तं च स्वाहा इदं चित्ताय० । ॐ चित्तिश्च स्वाहा इदं चित्त्यै० । ॐ आकूतं च स्वाहा इदमाकूताय० । ॐ आकूतिश्च स्वाहा इदमाकूत्यै० । ॐ विज्ञातं च स्वाहा इदं विज्ञाताय० । ॐ विज्ञातिः स्वाहा इदं विज्ञात्यै० । ॐ मनश्च स्वाहा इदं मनसे० । ॐ शक्करीश्च स्वाहा इदं शक्करीभ्यो० । ॐ दर्शश्च स्वाहा इदं दर्शाय० । ॐ पौर्णमासं च स्वाहा इदं पौर्णमासाय० । ॐ बृहच्च स्वाहा इदं बृहते० । ॐ रथंतरं च स्वाहा इदं रथंतराय० । ॐ प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे

इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यः स्तावाभ्यो० १० । ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय० ११ । ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वस्तस्य ऋक्सामान्यप्सरस एष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमृक्सामभ्योऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यो० १२ । इति राष्ट्रभृतः । अथ जयाहोमः । ॐ चित्तं च स्वाहा इदं चित्ताय० । ॐ चित्तिश्च स्वाहा इदं चित्त्यै० । ॐ आकूतं च स्वाहा इदमाकूताय । ॐ आकूतिश्च स्वाहा इदमाकूत्यै० । ॐ विज्ञातं च स्वाहा इदं विज्ञाताय० । ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा इद विज्ञात्यै० । ॐ मनश्च स्वाहा इदं मनसे० । ॐ शक्करीश्च स्वाहा इदं शक्करीभ्यो० । ॐ दर्शश्च स्वाहा इद दर्शाय० । ॐ पौर्णमासं च स्वाहा इदं पौर्णमासाय० । ॐ बृहच्च स्वाहा इदं बृहते० । ॐ रथन्तरञ्च स्वाहा इद रथं-

१ राष्ट्रभृत नामक होमकी बारह आहुति, जया होमकी तेरह, अभ्यातान होमकी अठारह, पांच और यह सब मिलाकर बासठ आहुतियां विवाह-संबंधी होम कहलाता है।

प्रायच्छदुग्रः पृतनाज्येषु तस्मै विशः समनमंत सर्वाः स उग्रः स इहव्यो बभूव स्वाहा इदं प्रजापतये जयानिंद्राय० । इति जयाहोमः । उदकोपस्पर्शनम् । अथाभ्यातानहोमः । ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः स मावत्वास्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या॰ स्वाहा इदमग्नये भूतानामधिपत० । ॐ इंद्रो ज्येष्ठानामधिपतिः स मावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिक्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या॰ स्वाहा इदमिंद्राय ज्येष्ठानामधिपतये० । ॐ यमः पृथिव्या अधिपतिः स मावत्वास्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामास्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या॰ स्वाहा इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये० । अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः । ॐ वायुरंतरिक्षस्याधिपतिः [redacted] मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या॰ स्वाहा इदं वायवेंऽतरिक्षस्याधिपतये० । ॐ सूर्यो दिवोधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे स्यामाशि-

---

तराय० । ॐ प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णो प्रायच्छदुग्रः पृतना जयेषु तस्मै विशः समनमंत सर्वाः स उग्रः सह हव्यो बभूव स्वाहा । इदं प्रजापतये जयानिंद्राय० । इति जयाहोमः । उदकोपस्पर्शनम् । अथाभ्यातानहोमः । ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः स मावत्वास्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या॰ स्वाहा इदमग्नये भूतानामधिपतये० । ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः स मावत्वास्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामास्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या॰ स्वाहा इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये०-। ॐ यमः पृथिव्या अधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामास्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या॰ स्वाहा इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये०। अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः। ॐ वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या॰ स्वाहा इदं वायवेंऽतरिक्षस्याधिपतये० । ॐ सूर्यो दिवोधिपतिः स मावत्वास्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधा-

ष्यस्या पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याᳪ स्वाहा इदं सूर्याय धिपतये०। ॐ चंद्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याᳪ स्वाहा इदं चंद्रमसे नक्षत्राणामधिपतये०। ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याᳪ स्वाहा इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये०। ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्यण्यस्यां देवहूत्याᳪ स्वाहा इदं मित्राय सत्यानामधिपतये०। ॐ वरुणोऽपामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याᳪ स्वाहा इदं वरुणायापामधिपतये०। ॐ समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याᳪ स्वाहा इदं समुद्राय स्रोत्यानामधि-

---

यामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याᳪ स्वाहा इदं सूर्याय दिवोधिपतये। ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याᳪ स्वाहा इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये०। ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मणोधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां। पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याᳪ स्वाहा इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये०। ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याᳪ स्वाहा इदं मित्राय सत्यानामधिपतये०। ॐ वरुणोऽपामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याᳪ स्वाहा इदं वरुणायापामधिपतये०। ॐ समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां

तपये० । ॐ अन्नः साम्राज्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याः स्वाहा इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये० । ॐ सोम ओषधीनामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याः स्वाहा इदं सोमायौषधीनामधिपतये० । ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याः स्वाहा इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये० । ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याः स्वाहा इदं रुद्राय पशूनामधिपतये० । अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः । ॐ त्वष्टा रूपाणामधिपतिः स मावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याः स्वाहा इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये० । ॐ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्

देवहूत्याः स्वाहा इदं समुद्राय स्रोत्यानामधिपतये० । ॐ अन्नः साम्राज्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याः स्वाहा इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये० । ॐ सोम ओषधीनामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याः स्वाहा इदं सोमायौषधीनामधिपतये० । ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याः स्वाहा इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये० । ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याः स्वाहा इदं रुद्राय पशूनामधिपतये० अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः। अथ त्वष्टा रूपाणामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुराधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याः स्वाहा इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये० । ॐ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्ष-

क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या॰ स्वाहा इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये॰ । ॐ मरुतो गणानामधिपतयस्ते मावन् त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या॰ स्वाहा इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो॰ । ॐ पितरः पितामहाः परे वरे ततास्ततामहा इहमावन् त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या॰ स्वाहा इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्यो वरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यो॰ । अत्र प्रणीतोदकोपस्पर्शनम् । इत्यभ्याताननामकम् । ॐ अग्निरेतु प्रथमो देवतानाᳬ सोऽस्यै प्रजां मुंचतु मृत्युपाशात् । तदयᳬ राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेयᳬ स्त्री पौत्रमघन्नरोदात्स्वाहा इदमग्नये॰ । ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः । अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानंदमभिविबुध्यतामियᳬ स्वाहा इदमग्नये॰ । ॐ स्वस्ति नो अग्ने दिवा पृथिव्या विश्वानि धेह्ययथा यजत्र । यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं

त्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याᳬ स्वाहा इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये॰ । ॐ मरुतो गणानामधिपतयस्ते मावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याᳬ स्वाहा इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो॰ । ॐ पितरः पितामहाः परे वरे ततास्ततामहा इह मावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याᳬ स्वाहा इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्यो वरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यो॰ । अत्र प्रणीतोदकोपस्पर्शनम् । इत्यभ्याताननामकम् । ॐ अग्निरेतु प्रथमो देवतानाᳬ सोऽस्यै प्रजां मुंचतु मृत्युपाशात् । तदयᳬ राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेयᳬ स्त्री पौत्रमघन्नरोदात्स्वाहा इदमग्नये॰ । ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः । अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानंदमभिविबुध्यतामियᳬ स्वाहा इदमग्नये॰ । ॐ स्वस्ति नो अग्ने दिवा पृथिव्या विश्वानि धेह्ययथा यजत्र । यदस्यां महि

धेहि चित्रᳬ स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सुगंनुपंथां प्रविशन्न एहि ज्योतिष्मद्धेह्यजरन्न आयुः। अपैतु मृत्युरमृतं म आगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु स्वाहा इदं वैवस्वताय०। अत्र प्रणीतोदकस्पर्शनम्। तत अंतःपटं ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पंथां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मानः प्रजाᳬ रीरिषो मोतवीरान् स्वाहा इदं मृत्यवे०। अत्र प्रणीतोदकोपस्पर्शनम्। ततो वधूमग्रतः कृत्वा वरो वधूश्च द्वावपि प्राङ्मुखौ स्थितौ भवतः ततो वरांजलिपुटोपरि संलग्नवध्वंजलिस्थघृताभिघारितवधूभ्रातृदत्तशमीपालाशमिश्रैर्लाजैर्वधूकर्तृको मंत्रपाठपूर्वको होमः। तत्र मंत्राः अर्यमणमित्याथर्वण ऋषिरग्निर्देवतानुष्टुप्छंदो लाजाहोमे विनियोगः। ॐ अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत। स नो अर्यमा देवः प्रेतो मुंचतु मापते स्वाहा इदमर्यम्णे देवाय०। ॐ इदं नार्यु-

---

दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रᳬ स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सुगंनुपंथां प्रविशन्न एहि ज्योतिष्मद्धेह्यजरन्न आयुः। अपैतु मृत्युरमृतं म आगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु स्वाहा इदं वैवस्वताय०। अत्र प्रणीतोदकस्पर्शनम्। अब यहां वधूको परदेमें करके आगे लिखे 'ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पंथां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मानः प्रजाᳬ रीरिषो मोतवीरान्स्वाहा इदं मृत्यवे न मम। इस मन्त्रसे आहुति देवे। फिर प्रणीतापात्रके जलको छू लेवे। अनन्तर वधूको आगे करके वर वधू दोनों जने पूर्वाभिमुख खडे हो जांय। फिर वरकी अंजलीके ऊपर संलग्न वधकी अंजलीमें घीसे अभिघारित शमीके पत्तोंसे मिश्रित लाजा (खीलें) वधूका भाई (छाजके कोनों द्वारा) भरे, तब वधू आगे लिखे 'अर्यमणमित्यथर्वण ऋषिरग्निर्देवतानुष्टुप् छन्दो लाजाहोमे विनियोगः' इस वाक्यको बोलकर विनियोग छोडे और फिर वधू अपने हाथमें पहले रक्खी हुई घृतसेचनपूर्वक शमी पलाशमिश्रित खीलोंकी आहुति आगे लिखे 'ॐ अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत स नो अर्यमा देवः प्रेतो मुंचतु मापते स्वाहा इदमर्यम्णे देवाय न मम। ॐ इदं नार्युपब्रूते लाजानावप-

पत्नूते लाजानावपंतिका आयुष्मानस्तु मे पतिरेधंतां ज्ञातयो मम स्वाहा इदमग्नये० । ॐ इमां साल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियᳪस्वाहा इदमग्नये० । ततो वरो वधूदक्षिणहस्तं सांगुष्ठं गृह्णाति । ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथा सः । भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्म्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः । अमोहमस्मि सा त्वᳪ सा त्वमस्य मो अहं सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वं तावेहि विवहावहै सह रेतो दधावहै प्रजां प्रजनयावहै पश्येम पुत्रान् विंद्यावहै बहूंस्ते संतु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतᳪ शृणुयाम शरदः शतमिति मंत्रेण । अथ वधूमग्नेरुत्तरतः प्राङ्मुखः पूर्वोपकल्पितं दृषदुपलं दक्षिणपादेनारोहयति वरः । ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्वᳪ स्थिरा भव । अभितिष्ठ पृतन्य-

---

न्तिका आयुष्मानस्तु मे पतिरेधंतां ज्ञातयो मम स्वाहा । इदमग्नये न मम । ॐ इमां लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियᳪस्वाहा इदमग्नये न मम । इन तीनों मन्त्रोंसे देवे प्रत्येक मन्त्रके अन्तमें खडी हुई वधूके हाथसे तृतीयांश खीलोंकी आहुति खडा हुआ वर डाले, त्याग वाक्यभी स्वयं वधूकोही बोलना चाहिये । तत्पश्चात् अंगुष्ठसहित वधूके दाहिने हाथको पकडकर वर आगे लिखे 'ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथा सः । भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः । अमोहमस्मि सा त्वᳪ सा त्वमस्यमो अहं सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वं तावेहि विवहावहै सह रेतो दधावहै प्रज प्रजनयावहै पुत्रान्विन्द्यावहै बहूंस्ते संतु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतᳪ शृणुयाम शरदः शतम् । ' इन चार मन्त्रोंको पाठ करे । तदनन्तर अग्निसे उत्तरमें पूर्वाभिमुख खडा हुआ वर पहलेसे रक्खी हुई पत्थरकी शिलापर अपने बाँये हाथसे वधूका दाहिना पैर रखवाता हुआ ' ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्वᳪ स्थिरा भव अभितिष्ठ पृतन्यतोवबाधस्व पृतनायतः ' यह

ोविबाधस्व पृतनायतः। इति मंत्रेण आरूढायामेव तस्यां वरो गाथां गायति ॐ सरस्वती प्रेदमव सुभगे वाजिनीवती यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः। यस्या भूतः समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत् तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः। ततोऽग्रे वधूः पश्चाद्वरः प्रणीताब्रह्म-सहितमग्निप्रदक्षिणं कुरुतः तत्र वरपठनीयो मंत्रः। ॐ तुभ्यमग्रे पर्य्य-हवन् सूर्यां वहतुना सह। पुनः पतिभ्यो जायांदा अग्नेप्रजया सह ततः पश्चादग्नेः स्थित्वा लाजाहोमसांगुष्ठहस्तग्रहणाश्मारोहणगाथागानाग्नि-प्रदक्षिणाः पुनरपि तथैव एतेनैव लाजाहुतयः सांगुष्ठहस्तग्रहणत्रयम्। गाथागानत्रयं प्रदक्षिणत्रयं संपद्यते। ततोवशिष्टलाजैः कन्याभ्रातृदत्तैरं-जलिस्थशूर्पकोणेन वधूर्जुहोति ॐ भगाय स्वाहा इदं भगाय०।

मन्त्र पढे फिर वधूके शिला पर पैर रक्खे रहतेही वर आगे लिखो 'ॐ सर-स्वती प्रेदमव सुभगे वाजिनीवती। यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रत यास्यां भूतः समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत्। तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणा-मुत्तमं यशः' इस गाथाको गावे। गाथा गानेके पश्चात् वधू आगे और वार पीछे चलते हुए प्रणीतापात्र तथा ब्रह्माके सहित अग्निकी प्रदक्षिणा करे चलता हुआ वर आगे लिखे 'ॐ तुभ्यमग्रे पर्यवहन् सूर्यां वहतुना सह। पुनः पतिभ्यो जायांदा अग्ने प्रजया सह' इस मन्त्रको पढता जावे। तिसके पीछे अग्निके पश्चिमकी ओर खडे होकर लाजाहोम, अंगुष्ठसहित हस्तग्रहण शिलापर आरोहण, गाथागान और अग्निकी प्रदक्षिणा इन सब कामोंको उन उन उक्त मन्त्रोंसे तीसरी चौथी वार भी वैसा वैसाही करे। ऐसा करनेपर लाजाकी नौ आहुति हो जाती हैं तथा सांगुष्ठ हस्तग्रहण, गाथागान और प्रद-क्षिणा तीन तीन हो जाती हैं। फिर तीसरी परिक्रमाके अनन्तर कन्याका भाई छाजके कोनेसे शेष रहे सब खीलोंको वहनकी अंजलीमें डाल देवे और वधू 'ॐ भगाय स्वाहा इदं भगाय०' मन्त्र पढकर एकही वारमें आहुति प्रदानपू-

चतुर्थ भ्रमणं तूष्णीं अग्रे वरः पश्चात् वधूः ततस्तूष्णीं परिक्रमणम्। ततो वरः उपविश्य ब्रह्मणान्वारब्धः आज्येन प्राजापत्यं जुहुयात्। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इतिमनसा। अत्र प्रोक्षणीपात्रे हुतशेषाज्यप्रक्षेपः। तत आलेपनेनोत्तरोत्तरकृतसप्तमंडलेषु सप्तपदाक्रमणं वरः कारयन् वक्ष्यमाणमंत्रैः। तत्र प्रथमे एकमिषे विष्णुस्त्वां नयतु। द्वितीये द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वां नयतु। तृतीये त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वां नयतु। चतुर्थे चत्वारिमायो भवाय विष्णुस्त्वां नयतु। पंचमे पंचपशुभ्यो विष्णुस्त्वां नयतु। षष्ठे षड्ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वां नयतु। सप्तमे सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वां नयतु ततोऽग्नेः

र्वक आगे वर पीछे वधू चलतेहुए विना मन्त्र पढे चुपचाप चौथी परिक्रमा करे। फिर वर बैठ जाय और ब्रह्मासे मिलकर आगे लिखे " ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम " इति मनसा। इस मन्त्रसे प्राजापत्य आहुति देवे। इस आहुतिके देनेपर स्रुवेमें शेष रहे हुए घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डाल देवे। फिर वेदीके उत्तरकी ओर लीपकर उत्तर उत्तरको सात मण्डल बनावे और उन सातोंमें एक एक वार वर वधूका चरण स्पर्श कराता हुआ आगे लिखे हुए मन्त्रोंको उच्चारण करे (प्रथम मण्डलमें चरण स्पर्श करनेका मन्त्र) ' एकमिषे विष्णुस्त्वां नयतु ' (दूसरे मंडलका) ' ऊर्जे - विष्णुस्त्वां नयतु ' (तीसरे मण्डलका मन्त्र) ' त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वां नयतु ' (चौथे मण्डलका मन्त्र) ' चत्वारिमायो भवाय विष्णुस्त्वां नयतु ' (पाँचवें मण्डलका मन्त्र) ' पञ्चपशुभ्यो विष्णुस्त्वां नयतु ' (छठे मण्डलका मंत्र) ' षड्ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वां नयतु ' (सातवें मण्डलका मन्त्र) ' सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वां नयतु ' फिर अग्निके पश्चिमकी तरफ बैठकर पूर्व

---

१ देशाचार तथा कुलाचारादिके अनुसार सात परिक्रमाभी वेदविरुद्ध नहीं हैं। क्योंकि वेदोक्त चारकी बाधक सात नहीं किंतु सातके अंतर्गत चारको समझना चाहिये।

पश्चादुपविश्य पुरुषस्य स्कंधे स्थितकुंभादाम्रपल्लवेन जलमानीय तेन च वरो वधूमेनां मूर्द्धन्यभिषिंचति ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शांताः शांततमास्तास्ते कृण्वंतु भेषजमिति पुनस्तथैवानीतजलेनात्मानमभिषिंचति। आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः। इति तिसृभिः। अथैनां सूर्यमुदीक्षस्वेति ॐ तच्चक्षुरित्यनेन मंत्रेण वधूः सूर्यं पश्यति अस्तमिते सूर्ये ध्रुवमुदीक्षस्वेति पतिप्रेषानंतरं ध्रुवं पश्यति तत्र पठनीयो मंत्रः ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्यामपि मयि मह्यं त्वादद्बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती संजीव शरदः शतमिति पृष्टा सा यदि न पश्यति तथापि पश्यामीति ब्रूयात्

स्थापित पुरुषके कंधेपर रक्खे हुए कलशमेंसे आमके पत्ते द्वारा जल लेकर वर वधूके शिरमें आगे लिखे ' ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वंतु भेषजम् ' इस मन्त्रसे सेचन करे। तत्पश्चात् उसी प्रकार और उसी कलशसे आमके पत्ते द्वारा जल लेकर आगे लिखे ' आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ' इस मन्त्रसे अपने मस्तकमें सेचन करे। तदनन्तर वरके ' सूर्यमुदीक्षस्व ' ऐसा कहनेपर ' ॐ तच्चक्षुर्देव हितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ' इस मन्त्रको पढती हुई वधू सूर्यनारायणका दर्शन करे। यदि रात्रिकालमें विवाह हो तो वरके 'ध्रुवमुदीक्षस्व ' ऐसा कहनेपर ' ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधिपोष्या मयि मह्यन्त्वादद्बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती संजीव शरदः शतम् ' इतना मन्त्र

ततो वरो वधूदक्षिणांसोपरि हस्तं नीत्वा तस्या हृदयमालभेत् मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु मम वाचमेकमनाजुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यमिति मंत्रेण । अथैनामभिमंत्रयति वरः । ॐ सुमङ्गलीरियं वधूरिमाः समेत पश्यत । सौभाग्यमस्यै दत्त्वा याथास्तं विपरेतन इति मंत्रेण । अथ वधूं बलवान् कश्चिद्ब्राह्मण उत्थाय प्रागुदग् वानुगुप्तागारे लोहितानडुहचर्मणि प्रतिलोमास्तीर्णे उपवेशयेत् वरो वा ॐ इह गावो निषीदंत्विहाश्वा इह पूरुषाः । इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञ इह पूषा निषीदात्विति मंत्रेण । अथ स्विष्टकृद्धोमः । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० । स्रुवावशिष्टाज्यस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । अयं च होमो ब्रह्मणान्वारब्धकर्तृकः । तत आच-

पढती हुई वधू ध्रुवतारेका दर्शन करे यदि ध्रुव न दिखाई देवे तोभी वरके पूछने पर ' देखतीहूँ ' ऐसा ही वधू कहे । तदनन्तर वर वधूके दाहिने कांधे परसे हाथ लेजाकर आगे लिखे ' ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु मम वाचमेकमनाजुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ' इस मन्त्रको पढकर वधूके हृदयको स्पर्श करे । फिर वधूकी ओर देखता हुआ वर ' ॐ सुमङ्गलीरियं वधूरिमाः समेत पश्यत । सौभाग्यमस्यै दत्त्वा यथास्तं विपरेतन ' इस मन्त्रसे उसको अभिमन्त्रण करे । तत्पश्चात् कोई एक बलवान् ब्राह्मण अथवा वर वधूको उठाकर पूर्व तथा उत्तरकी ओरसे आच्छादित गुप्त घरमें लाल रँगके बैलका चर्म[1] उलटा बिछाकर उस पर वधूके आगे लिखा ' ॐ इह गावो निषीदंत्विहाश्वा इह पूरुषाः । इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञ इह पूषा निषीदतु ' यह मन्त्र पढकर बैठाल देवे । इसके उपरान्त स्विष्टकृत् होम कराना चाहिये । होम करनेका मन्त्र यथाः ' ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम' । यहा स्रुवेमें बचेहुए घृतको प्रोक्षणीपात्रमें गिरावे । यह आहुतिभी

१ लाल रँगके वृषभचर्मके स्थानमें माय लाल टूल बिछा दी जाती है ।

म्य संस्रवप्राशनम् । अथाचम्य ॐ अद्य कृतैतद्विवाहहोमकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति ब्रह्मणे दक्षिणां दद्यात् । स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॐ अद्य कृतैतद्विवाहहोमकर्म्मणि आचार्यकर्मप्रतिष्ठार्थं इदं हिरण्यमग्निदैवतद्रव्यम् यथानामगोत्रायाऽमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ततो ब्रह्मग्रंथिविमोकः । ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः संतु इति पवित्रे गृहीत्वा प्रणीताजलेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः इत्यैशान्यां प्रणीतां न्युब्जीकुर्यात् । तत आस्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्यं हस्तेनैव बर्हिर्होमः । तत्र मंत्रः ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत

ब्रह्मासे मिलकरही दीजातीहै । फिर आचमन करके संस्रवप्राशन अर्थात् प्रोक्षणीपात्रके जलका प्राशन करना चाहिये । अनन्तर दूसरी बार फिर आचमन करे और फिर आगे लिखे ' ॐ अद्य कृतैतद्विवाह होमकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ' इस संकल्पको उच्चारण पूर्वक पूर्णपात्रका दान करके ब्रह्माको दक्षिणा देवे तब ब्रह्मा ' ॐ स्वस्ति ' कहकर उसको ले लेवे । पश्चात् आगे लिखे ' ॐ अद्य कृतैतद्विवाहहोमकर्मणि आचार्यकर्मप्रतिष्ठार्थं इदं हिरण्यमग्निदैवतं द्रव्यं यथानामगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ' इस संकल्पके द्वारा आचार्यको भी सुवर्णमयी दक्षिणा देवे और फिर ब्रह्मगांठको खोल देना चाहिये । तदुपरान्त आगे लिखे ' ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु इस मन्त्र द्वारा पवित्रोंसे प्रणीतापात्रका जल लेकर अपने शिरमें मार्जन करे और फिर आगे लिखे 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः' इस मंत्रसे प्रणीतापात्रको ईशानकोनमें उलट देवे । अनन्तर आस्तरणके क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रमसे बिछाये थे, उसीक्रमसे कुशाओंको उठाकर और घीमें बोरकर आगे लिखे ' ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं

इमं देव यज्ञং स्वाहा वाते धाः स्वाहा तत उत्थाय वधूदक्षिणहस्तेन स्रुवस्पृष्टघृतपुष्पफलैः पूर्णाहुतिः । तत्र मंत्रः ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविং सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा । ततः स्रुवेणभस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति ग्रीवायां ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं इति दक्षिणांसे ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि । एवं वध्वा अपि कुर्यात् तन्नो इत्यस्य स्थाने तत्ते इति विशेषः । तत आचारात् शणशंखशमीसुवर्णप्रेरितसिंदूरकरणं वरकर्तृकम् । ततोऽन्यैरपि प्रतिष्ठितस्त्रीपुरुषैः सिंदूरकरणं ग्राम्यवचनं वरः कुर्यात् ग्राम्याः स्त्रियः । अथ वेदीतो मंडपमागत्य दूर्वाक्षतादिग्रहणं

देव यज्ञং स्वाहा वाते धाः स्वाहा ' इस मन्त्रसे अग्निमें होम कर देवे । इसके पीछे वर उठे और वधूका दाहिना हाथ स्रुवेमें स्पर्श करावे और फिर स्रुवेको पुष्प फल घृतसे परिपूर्ण कर आगे लिखे ' ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविং सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा ' इस मन्त्रसे पूर्णाहुति करे । फिर स्रुवेसे होमकी भस्म लेकर अनामिका अंगुलीके अग्रभाग द्वारा त्र्यायुषं करे । उसका क्रम यथा- ' ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः ' इस मन्त्रको उच्चारण करके ललाटमें, ' ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् ' इस मन्त्रको बोलकर गलेमें, ' ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं ' पढकर दक्षिण बाहुमूलमें, और ' ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ' इस मन्त्रका पाठ करके उस भस्मको हृदयमें लगाना चाहिये । फिर इसी प्रकार वधूकेभी त्र्यायुष करे किन्तु वधूके त्र्यायुष करते समय । ' तन्नो अस्तु ' के स्थानमें ' तत्ते अस्तु ' उच्चारण करना चाहिये, यह विशेष है । अनन्तर देशाचारानुसार सन, शंख, शमी, सुवर्ण प्रेरित सिंदूरका लगाना वर करे । फिर अन्यान्य प्रतिष्ठित स्त्री पुरुषभी सिन्दूरको लगावें । पश्चात् वर ग्राम्य वचन उच्चारण करे और ग्राम्यकी स्त्रियांभी ऐसाही करें । फिर वेदीके निकटसे मण्डपमें आनकर दूर्वाक्षतादि (रूप आशीर्वाद)

ततस्त्रिरात्रमक्षारालवणाशिनौ अधःशायिनौ निवृत्तमैथुनौ भवतः प्राङ्मुखौ वधूवरौ स्थितौ भवतः ॥ इति विवाहकर्मपद्धतिः समाप्ता ॥

अथ चतुर्थीकर्म ।

ततश्चतुर्थ्यामपररात्रे चतुर्थीकर्म । तच्च गृहाभ्यंतर एव कार्यम् । ततः उद्वर्तनादि कृत्वा युगकाष्ठमुपविश्य स्नात्वा शुद्धवस्त्रं परिधाय गृहं प्रविश्य वधूवरौ प्राङ्मुखौ भवतः । ॐ गणपत्यादिदेवतापूजनं ततः कुशकांडिकारंभः तत्र क्रमः जामातृहस्तपरिमितां वेदिं कुशैः परिसमुह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्फ्येन स्रुवेण वा प्रागग्रप्रादेशमात्रत्रिरुत्तरोत्तरक्रमेणोल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य

ग्रहण करे तत्पश्चात् तीन रात तक वर व खारी चीज लवण इत्यादिको विशेष नहीं खांय, पृथ्वी पर शयन करें, परस्पर मैथुन (संभोग) न करें और वर वधू दोनों जनेही पूर्वको मुख करके अवस्थित रहें ।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीयसुखानन्दमिश्रात्मज-पण्डित-कन्हैयालालमिश्रविरचितभाषाटीकासहिता विवाहकर्मपद्धतिः समाप्ता ।

अब चतुर्थी (चौथी) कर्मका विषय लिखा जाता है । विवाहकी चौथी रातके पिछले प्रहरमें घरके भीतर ही चतुर्थीकर्म करना चाहिये । उस दिन रातके पिछले समयमें उठकर दो पटले बिछावे और उन पर बैठकर वर वधू उबटनके सहित स्नान करें फिर वस्त्र धारणपूर्वक घरमें प्रविष्ट हो पूर्वकी ओरको मुख करके बैठे । तदुपरान्त गणेशादि देवताओंकी पूजा करके कुशकण्डिकाका आरंभ कराना चाहिये । उसका क्रम । यथा—वरके एक हाथ प्रमाण वेदी बनाकर उसको तीन कुशाओंसे शुद्ध कर उन कुशाओंको ईशानकोनमें फेंक देवे । फिर गोबरसे वेदीको लीपकर स्फ्य नामक यज्ञपात्र वा स्रुवेके द्वारा पूर्वको अग्रभागवाली प्रादेश मात्र दक्षिणसे उत्तर वृद्धि अर्थात् उत्तर उत्तरको तीन रेखा खैंचे । पश्चात् रेखा खैंचनेके क्रमानुसार दाहिने हाथ-

जलेनाभ्युक्ष्य तत्र तूष्णीं कांस्यपात्रेणाग्निमानीय स्वाभिमुखं निदध्यात् । ततः पुष्पचंदनतांबूलवस्त्राण्यादाय ॐ अस्यां रात्रौ कर्तव्यचतुर्थीहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुं होतृकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंदनादिभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन च त्वामहं वृणे इति ब्राह्मणं वृणुयात् ॥ वृतोऽस्मि इति प्रतिवचनम् । यथाविहितं कर्म्म कुर्विति वरेणोक्ते ॐ करवाणीति ब्राह्मणो वदेत् । ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य ब्राह्मणमग्निप्रदक्षिणक्रमेणानीय ॐ अत्र त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय ॐ भवानीति ब्राह्मणेनोक्ते कल्पितासने उदङ्मुखं ब्राह्मणमुपवेशयेत् । ततः पृथूदकपात्रमग्नेरुत्तरतः प्रतिष्ठाप्य प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य

की अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे मिट्टी उठाकर ईशानकोनमें फेंक देवे । फिर उन रेखाओंको जलसे सेचनपूर्वक कांसीके पात्रमें अग्निको लाकर चुपचाप अपने सामने वेदीमें स्थापन करे । अनन्तर पुष्प चन्दन ताम्बूल वस्त्र ग्रहणपूर्वक आगे लिखे ' ॐ अस्यां रात्रौ कर्तव्यचतुर्थीहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुं होतृकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनादिभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन च त्वामहं वृणे ' इस वाक्यसे ब्रह्माका वरण करना चाहिये तब ब्रह्मा ' ॐ वृतोऽस्मि ' ऐसा कहे । अनन्तर ' यथाविहितं कर्म कुरु ' ऐसा वरके कहने पर ब्राह्मण ' ॐ करवाणि ' कहे । फिर अग्निके दक्षिणकी ओर शुद्ध आसन प्रदान पूर्वक उसके ऊपर पूर्वको अग्रभाग करके कुशाओंको बिछावे और ब्रह्माको अग्निकी प्रदक्षिणाके क्रमसे निकट बुलाय ' अत्र त्वं मे ब्रह्मा भव ' ऐसा कहे, तब ' ॐ भवानि ' ऐसा ब्रह्माके कहनेपर उस बिछाये हुए आसन पर उत्तरको मुख करके ब्रह्माको बैठाल देवे । तत्पश्चात् एक बडे पात्रमें जल भरकर अग्निके उत्तरकी ओर रख देवे । फिर प्रणीतापात्रको आगे रखकर उसको जलसे परिपूर्ण कर

ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्रेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्। तः परिस्तरणं बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय आग्नेयादीशानांतं ब्रह्मणोऽग्नि- पर्यंतं नैर्ऋत्याद्वायव्यांतं अग्नितः प्रणीतापर्यंतं ततोग्रेरुत्तरतः पश्चिम- दिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनंतगर्भकुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली संमार्जनार्थं कुशत्रयं उपयमनार्थं वेणीरूप- कुशत्रयं समिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं षट्पंचाशदुत्तरवरमुष्टिशतद्वयावच्छि- न्नतंडुलपूर्णपात्रं एतानि पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासा- दनीयानि। ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्वा प्रादेशमितपवित्रकरणं ततः सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय अनामिकांगु- ष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे धृत्वा त्रिरुत्पवनं ततः प्रोक्षणीपात्रस्य सव्यहस्त-

---

तथा कुशाओंसे ढक ब्रह्माका मुख देख अग्निके उत्तरकी ओर कुशाओं पर रख देवे। इसके पीछे परिस्तरण करना चाहिये। अर्थात् एक मुट्ठी कुश लेकर उसके चार भाग करे। पहला भाग अग्निकोनसे ईशानकोनतक, दूसरा भाग ब्रह्माके आसनसे अग्नितक, तीसरा भाग नैर्ऋतकोनसे वायुकोन तक और चौथा भाग अग्नि (वेदी) से प्रणीतापात्र तक बिछा देना चाहिये। फिर- अग्निसे उत्तरकी तरफ पश्चिम दिशामें पवित्र छेदनके लिये तीन कुशा रक्खे तथा पवित्र बनानेके लिये अग्रभागसहित और जिसके भीतर अन्य कुशपत्र न हो ऐसे हों, ऐसे दो कुशपत्र रक्खे। फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, तीन संमार्जनकुशा, वेणीरूप तीन उपयमन कुशा, तीन समिधा, स्रुवा, घृत दो सौ छप्पन मुट्ठी चावलोंसे भरा हुआ पूर्णपात्र इन सब चीजोंको पवित्र छेदनकी कुशासे आगे पूर्वपूर्वकी ओर रखता जावे। फिर पवित्र छेदनकी कुशाओंसे पवित्रोंको छेदन कर प्रादेश प्रमाण (बलिश्त भरकी) पवित्र बनावे। तत्पश्चात् पवित्रोंके सहित प्रणीताका जल हाथमें लेकर तीन बार प्रोक्षणीपात्रमें डाले फिर अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंको ग्रहण कर प्रोक्षणीके जलको तीन बार उछाले। अनन्तर प्रोक्षणीपात्रको बायें हाथमें

करणं पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिंगनं प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणं ततः प्रोक्षणीजलेन यथासादितवस्तुसेचनम् । ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निधाय आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः ततोऽधिश्रयणं ततो ज्वलत्तृणादिना हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिणक्रमेण पर्यग्निकरणं ततः स्रुवं प्रतप्य संमार्जनकुशानामग्रैरंतरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवसंमार्जनं प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य स्रुवं दक्षिणतो निदध्यात् ततः आज्यस्याग्नेरवतारणम् तत आज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनं अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं पुनःपूर्ववत् प्रोक्षण्युत्पवनं उपयमनकुशान् वामहस्तेनादाय उत्तिष्ठन् प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः क्षिपेत् ततः उपविश्य प्रोक्षणीजलेनाग्निं प्रदक्षिणं पर्युक्ष्य पवित्रं प्रोक्षणीपात्रे धृत्वा ब्रह्म-

---

रख दाहिने हाथसे पवित्रोंको ग्रहण कर प्रोक्षणीका जल तीन वार ऊपरको सेचन करे। फिर प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीको सेचन करना चाहिये । पश्चात् प्रोक्षणीको जलसे पूर्वस्थापन करी हुई वस्तुओंको सेचन करे। पीछे प्रोक्षणीपात्रको अग्नि और प्रणीताके बीचमें रख देना चाहिये। फिर आज्यस्थालीमें घृत डालकर उसको वेदीकी अग्निपर रख देवे और पश्चात् एक कुश बालकर उसे घृतके चारों ओर घुमाता हुआ अग्निमें डाल देवे । इसके उपरान्त स्रुवेको अग्निमें तपावे और संमार्जन कुशाओंके अग्रभागसे भीतर और मूलभागसे बाहर शुद्ध करे । फिर उसके प्रणीताके जलसे सेचनपूर्वक दूसरी वार तपाकर दक्षिणकी ओरमें रख देवे। फिर घृतको अग्नि परसे उतार लेवे और प्रोक्षणिपात्रकी नाईं पवित्रोंसे उस घृतको उछालकर देखे यदि उसमें मक्खी इत्यादि कोई अपवित्र वस्तु पडी हो तो उसको निकालकर फेंक देवे फिर पहलेकी तरह प्रोक्षणीके जलको उछाले पश्चात् उपयमन कुशाओंको बाँये हाथमें ग्रहणपूर्वक खडा होकर पूर्व स्थापित तीन समिधाओंको घृतमें भिजोवे और मनमें प्रजापतिका ध्यान करता हुआ स्वाहा शब्दके साथ चुपचाप अग्निमें होम कर देवे। फिर आसनपर बैठकर पवित्रोंसहित प्रोक्षणीका जल हाथमें ले अग्निके

न्वारब्धः पतितदक्षिणजानुर्जुहुयात्। तत्राघारादारभ्याहुतिचतुष्टये तत्तदाहुत्यनंतरं स्रुवावस्थिताज्यं प्रोक्षण्यां क्षिपेत्। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिंद्राय०। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। तत आज्याहुतिपंचतये स्थालीपाकाहुतौ च प्रत्याहुत्यनंतरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ततो ब्रह्मणान्वारब्धं विना ॐ अग्नये प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै पतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदमग्नये० ॐ वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं वायवे०। ॐ सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि

चारों तरफ सेचन करे पीछे उन पवित्रोंको प्रणीतामें रख देवे तदुपरान्त जानुको नवाय ब्रह्मासे मिलकर होम करना चाहिये। पहली चार आहुतियोंके अनन्तर स्रुवेमें शेष रहे घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डालता जाय ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय०। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। फिर घृतकी पाँच आहुति आगे लिखे (ॐ) मन्त्रोंसे देवे और इन आहुतियोंके अनन्तर स्रुवेमें शेष रहा हुआ घृत प्रोक्षणीपात्रमें डालता जावे। पाँच आहुतियोंके पीछे जो स्थालीपाककी आहुतियां दी जायगी उनमें भी शेष रहे घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डालना चाहिये। यह हवन ब्रह्मासे विनाही मिले किया जाता है। मन्त्र यथा,–'ॐ अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै पतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदमग्नये न मम। ॐ वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं वायवे न मम। ॐ सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपा-

ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यै स्वाहा इदं सूर्याय न० । ॐ चंद्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै गृहघ्नी .. . . नाशय स्वाहा इदं चंद्राय० । ॐ गंधर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधावामि यास्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं गंधर्वाय० । चरुमभिघार्य ततः स्थालीपाकेन जुहुयात् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । अग्न्याहुतिनवके हुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । अयं च होमो ब्रह्मणान्वारब्धकर्तृकः ततः आज्यस्थालीपाकाभ्यां स्विष्टकृद्धोमः । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० । ततः आज्येन ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्म-

---

धावामि यास्यैपशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॐ चन्द्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं चन्द्राय न मम । ॐ गन्धर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं गन्धर्वाय न मम । फिर चरु (हलुए) में घृत डालकर उस स्थालीपाकसे होम करना चाहिये । यह होम ब्रह्मासे मिलकर किया जाता है । ' ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । फिर घृत और हलुएको मिलाकर स्विष्टकृत होम करना चाहिये । ' ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम । तत्पश्चात् घृतकी आहुति देवे और स्रुवेके शेष रहे घृतको प्रोक्षणीपात्रमें गिरावे । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम । एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा इदमग्नी-

स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां नमम । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुण॑ रराणो व्वीहि मृडीक॑ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज॑ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः । तेभिर्नो अद्य सवितोत्त विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम॑ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । एताः प्रायश्चित्तसंज्ञकाः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । इदं प्राजापत्यम् । ततः संस्रवप्राशनम् । ततः आचम्य ॐ अस्यां रात्रौ कृतैतच्चतुर्थीहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे

वरुणाभ्यां न मम । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुण॑ रराणो व्वीहि मृडीक॑ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्व मया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज॑ स्वाहा इदमग्नये न मम । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम॑ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय न मम । एताः प्रायश्चित्तसंज्ञकाः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम । इति मनसा । इदं प्राजापत्यम् । इसके अनन्तर प्रोक्षणीपात्रके जलका प्राशन करने पर आचमन करे । फिर आगे लिखे " ॐ अस्यां रात्रौ कृतैतच्चतुर्थीहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदै-

बाहुमूले तन्नो अस्तु त्र्यायुषं इति हृदये एवं वध्वा अपि त्र्यायुषं कुर्यात् तत्र तन्नो इत्यस्य स्थाने तत्ते इति विशेषः । तत आचार्याय दक्षिणां दद्यात् होत्रे च दक्षिणां दद्यात् भूयसीं दद्यात् ॥ इति चतुर्थीकर्म समाप्तम् ॥ इति दशकर्मपद्धतिः समाप्ता ॥

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् कहकर दक्षिण बाहुमूलमें और तन्नो अस्तु त्र्यायुषं इस मन्त्रको उच्चारण करके वह भस्म हृदयमें लगानी चाहिये । फिर इसी प्रकार वधूकेभी त्र्यायुष करे किन्तु वधूके त्र्यायुष करते समय 'तन्नो अस्तु' के स्थानमें 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करे । इसके उपरान्त आचार्यको दक्षिणा देवे। होताको दक्षिणा देवे और भूयसी दक्षिणा (भूर दक्षिणा) देनी चाहिये ।

दोहा—श्रीव्रजचन्द मुकुन्दको, ध्यान हृदय महँ धार। वरणी पद्धति कर्मकी, निज मतिके अनुसार ॥ भूल चूक जो दाससे, रही होय या मांहि । क्षमा करैं लखि विज्ञजन, रोष करैं मन नाँहि ॥ मैं अजान जानत नहीं, गद्यपद्यकी सार । सेवक अपनो जानिके, लीजिय आप सुधार ॥ वसत रामगंगा निकट, नगर मुरादाबाद । भजन करत हरिको तहा, बुध ज्वालापरसाद ॥ तिनको मैं लघु भ्रात हूँ, नाम कन्हैयालाल । प्रति पदको टीका लिख्यौ, भाषा मंजु रसाल ॥ जगत् विदित महिमा अमित, अवनि अखण्ड प्रताप । खेमराज छाप्यो मुदित, ग्रंथ बम्बई छाप ॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनगरनिवासि-भुवनविख्यातस्वर्गीयमिश्र-सुखानंदसुरिसूनुपण्डित-ज्वालाप्रसादमिश्रकनिष्ठसोदरपण्डित कन्हैया-लालमिश्रविरचितभाषानुवादसहिता दशकर्मपद्धतिः समाप्ता।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।
